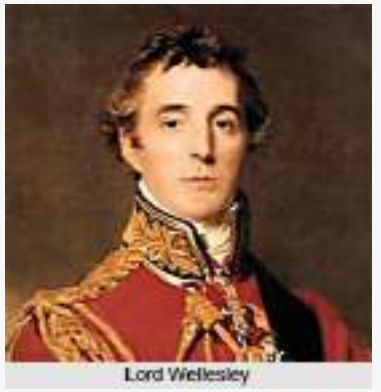
Quick Revision

1) 1565 : तालीकोटा का युद्ध
2) 1761 : हैदर अली मैसूर का शासक बना
3) हैदर अली ने डिंडीगुल में शस्त्रागार खोला
4) 1767-69 : प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध
5) 1769 : मद्रास की संधि के द्वारा प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध का अंत
6) 1780-84 : द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध
7) 1781 : हैदर अली वायर कूट के मध्य पोर्टो नोवो का युद्ध
8) 1784 : मंगलौर की संधि
9) 1790-92 : तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध
10) 1792 : टीपू सुल्तान की व श्रीरंगपट्टनम की संधि
11) 1799 : चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध व लॉडबैलेंसर लिखो मारपीट की उपाधि मिली









NOTE : विलियम बेंटिक ने 1831 ई. में मैसूर तथा 1834 ई. में कुर्ग एवं कछार की रियासतों को अपने प्रदेश में मिला लिया क्योंकि वहां कथित रूप से बहुत अधिक अव्यवस्था थी

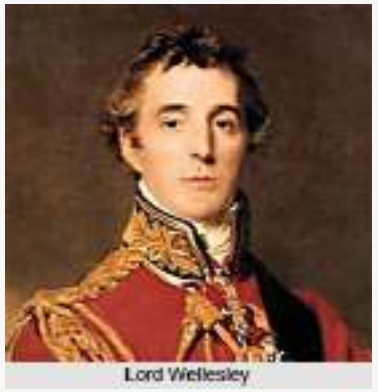
Quick Revision

1) 1565 : Battle of Talikota
2) 1761 : Hyder Ali becomes the ruler of Mysore.
3) Hyder Ali opened armory in Dindigul
4) 1767-69 : First Anglo Mysore War
5) 1769 : End of First Anglo Mysore War by Treaty of Madras
6) 1780-84 : Second Anglo Mysore War
7) 1781 : Battle of Porto Novo between Hyder Ali Wire Code
8) 1784 : Treaty of Mangalore
9) 1790–92 : Third Anglo Mysore War
10) 1792 : Treaty of Tipu Sultan and Srirangapatnam
11) 1799 : Fourth Anglo-Mysore war and Lodbalancer write got the title of assault









Lord Wellesley

NOTE : William Bentick merged the princely states of Mysore in 1831 AD and the Coorg and Cachar in 1834 AD, as there was reportedly a lot of disorder.

4) मराठा साम्राज्य तथा आंग्ल - मराठा संघर्ष

मराठों का उत्कर्ष मध्यकालीन भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटना है जिन्होंने अरब सागर के तट से सतपुड़ा पर्वत तक मराठवाड़ा राज्य स्थापित किया मराठा इतिहास को दो चरणों में बांटा जा सकता है प्रथम चरण 17वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध- शिवाजी, शम्भाजी, राजाराम व ताराबाई का काल तथा दूसरा चरण पेशवाओं के अधीन शासन का था

1) मराठा शक्ति के उदय के कारण

2) शिवाजी महाराज का सामान्य परिचय

3) शिवाजी के प्रमुख विजय अभियान

4) शिवाजी का प्रशासन

5) शिवाजी का मूल्यांकन



6) शिवाजी के उत्तराधिकारी

7) प्रमुख पेशवा

8) आंग्ल मराठा संघर्ष

9) मराठा असफलता के कारण

4) Maratha Empire & Anglo-Maratha Conflict

The rise of the Marathas is an important event in medieval Indian history, which established the state of Marathwada from the coast of the Arabian Sea to the Satpura Mountains. Maratha's history can be divided into two phases. The first phase was the latter half of the 17th century - the period of Shivaji, Shambaji, Rajaram, and Tarabai, and the second phase was under the Peshwas.

1) Reasons for the rise of Maratha power

2) General Introduction of Shivaji

3) Major conquests of Shivaji

4) Administration of Shivaji



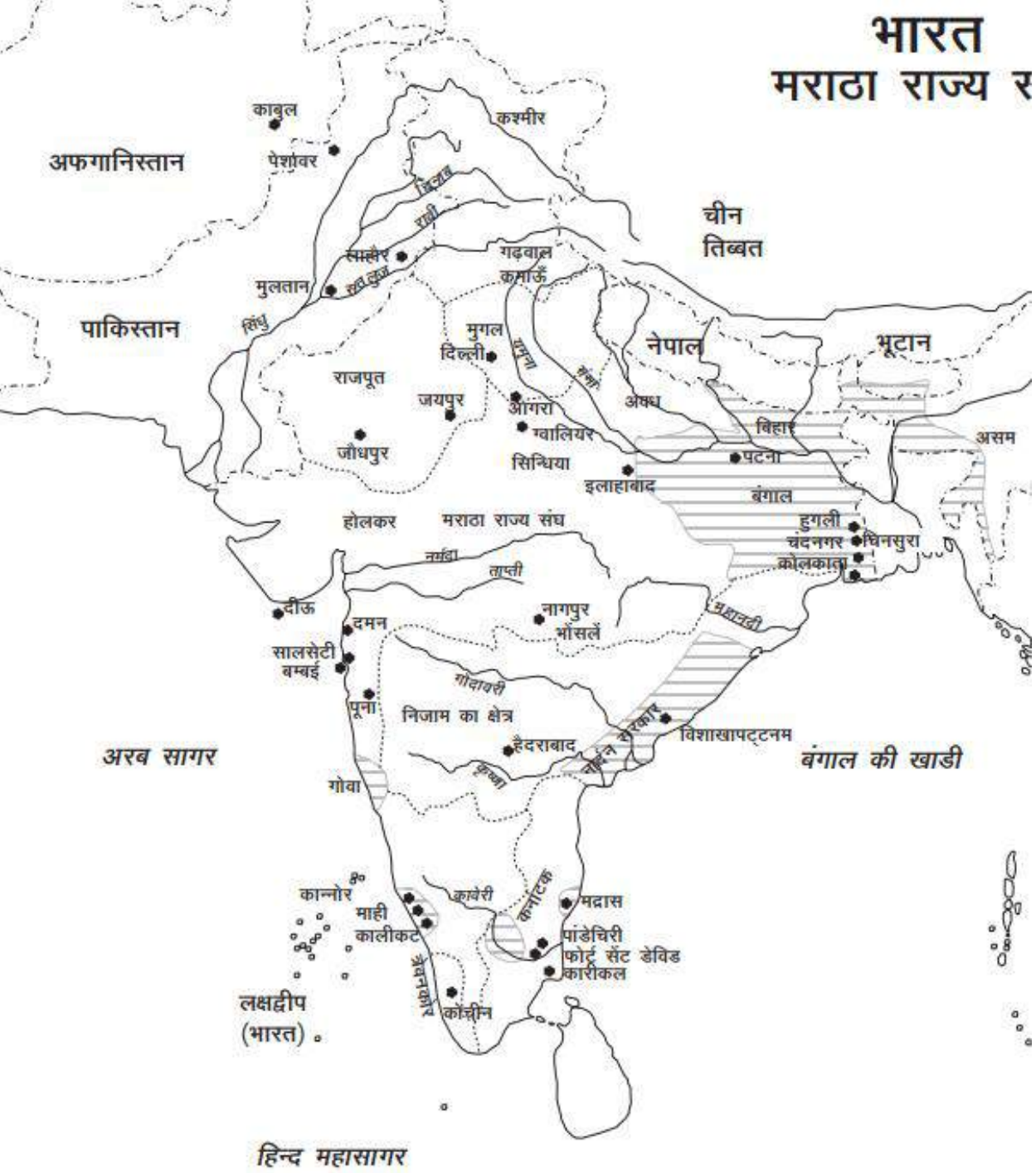
5) Evaluation of Shivaji

6) Shivaji's successor

7) Chief Peshwa

8) Anglo Maratha Struggle

9) Reasons for Maratha failure



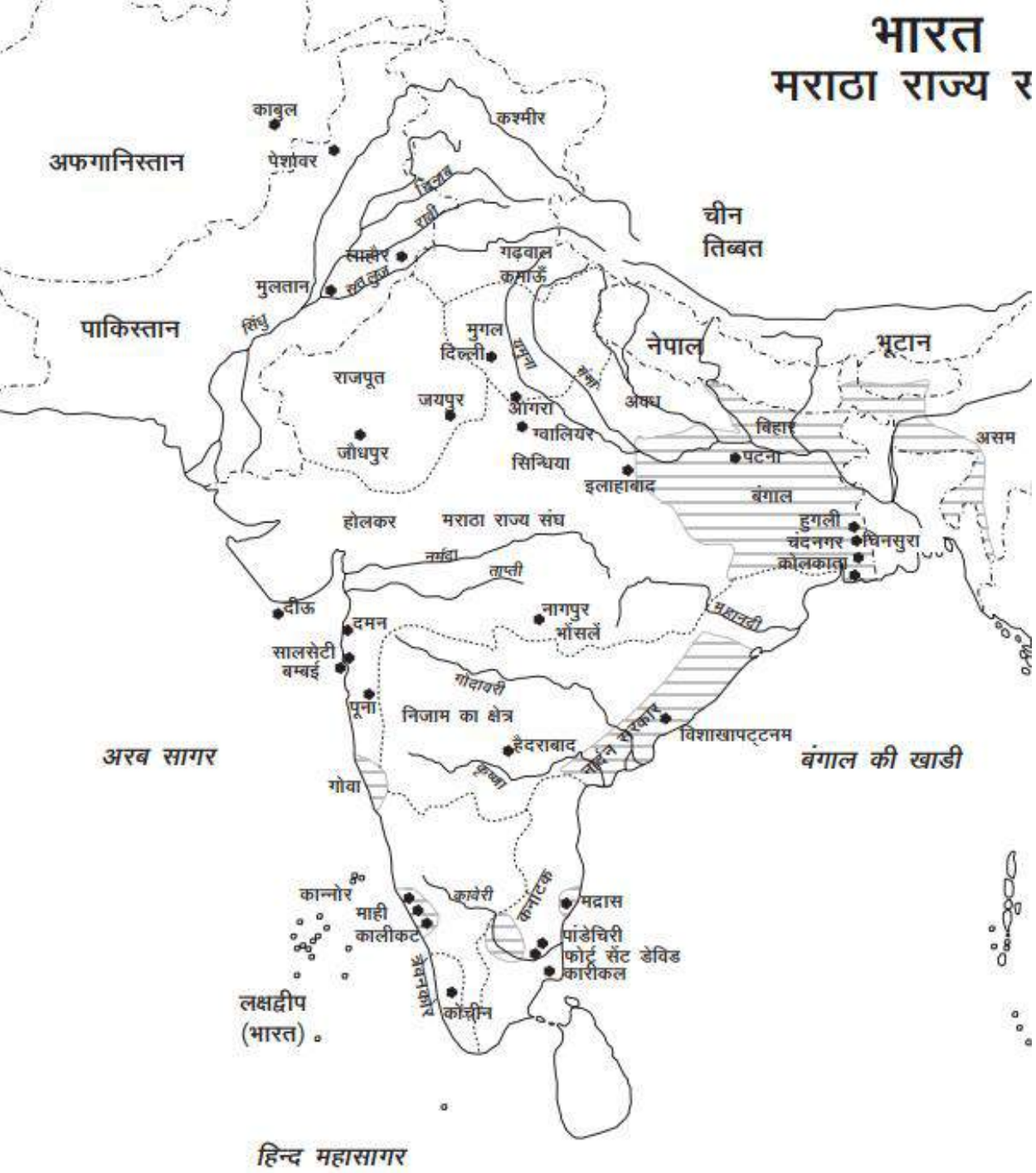
1) प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775-82)
2) द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803-05)
3) तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध (1817-19)

} 3. मराठा (1775-1819)



1) First Anglo-Maratha War (1775–82)
2) Second Anglo-Maratha War (1803-05)
3) Third Anglo-Maratha War (1817–19)

3. Maratha (1775-1819)





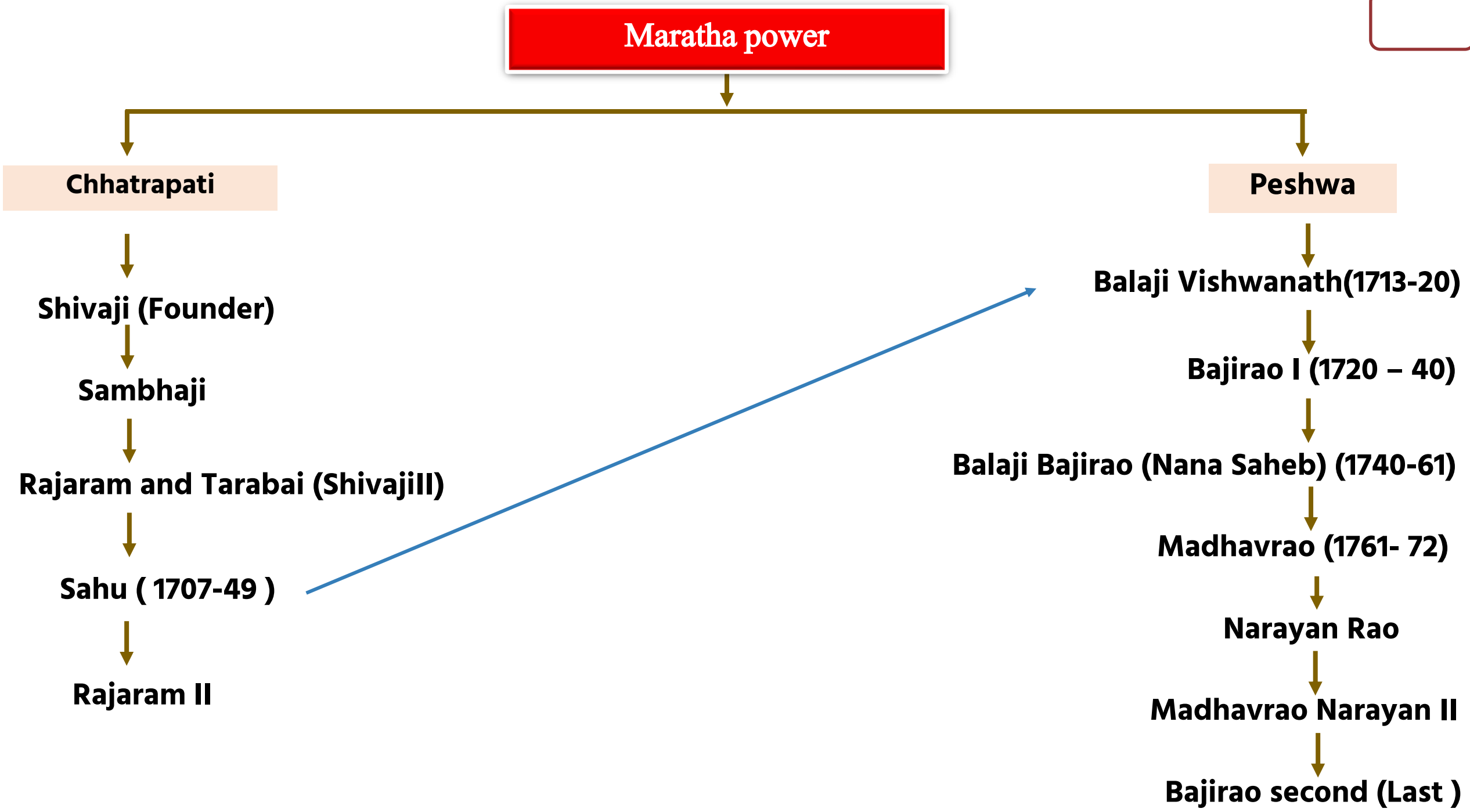
मराठा शक्ति | Maratha power

छत्रपति | Chhatrapati

- शिवाजी (संस्थापक) | Shivaji (Founder)
- संभाजी | Sambhaji
- राजाराम और ताराबाई (शिवाजी द्वितीय) | Rajaram and Tarabai (Shivaji II)
- शाहू | Sahu (1707-49)
- राजाराम द्वितीय | Rajaram II

पेशवा | Peshwa

- बालाजी विश्वनाथ | Balaji Vishwanath (1713-20)
- बाजीराव I | Bajirao I (1720 – 40)
- बालाजी बाजीराव (नाना साहब)| Balaji Bajirao (Nana Saheb) 1740-61
- माधवराव | Madhavrao (1761- 72)
- नारायण राव | Narayan Rao
- माधवराव नारायण द्वितीय | Madhavrao Narayan II
- बाजीराव द्वितीय (अंतिम) | Bajirao second (Last)


Maratha power
Chhatrapati
Shivaji (Founder)
Sambhaji
Rajaram and Tarabai (ShivajiII)
Sahu (1707-49)
Rajaram II
Peshwa
Balaji Vishwanath(1713-20)
Bajirao I (1720 – 40)
Balaji Bajirao (Nana Saheb) (1740-61)
Madhavrao (1761- 72)
Narayan Rao
Madhavrao Narayan II
Bajirao second (Last)

1) मराठा शक्ति के उदय के कारण

मराठा मध्यकालीन भारतीय इतिहास की सर्व प्रमुख शक्ति थे, जिनके उद्भव के निम्नलिखित कारण थे :-

1. मराठा क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति

1) मराठा क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति और वहां की जलवायु ने मराठों को परिश्रमी बनाया
2) महादेव गोविंद रानाडे ने अपनी कृति *राइज ऑफ दि मराठा पॉवर* में इस भौगोलिक स्थिति को दर्शाया है
3) महान पर्वत श्रृंखलाएं

⬇

- लोगों को कष्ट सहिष्णु, फुर्तीला, प्रतिरोधी, उग्र तथा उत्तम सैनिक बनाया
- गोरिल्ला युद्ध तकनीक
- सीमित संसाधनों में जीवन यापन





2. दक्षिण में धार्मिक जागरण

1) भक्ति आंदोलन के संतो, (तुकाराम एकनाथ एवं दादाजी कोंडदेव) ने मराठों के उद्भव में महत्वपूर्ण योगदान
2) मराठा एकता तथा देश, धर्म एवं संस्कृति के प्रति प्रेम उत्पन्न किया
3) प्राचीन धर्म के गौरव को पुनर्स्थापित एवं संरक्षित करने की बात की

1) Reasons for the rise of Maratha power

Marathas were the most important forces of medieval Indian history, whose emergence was due to the following reasons:

1. Geographical Location of Maratha Region

1) The geographical location and climate of the Maratha region made the Marathas industrious.
2) Mahadev Govind Ranade has depicted this geographical location in his work Rise of the Maratha Power.
3) Great mountain ranges



- Made people pain tolerant, agile, resistant, fierce and good soldiers
- gorilla warfare techniques
- living with limited resources

2. Religious Awakening in South

1) The saints of the Bhakti movement (Tukaram Eknath and Dadaji Konddev) contributed significantly to the emergence of the Marathas.
2) Created Maratha unity and love for country, religion and culture
3) Talked about restoring and preserving the glory of ancient religion



3. दक्षिण की राजनीतिक परिस्थिति

1) अहमदनगर, बीजापुर जैसे राज्यों में राजनीतिक शून्यता
2) औरंगजेब की दक्षिण नीति की असफलता
3) शासन के विभिन्न विभागों में मराठा राजनैतिज्ञों तथा सैनिकों की उपस्थिति

4. शिवाजी का व्यक्तित्व

1) शिवाजी एक वीर योद्धा एवं कुशल सेनानायक थे
2) उच्च कोटि का शासन प्रबंधन
3) सैन्य कुशलता तथा गोरिल्ला युद्ध तकनीक
4) कुशल कूटनीति

5. अन्य कारण

1) औरंगजेब की दक्षिण नीति
2) औरंगजेब की धार्मिक असहिष्णुता
3) मराठी भाषा की सरल प्रकृति



3. Political Situation in the South

1) Political vacuum in states like Ahmednagar, Bijapur
2) Failure of Aurangzeb's South Policy
3) Presence of Maratha politicians and soldiers in various departments of government

4. Personality of Shivaji

1) Shivaji was a brave warrior and a skilled general.
2) High-quality management
3) Military skills and guerilla warfare techniques
4) Skillful diplomacy

5. Other reasons

1) Aurangzeb's South Policy
2) Aurangzeb's religious intolerance
3) Simple nature of Marathi language



2) शिवाजी महाराज का सामान्य परिचय (1627-1680)

1) जन्म :- अप्रैल 1627 ई को शिवनेर के किले में

2) माता :- जीजाबाई

3) पिता :- शाहजी भोंसले(बीजापुर के शासक के यहां कार्यरत थे)

4) गुरु :- समर्थ गुरु रामदास

5) संरक्षक :- दादा जी कोंडदेव

6) विवाह :- 1640 ई में साईबाई से

7) पित्र पक्ष से वह राजपूताना के सिसोदिया वंश से तथा मातृ पक्ष से देवगिरि के यादव के वंश से संबंधित थे

8) उन्होंने एक स्वतंत्र हिंदू राज्य की स्थापना करने को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया



2) General Introduction of Shivaji Maharaj (1627-1680)

1) Born: - April 1627 in the fort of Shivner

2) Mother :- Jijabai

3) Father :- Shahji Bhonsle (Worked with the ruler of Bijapur)

4) Guru :- Samarth Guru Ramdas

5) Patron :- Dada Ji Konddev

6) Marriage :- In 1640 AD with Saibai

7) From the paternal side he was related to the Sisodia dynasty of Rajputana and from the maternal side he was related to the Yadava clan of Devgiri.

8) He made the goal of his life to establish an independent Hindu state.



3) शिवाजी महाराज के प्रमुख विजय अभियान

1) प्रारंभिक विजय (1643-1656)

2) कोंकण विजय (1657)

3) अफजल खा की हत्या (1659)

4) शाइस्ता खां से संघर्ष (1663)

5) सूरत की प्रथम लूट(1664)

6) जयसिंह से संघर्ष और पुरंदर की संधि (11जून 1665)

7) सूरत की द्वितीय लूट (1670)

8) शिवाजी का राज्याभिषेक (6 जून 1674)

9) राज्याभिषेक के उपरांत (1678)



3) Major conquests of Shivaji Maharaj

9) After the coronation (1678)

8) Coronation of Shivaji (6 June 1674)

7) Second Plunder of Surat (1670)

6) Struggle with Jai Singh and Treaty of Purandar (11 June 1665)



1) Early Conquest (1643-1656)

2) Konkan conquest (1657)

3) Murder of Afzal Khan (1659)

4) Conflict with Shaista Khan (1663)

5) First plunder of Surat(1664)

3.1) प्रारंभिक अभियान (1643-1656)

1) बीजापुर के आदिलशाही राज्य के विरुद्ध
2) 1643 :- सिंहगढ़ का किला
3) 1646 :- तोरण का किला
4) 1654 :- पुरन्दर का किला
5) शिवाजी की इन साहसिक विजयों से बीजापुर का सुल्तान क्रोधित हो गया तथा उसने शिवाजी के विरुद्ध अफजल खा के नेतृत्व में सेना भेजी

3.2) कोंकण विजय (1657)

1) 1657 में उत्तराधिकार का युद्ध छिड़ जाने पर औरंगजेब दक्षिण से उत्तर भारत आ गया
2) 1657 में शिवाजी ने कोंकण के कल्याण, भिवंडी एवं माहुल के किलो को जीत लिया
3) कोंकण विजय से शिवाजी पश्चिमी समुद्र तट पर पहुंच गए और नौसेना निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया
4) शिवाजी कोंकण प्रदेश पर तो ज्यादा समय तक अधिकार ना रख सके परंतु जंजीरा के सीदियों को अपने आधिपत्य में लेने में सफल रहे

3.3) अफजल खां की हत्या (1659)

1) अफजल खाँ ने कूटनीतिपूर्वक शिवाजी को मारने की योजना बनाई तथा शिवाजी के पास कृष्णाजी भास्कर के माध्यम से संधि का प्रस्ताव भेजा
2) शिवाजी ने अफजल खाँ की कूटनीति को समझते हुए संधि के अनुरूप प्रतापगढ़ के जंगलों में उससे मिलने गए
3) जहां अफजल खाँ सशस्त्र आया था तथा गले मिलने के बहाने शिवाजी की हत्या करने का प्रयास किया, किन्तु शिवाजी ने अपने बगनखे के वार से अफजल खाँ को मार डाला

3.1) Early Campaign (1643-1656)

1) Against the Adilshahi kingdom of Bijapur
2) 1643 :- Sinhagad Fort
3) 1646 :- Fort of Torna
4) 1654 :- Fort of Purandar
5) The sultan of Bijapur got angry by these bold victories of Shivaji and he sent an army under the leadership of Afzal Khan against Shivaji.

3.2 Konkan Conquest (1657)

1) Aurangzeb moved from South to North India after the War of Succession broke out in 1657.
2) In 1657, Shivaji conquered the forts of Kalyan, Bhiwandi and Mohul of Konkan.
3) By the Konkan conquest, Shivaji reached the western coast and concentrated on building a navy.
4) Shivaji could not control the Konkan region for a long time but was successful in taking the Siddis of Janjira under his control.

3.3 Murder of Afzal Khan (1659)

1) Afzal Khan planned to kill Shivaji diplomatically and sent a proposal of treaty to Shivaji through Krishnaji Bhaskar.
2) Understanding the diplomacy of Afzal Khan, Shivaji went to meet him in the forests of Pratapgarh according to the treaty.
3) Where Afzal Khan had come armed and tried to kill Shivaji on the pretext of hugging, but Shivaji killed Afzal Khan with the blows of his handgun

4) इस हमले में शिवाजी को भारी धन-संपत्ति तथा अस्त्र-शस्त्र प्राप्त हुए, जिससे उनकी प्रतिष्ठा तथा स्थिति और भी अधिक सुदृढ़ हो गई

3.4) शाइस्ता खां से संघर्ष (1663)

1) अफजल खां की हत्या से उत्साहित होकर शिवजी ने मुगलों पर जोरदार आक्रमण किए
2) औरंगजेब ने शिवाजी के विरुद्ध शाइस्ता खां को विशाल सेना के साथ भेजा
3) शिवाजी ने अपने सैनिकों को भेष बदलकर पूना भेजा तथा मौका देखकर मुगल सेना पर आक्रमण कर दिया
4) इस आक्रमण से शाइस्ता खां का अंगूठा कट गया तथा उसका पुत्र फतेह खां मारा गया

3.5) सूरत की प्रथम लूट(1664)

1) शिवाजी ने 8 जनवरी 1664 में पश्चिमी तट पर स्थित सूरत बंदरगाह पर लूटने की दृष्टि से धावा बोला
2) गवर्नर इनायत खान ने नगर से भागकर किले में शरण ली
3) इस लूट में शिवाजी को एक करोड़ से अधिक रुपया मिला
4) नगर के सेठ साहूकारों को लूट लिया गया किंतु अंग्रेजों एवं डचों की कोठियों को कोई हानि नहीं पहुंचाई गई



4) In this attack, Shivaji got huge wealth and weapons, which strengthened his prestige and position even more.

3.4) Conflict with Shaista Khan (1663)

1) Encouraged by the killing of Afzal Khan, Shiva launched a vigorous attack on the Mughals.
2) Aurangzeb sent Shaista Khan with a huge army against Shivaji.
3) Shivaji sent his soldiers in disguise to Poona and seeing the opportunity attacked the Mughal army.
4) Shaista Khan's thumb was cut off due to this attack and his son Fateh Khan was killed.

3.5) First Plunder of Surat(1664)

1) Shivaji attacked Surat port on the west coast on 8 January 1664 with a view to plunder
2) Governor Inayat Khan fled the city and took shelter in the fort.
3) Shivaji got more than one crore rupees in this loot.
4) The Seth moneylenders of the city were looted but no damage was done to the cells of the British and the Dutch.



3.6) जयसिंह से संघर्ष और पुरंदर की संधि (1665)

1) शाइस्ता खां की असफलता और सूरत की लूट से त्रस्त होकर औरंगजेब ने शिवाजी का दमन करने के लिए आमेर के मिर्जा राजा जयसिंह को भेजा
2) शिवाजी को जयसिंह के सम्मुख आत्मसमर्पण करना पड़ा। बातचीत के परिणामस्वरूप दोनों के बीच 22 जून 1665 ई को पुरन्दर की संधि हो गयी । संधि की शर्ते निम्न प्रकार थी-
   - शिवाजी ने 35 में से 23 किले मुगलों को दे दिए
   - शिवाजी के पुत्र शम्भाजी को मुगल दरबार में 5000 का मनसब दिया गया
   - शिवाजी ने बीजापुर के सुल्तान के विरुद्ध मुगल सम्राट को सहायता देने का वचन दिया
3) राजा जयसिंह की अनुरोध के अनुसार शिवाजी 12 मई 1666 को अपने पुत्र शंभाजी के साथ मुगल दरबार में उपस्थित हुए लेकिन वहां उनका आदर ना हुआ और उनको पंचहजारी मनसब की श्रेणी में खड़ा किया गया
4) शिवाजी और उनके पुत्र शम्भाजी को रामसिंह के निवास स्थान आगरा (जयपुर महल) में बंदी बना लिया गया
5) शिवाजी ने कूटनीति का सहारा लिया तथा फल की टोकरी में बैठकर भाग निकले



3.6) Conflict with Jai Singh and Treaty of Purandar (1665)

1) Suffering from the failure of Shaista Khan and the loot of Surat, Aurangzeb sent Mirza Raja Jai Singh of Amer to suppress Shivaji.
2) Shivaji had to surrender to Jai Singh. As a result of the negotiations, the Treaty of Purandar was signed between the two on 22 June 1665. The terms of the treaty were as follows-
   - Shivaji gave 23 out of 35 forts to the Mughals
   - Shivaji's son Shambhaji was given a mansab of 5000 in the Mughal court.
   - Shivaji promised to help the Mughal Emperor against the Sultan of Bijapur.
3) According to the request of Raja Jaisingh, Shivaji appeared in the Mughal court on 12 May 1666 with his son Shambhaji, but there he was not respected and he was raised in the rank of Panchhajari Mansab.
4) Shivaji and his son Shambhaji were taken prisoner at Agra (Jaipur Mahal), the residence of Ram Singh.
5) Shivaji resorted to diplomacy and escaped sitting in a basket of fruits.



3.7) सूरत की द्वितीय लूट (1670)

1) शिवाजी ने 1670 में सूरत को पुनः लूटा
2) इसमें शिवाजी को लगभग 66लाख रुपए की आय प्राप्त हुई तथा एक सोने की पालकी भी मिली , जो औरंगजेब को भेंट देने के लिए बनाई गई थी
3) कंचन मंचन दर्रा / डिंडोरी का युद्ध :- सूरत से लौटते हुए मार्ग में शिवाजी ने मुगल सेना को जो दाऊद खां और इखलास खां के नेतृत्व में थी, बुरी तरह पराजित किया
4) 1672 में सूरत पर शिवाजी ने तीसरी बार छापा मारा तथा उसे लूट कर अपार धन प्राप्त किया
5) बीजापुर और गोलकुंडा के राज्यों में उन्हें वार्षिक कर देना आरंभ कर दिया जिससे वे उनकी प्रजा को ना लूटे
6) इस प्रकार 4 वर्ष की अल्पावधि में (1670 से 1674 तक) शिवाजी ने अपनी खोई हुई शक्तियों को पुनः प्राप्त किया

3.8) शिवाजी का राज्याभिषेक(6जून 1674)

1) 6 जून 1674 में शिवाजी ने अपना काशी के प्रसिद्ध विद्वान श्री गंगाभट्ट द्वारा राज्य अभिषेक करवाया
2) छत्रपति की उपाधि ग्रहण की तथा पत्नी सोयराबाई को राजमहिषी घोषित किया गया
3) इस अवसर पर श्री शिवाजी छत्रपति उत्कीर्ण सोने और तांबे के सिक्के जारी किए गए और नया संवत जारी किया गया
4) शिवाजी ने रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाया
5) किंतु 17 जून, 1674 ई को शिवाजी की माता जीजाबाई का देहावसान हो गया, कारणस्वरूप शिवाजी का दूसरी बार राज्याभिषेक हुआ
6) यह 24 सितम्बर 1674 को तांत्रिक विधि से कांची के निश्चलपुरी गोस्वामी नामक सुप्रसिद्ध तांत्रिक द्वारा संपन्न कराया गया

3.7 Second Plunder of Surat (1670)

1) Shivaji plundered Surat again in 1670
2) In this Shivaji got an income of about 66 lakh rupees and also got a gold palanquin, which was made to give a gift to Aurangzeb.
3) Kanchan Manchan Pass / Battle of Dindori :- On his way back from Surat, Shivaji badly defeated the Mughal army led by Dawood Khan and Ikhlas Khan.
4) In 1672, Shivaji raided Surat for the third time and looted it and got immense wealth.
5) In the states of Bijapur and Golconda, they started paying annual taxes so that they would not loot their subjects.
6) Thus in a short span of 4 years (from 1670 to 1674) Shivaji regained his lost powers.

3.8) Coronation of Shivaji (6 June 1674)

1) On 6 June 1674, Shivaji got coronated by the famous scholar of Kashi, Shri Gangabhatta.
2) Took the title of Chhatrapati and wife Soyarabai was declared a Queen.
3) On this occasion Shri Shivaji Chhatrapati engraved gold and copper coins were issued and new Samvat was issued
4) Shivaji made Raigad his capital
5) But on June 17, 1674, Shivaji's mother Jijabai died, due to which Shivaji was coronated for the second time.
6) It was done on 24th September 1674 by a well-known tantrik named Nischalpuri Goswami of Kanchi by tantric method.

3.9) राज्याभिषेक के उपरांत

1) शिवाजी ने मुगल सेनापति बहादुर खां के शिविर पर आक्रमण किया जहां से उनको 9 करोड़ रुपए के अतिरिक्त 200 उच्च कोटि के घोड़े भी प्राप्त हुए
2) 1675 को कोल्हापुर पर आक्रमण करके बहुत सा धन प्राप्त
3) शिवाजी का अंतिम और उसके जीवन का सबसे बड़ा अभियान कर्नाटक पर आक्रमण (1677-78) था
   - इसमें बैलोर, तंजौर और जिंजी आदि प्रमुख नगर थे 1678 में शिवजी ने जिंजी के किले को जीता। यह उनकी दक्षिण भाग की राजधानी बनी
   - परन्तु वह पुर्तगालियों से गोवा तथा सीदियों से चौल और जंजीरा को न छींन सके
4) 2 अप्रैल 1680 को शिवाजी ज्वर से पीड़ित हो गए और अंत में 13 अप्रैल 1680 को उनका देहावसान हो गया





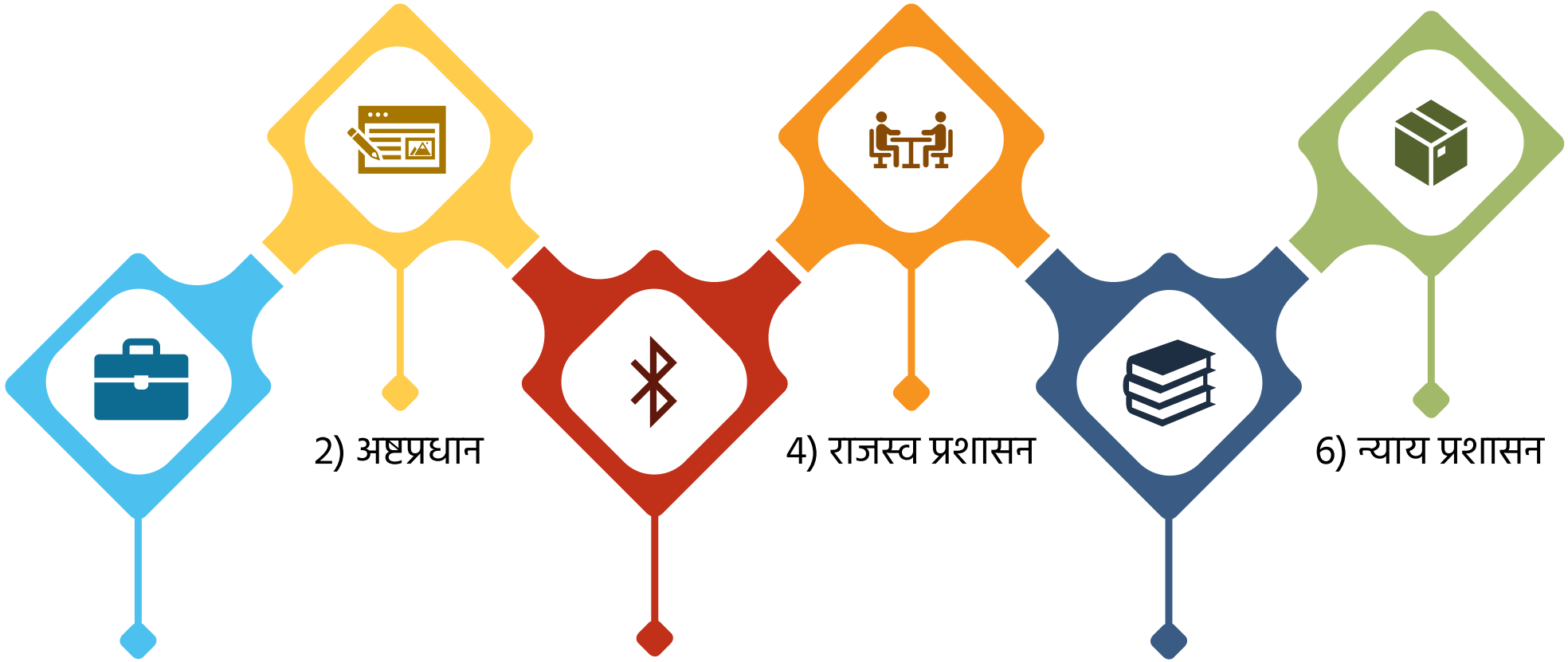
3.9) Post-Coronation

1) Shivaji attacked the camp of Mughal general Bahadur Khan, from where he also got 200 horses of high quality in addition to 9 crores.
2) Got a lot of money by attacking Kolhapur in 1675.
3) Shivaji's last and biggest campaign of his life was the invasion of Karnataka (1677-78).
   - It had major cities like Baylor, Tanjore and Jinji etc. In 1678, Shiva won the fort of Jinji. It became the capital of their southern part.
   - But he could not snatch Goa from the Portuguese and Chaul and Janjira from the Sidis.
4) Shivaji suffered from fever on 2 April 1680 and finally died on 13 April 1680.





4) शिवाजी का प्रशासन



1) सामान्य परिचय

2) अष्टप्रधान

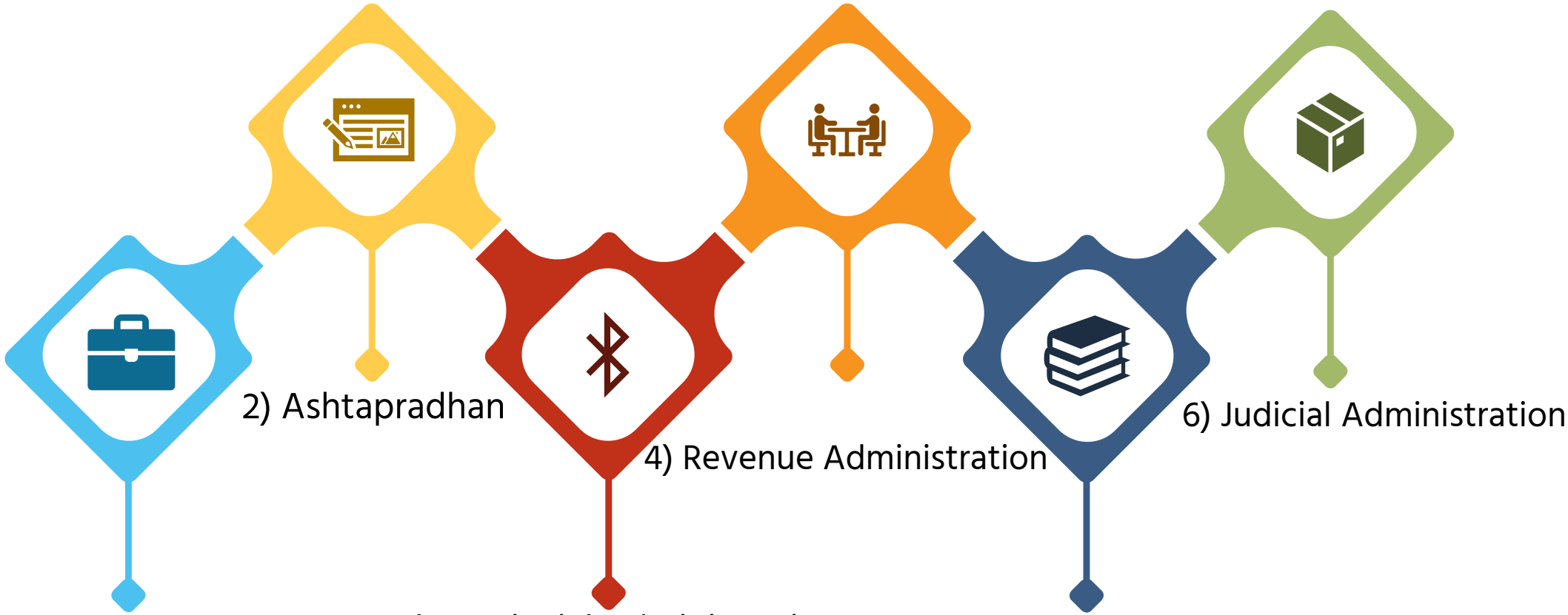
3) प्रांतीय प्रशासन

4) राजस्व प्रशासन

5) सैन्य प्रशासन

6) न्याय प्रशासन

4) Administration of Shivaji



4.1) सामान्य परिचय

शिवाजी की प्रशासनिक व्यवस्था दक्कन राज्यों विशेषकर मलिक अम्बर के सुधारों से प्रभावित थी जिसकी प्रमुख विशेषताएं निम्न हैं-

- ‡ शिवाजी अपने राज्य के सर्वोच्च अधिकारी थे उन्होंने छत्रपति की उपाधि धारण की
- ‡ छत्रपति की सहायता हेतु 8 मंत्रियों की परिषद थी, जिसे अष्टप्रधान कहते थे
- ‡ अष्टप्रधान की सलाह शिवाजी हेतु बाध्यकारी नहीं थी साथ ही यह पद आनुवंशिक नहीं था
- ‡ सेनापति के अतिरिक्त प्रायः सभी मंत्री ब्राह्मण होते थे
- ‡ प्रत्येक मंत्री के अधीन आठ अधिकारियों का कार्यालय होता था
- ‡ शिवाजी ने मराठा साम्राज्य को निम्नलिखित 6 इकाइयों में बांटा था :-



मराठा साम्राज्य (छत्रपति) → प्रान्त (सर ए सूबेदार) → महाल (सरहवलदार) → तर्फ (हवलदार) → मौज (कारकुन) → ग्राम (पाटिल)

4.1) General Introduction

The administrative system of Shivaji was influenced by the reforms of the Deccan states especially Malik Ambar, whose main features are as follows:-

- ‡ Shivaji was the highest official of his kingdom, he assumed the title of Chhatrapati.
- ‡ There was a council of 8 ministers to assist Chhatrapati, which was called Ashtapradhan.
- ‡ Ashtapradhan's advice was not binding on Shivaji and the post was not hereditary.
- ‡ Except for the commander, almost all the ministers were brahmins.
- ‡ Each minister had an office of eight officers.
- ‡ Shivaji divided the Maratha Empire into the following 6 units :-



Maratha Empire (Chhatrapati) → Province (Sir e Subedar) → Mahal (Sarahavaldar) → Tarf (Havaldar) → Mauj (karkun) → Village (Patil)

4.2) अष्टप्रधान

1) प्रशासन में शिवाजी की सहायता और परामर्श के 8 मंत्रियों की परिषद
2) प्रत्येक मंत्री अपने विभाग का प्रमुख
3) परिषद के सभी सदस्यों की नियुक्ति शिवाजी द्वारा
4) मंत्रियों के निर्णय मानना शिवाजी के लिये बाध्यकारी नहीं था।
5) शिवाजी ने किसी मंत्री के पद को अनुवांशिक नहीं बनाया।
6) अष्टप्रधान में सेनापति को छोड़कर सभी मंत्री ब्राह्मण होते-थे।
7) प्रत्येक मंत्री के अधीन आठ अधिकारियों का कार्यालय होता था

1) पेशवा (प्रधानमन्त्री)	2) सर-ए-नौबत (सेनापति
3) अमात्य (राजस्व मन्त्री)	4) वाकयानवीस - सूचना, गुप्तचर एवं सन्धि-विग्रह
5) चिटनिस- राजकीय पत्राचार	6) सुमन्त- विदेश मन्त्री
7) पण्डित राव- धार्मिक कार्यो की देखरेख	8) न्यायाधीश- न्याय विभाग का प्रधान।



4.2) Ashtapradhan

1) 8 Ministers of Council to aid and advise Shivaji in administration.
2) Each minister heads his department
3) All the members of council were appointed by Shivaji.
4) Decisions of the ministers were not binding on Shivaji to accept.
5) Shivaji did not make the post of any minister hereditary.
6) In Ashtapradhan, all the ministers except the commander were Brahmins.
7) Each minister had an office of eight officers.



1) पेशवा (प्रधानमंत्री) :-

- यह राजा का प्रधानमंत्री होता था।
- राज्य का प्रशासन एवं अर्थव्यवस्था की देख-रेखा
- राजा की अनुपस्थिति में उसके कार्यों की देखभाल भी करता था।
- सरकारी पत्रों तथा दस्तावेजों पर राजा के नीचे मुहर लगाता था।

2) अमात्य (पन्त व मजुमदार) :-

- यह वित्त एवं राजस्व मंत्री होता था।
- आय-व्यय के सभी लेखों की जाँच करना

3) वाकियानवीस (मंत्री) :-

- सूचना, गुप्तचर एवं सन्धि-विग्रह के विभागों का अध्यक्ष
- यह वर्तमान समय के गृहमंत्री की भाँति होता था।

4) सुमंत (दबीर) :-

- यह राज्य का विदेश मंत्री होता था।

5) सचिव/चिटनिस/शुरुनवीस :-

- राजकीय पत्राचार
- मुख्य कार्य - राजकीय पत्रों की भाषा, शैली की जाँच करना

6) सेनापति (सर-ए-नौबत) :-

- सैन्य प्रधान
- सेना की भरती, संगठन, अनुशासनं आदि का दायित्व

7) पण्डितराव (सद्र) :-

- धार्मिक कार्यो की देखरेख
- धार्मिक कार्यों के लिए दिये जाने वाले अनुदानों का दायित्व

8) न्यायाधीश :-

- न्याय विभाग का प्रधान।
- मुख्य कार्य - फौजदारी और दीवानी मुकदमों की सुनवाई तथा राज्य में न्याय और कानून की व्यवस्था का रखरखाव

1) Peshwa (Prime Minister) :-

- Prime minister of the king.
- Administration of the state and looking after the economy
- In the absence of the king, looked after his affairs.
- Used to seal official letters and documents under the king

2) Amatya (Pant and Majumdar) :-

- Minister of Finance and Revenue
- Check all accounts of income and expenditure

3) Waqia-Navis(Minister) :-

- Head of the departments of information, intelligence and treaty
- Home minister of the present time.

4) Sumant (Dabir) :-

- He was the foreign minister of the state

5) Secretary/Chitnis/Shurunvis :-

- Official correspondence
- Main function - To check the language, style of the official letters

6) Commander (Sar-e-Naubat) :-

- Military chief
- Responsibility of recruitment, organization, discipline of army etc.

7) Panditrao (Sadr) :-

- Take care of religious work
- Responsibility of grants given for religious works

8) Judge :-

- Head of the Department of Justice.
- Main Functions - Hearing of criminal and civil cases and maintenance of justice and law and order in the state

क्र	नाम	कार्य
1	पेशवा	प्रधान मंत्री
2	सर-ए- नोबत	सेनापति
3	अमात्य	वित्त एवं राजस्व मंत्री
4	वाक्यन्वीस	सूचना मंत्री, गुप्तचर विभाग
5	चिटनीस	चिट्ठी/डाक विभाग का कार्यालय
6	सुमंत	विदेश मंत्री
7	पंडित राव	धार्मिक मंत्री
8	न्यायाधीश	न्यायालय से संबंधित

N	Name	Work
1	Peshwa	Prime minister
2	Sar-i-Naubat	Chief of armed forces
3	Majumdar /Amatya	Finance, Revenue , Accounts
4	Waqia-Navis	Information Minister, Intelligence Department
5	Sachiv/ Surunavis /Chitnis	Letter / Royal Correspondence
6	Dabir /Sumant	Foreign Affairs
7	Pandit Rao	Religious affairs and Charities
8	Nayayadhish	Justice

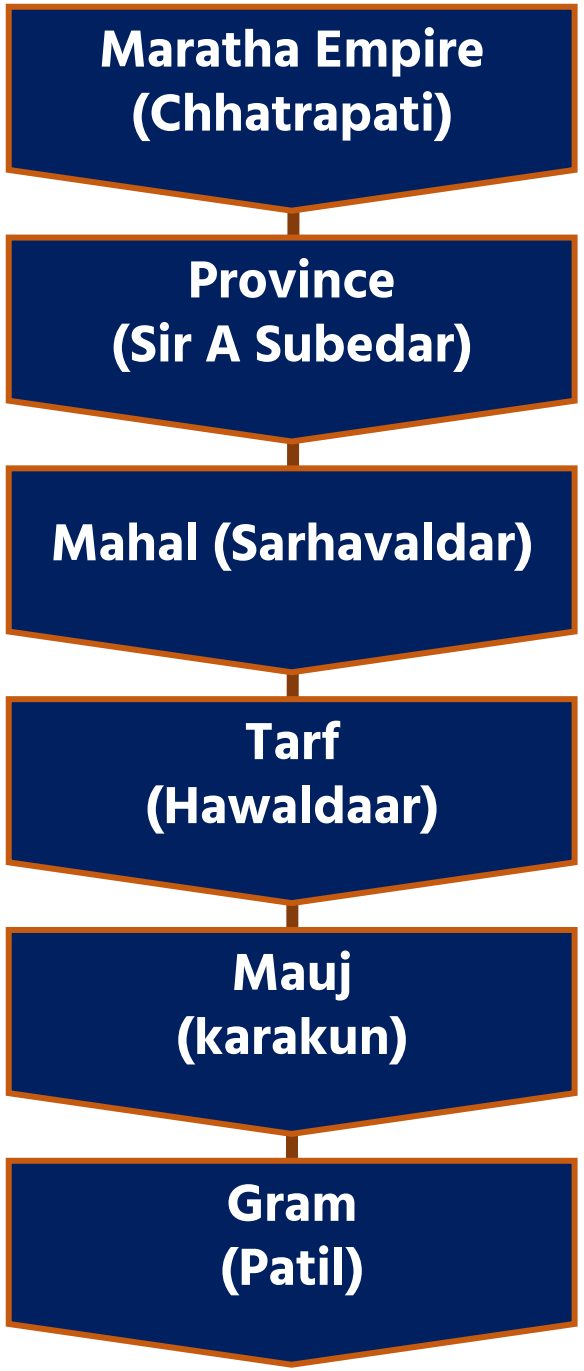
4.3) प्रांतीय प्रशासन

1) शिवाजी ने मराठा राज्य को चार प्रांत या सरसूबा में बांटा था
2) प्रांत के सर्वोच्च अधिकारी को सर सूबेदार के नाम से जाना जाता था, इस की नियुक्ति स्वयं शिवाजी करते थे
   - ‡ उत्तरी प्रान्त - इसमें बम्बई के उत्तर में सूरत व सल्हेर दुर्ग से लेकर पूना तक का भाग सम्मिलित था
   - ‡ दक्षिण पश्चिमी प्रांत - इस प्रान्त में दक्षिणी कोंकण प्रदेश या समुद्री तट सम्मिलित था
   - ‡ दक्षिण पूर्वी प्रान्त - इस क्षेत्र में सतारा, सांगली, कोल्हापुर आदि क्षेत्र शामिल थे
   - ‡ दक्षिण प्रान्त - इसमें कोलाबा, जिंजी और उसके आस पास का प्रदेश सम्मिलित था
3) प्रत्येक प्रान्त, महालों में विभक्त था यहां का अधिकारी सरहवलदार होता था
4) महालों को तरफों में बांटा गया था जो हवलदार नामक अधिकारी के अधीन था। इसके अधीन कारकुन नामक अधिकारी होते थे।
5) गांव सबसे छोटी इकाई थी। पटेल, पाटिल या देशमुख इसका मुखिया होता था



4.3) Provincial Administration

1) Shivaji divided the Maratha kingdom into four provinces or sarsuba.
2) The highest official of the province was known as Sir Subedar, appointed by Shivaji himself.
   - ‡ Northern Province - This included the part from Surat and Salher fort to Poona in the north of Bombay.
   - ‡ Southwestern Province - This province included the southern Konkan region or the seacoast
   - ‡ Southeastern Province - This region included areas like Satara, Sangli, Kolhapur etc.
   - ‡ Southern Province - This included Colaba, Jinji and its surrounding region.
3) Each province was divided into mahal, the official here was Sarhavaldar.
4) The Mahals were divided into tarf, which were under an officer called Havaldar. Under it were officers called karakun.
5) Village/gram was the smallest unit. Patel, Patil or Deshmukh was its head.



4.4) राजस्व प्रशासन

शिवाजी की भू राजस्व व्यवस्था पर मलिक अंबर का प्रभाव था यह रैयतवाड़ी प्रथा पर आधारित थी। जिसकी निम्नलिखित विशेषताएं है :-

1) शिवाजी ने अन्नाजी दत्ते के अधीन भूमि की विस्तृत माप कराई
2) माप का आधार जरीब/ काठी थी
3) भूमि को ठेके पर देने की प्रथा को समाप्त कर, उत्पादन के अनुमान पर किसान से लगान निर्धारित किया
   - उपज के आधार पर 1/3 भाग भूमिकर
   - बंजर भूमि पर कर नहीं लिया जाता था
   - राजस्व नकद या वस्तु के रूप में चुकाया जाता था
4) राज्य कृषि को प्रोत्साहन देने के लिए तकाबी ऋण

- चौथ -	- सरदेशमुखी -
▪ इस कर के बदले में पड़ोसी राज्यों को शिवाजी के आक्रमण से बचने का आश्वासन प्राप्त हो जाता था। ▪ इसकी मात्रा राज्य की आय की एक चौथाई (1/4) होती थी।	▪ यह कर भी पड़ोसी राज्यों से वसूल किया जाता था। ▪ यह उस प्रदेश के भूमिकर का 10 प्रतिशत भाग होता था। सरदेशमुखी वसूल करना शिवाजी अपना कानूनी अधिकार मानते थे

4.4) Revenue Administration

Malik Ambar had influence on Shivaji's land revenue system, it was based on the Ryotwari system. which has the following characteristics :-

1) Shivaji got detailed measurement of land done under Annaji Dutte
2) Basis of Measurement was jarib/kathi
3) Ending the practice of giving land on contract, fixed the rent from the farmer on the estimate of production
   - Land tax 1/3rd on the basis of produce
   - Waste land was not taxed
   - Revenue was paid in cash or kind
4) Takabi loan to encourage state agriculture

- Chauth -	- Sardeshmukhi -
▪ In return for this tax, the neighboring states would get assurance of avoiding Shivaji's attack. ▪ Its amount was one-fourth (1/4) of the state's income.	▪ This tax was also collected from neighboring states. ▪ It used to be 10 percent of the land tax of that region. Shivaji considered it his legal right to collect sardeshmukhi.

NOTE

मराठा राज्य

स्वराज क्षेत्र

↓

सरदेशमुखी

↓

छत्रपति → PM

देशमुख → CM

↓

देशमुख की आय का 10% जो सीधे छत्रपति के पास जाता था

मुल्क – ए - क़दीम → हमला करके अर्जित

चौथ → आक्रमण / सुरक्षा हेतु ना हम आक्रमण करेंगे ना कोई और

↓

उस राज्य की आय का 1/4 विभाजन

↓

विभाजन

- मोकास - 66% → प्रमुख सरदार
- बावती - 25% → छत्रपति
- सहोतरा - 6% → पंत सचिव
- नादगोंडा - 3% → छत्रपति के विवेक पर

NOTE

Maratha Kingdom

Swaraj kshetra

↓

Sardeshmukhi

↓

Chhatrapati → PM

Deshmukh → CM

↓

10% of Deshmukh's income which went directly to Chhatrapati.

Mulk-e-Kadeem → Earned by attacking

Chauth → Neither we will attack nor anyone else for attack

↓

1/4 division of state income

↓

Division

- Mokaas - 66% → Head Sardhar
- Babati-25% → Chhatrapati
- Sahotara-6% → Pant sachiv
- Nadgonda -3% → Chhatrapati 's discretion

4.5) सैन्य प्रशासन

शिवाजी के सैन्य-प्रशासन में दुर्ग, तोपखाना में दुर्ग, नौ-सेना, घुड़सवार सेना एवं पैदल-सेना सम्मिलित थी।

1) अश्वारोही सेना :- शिवाजी की अश्वारोही सेना के संगठन को पागा कहा जाता था। इसमें दो प्रकार के सैनिक होते थे -
   - बरगीर - इन्हें राज्य की ओर से घोड़े एवं शस्त्र प्राप्त होते थे।
   - सिलेदार - ये घोड़े एवं शस्त्र का प्रबंध स्वयं करते थे।

2) पैदल सेना :-
   - पैदल सेना को पाइक कहा जाता था
   - पैदल सेना का सबसे बड़ा अधिकारी - सरे-नौबत

4) दुर्ग :- शिवाजी के पास 240 या 250 दुर्ग थे। इसकी देख-रेख के लिए विभिन्न अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी-
   - हवलदार :- किले की सुरक्षा व्यवस्था का उत्तरदायित्व
   - कारकुन :- यह किले के गोदाम का अधिकारी (कायस्थ)

4) तोपखाना :- शिवाजी के पास एक छोटा तोपखाना था, जिसमें लगभग 200 तोपें थीं। ये तोपें फ्रांसीसियों, पुर्तगालियों तथा अंग्रेजों से खरीदी गई थीं।

5) नौ-सेना :- शिवाजी ने कोलाबा, कल्याण नगरों में नौ-सैनिक ने अड्डों की स्थापना की थी।

4.6) न्याय प्रशासन

1) शिवाजी का न्यायालय धर्म-सभा या हुजूर-हाजिर मजलिस कहा न्याय प्रशासन जाता था।

2) न्यायाधीश के द्वारा दीवानी व फौजदारी मुकदमों की सुनवाई की जाती थी।

3) न्याय की अंतिम अपील छत्रपति के पास की जाती थी। वे न्यायाधीश, एवं पंडितराव की सहायता से निर्णय देते थे

4) प्रान्तीय एवं महल स्तर पर न्याय के लिए मजलिस हुआ करती थी जिसे सभा कहा जाता था।

4.5) Military Administration

Shivaji's military-administration included forts, artillery forts, navy, cavalry and infantry.

1) Cavalry :- The organization of Shivaji's cavalry was called Paga. There were two types of soldiers -
   - Bargir - They used to get horses and weapons from the state
   - Sildars - They used to manage the horses and weapons themselves
2) Infantry :-
   - Infantry was called pike
   - The highest infantry officer - Surrey-Naubat
4) Fort :- Shivaji had 240 or 250 forts. Various officers were appointed to look after it-
   - Havaldar :- Responsible for the security of the fort
   - Karakun :- Officer of warehouse of Fort (kayastha)
4) Artillery:- Shivaji had a small artillery, which had about 200 cannons. These guns were bought from the French, Portuguese and British.
5) Navy: - Shivaji had established naval bases in the cities of Colaba, Kalyan.

4.6) Judicial Administration

1) Shivaji's court was called the Dharma Sabha or the Huzur-Hazir Majlis for the judicial administration.
2) Civil and criminal cases were heard by the judge.
3) The final appeal of justice was made to the Chhatrapati. He used to give decisions with the help of the judge, and Panditrao.
4) There used to be Majlis for justice at the provincial and mahal(fort) level, which was called the Sabha.

5) शिवाजी का मूल्यांकन

सुधार :-

1) आदर्श तथा उच्च व्यक्तित्व
2) उज्जवल चरित्र :- शिवाजी का चरित्र अत्यंत उज्जवल था। वे शत्रु की स्त्री को भी मां तथा बहन के समान समझते थे।
3) महान संगठनकर्ता :- शिवाजी एक महान संगठनकर्ता थे। उन्होंने मराठा जाति को संगठित करके उसे एक सैनिक जाति के रूप में परिणित कर दिया।
4) महान सेना नायक
5) महान विजेता :- 1656 ई. में शिवाजी ने जावली पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया। 1674 में राज्याभिषेक के पश्चात शिवाजी पेड़गांव, भूताल छावनी, फर्ली तथा कोल्हापुर पर जीत दर्ज की।
6) कुशल प्रशासक :- शिवाजी ने जमींदारी, जागीरदारी तथा ठेकेदारी प्रथा को पूर्णतया समाप्त कर दिया।

शिवाजी की शासन व्यवस्था का अभाव :-

1) शिवाजी के नेतृत्व में मराठों का उत्तर में साम्राज्य विस्तार नहीं हुआ।
2) अत्यधिक केन्द्रीकृत प्रशासन के कारण उत्तराधिकारी शासन का संचालन नहीं कर पाये और समस्त शक्तियां पेशवा के अधीन हो गईं।

इस प्रकार शिवाजी का शासन प्रबन्ध श्रेष्ठ था। सर जदुनाथ सरकार ने इसे मध्ययुगीन राजतंत्र की एक अनोखी घटना बताया है। औरंगजेब शिवाजी को पहाड़ी चूह्य कहकर पुकारता था, परन्तु प्रसिद्ध मराठा इतिहासकार सर जदुनाथ सरकार ने लिखा है मैं उन्हें हिन्दू जाति द्वारा उत्पन्न किया हुआ अंतिम महान क्रियात्मक व्यक्ति एवं राष्ट्र निर्माता मानता हूं।

5) Assessment of Shivaji

Reform :-

1) Ideal and high personality
2) Bright character:- Shivaji's character was very bright. He also considered the enemy's woman as mother and sister.
3) Great Organizer:- Shivaji was a great organizer. He consolidated the Maratha caste and transformed it into a military caste.
4) Great commander
5) Great conqueror: - In 1656 AD, Shivaji attacked Jawali and took possession. After the coronation in 1674, Shivaji conquered Pedgaon, Bhutal Cantonment, Farli and Kolhapur.
6) Efficient Administrator: - Shivaji completely abolished the Zamindari, Jagirdari and Contractorship system.

Lackings of Shivaji's governance :-

1) Marathas did not expand in the north under the leadership of Shivaji
2) Due to the highly centralized administration, the successors could not administer the rule and all the powers went under the Peshwa.

Thus Shivaji's administration was excellent. Sir Jadunath Sarkar has described it as a unique incident of medieval monarchy. Aurangzeb used to call Shivaji the hill rat, but the famous Maratha historian Sir Jadunath Sarkar has written that I consider him to be the last great active person and nation builder born in the Hindu caste.

6) शिवाजी के उत्तराधिकारी

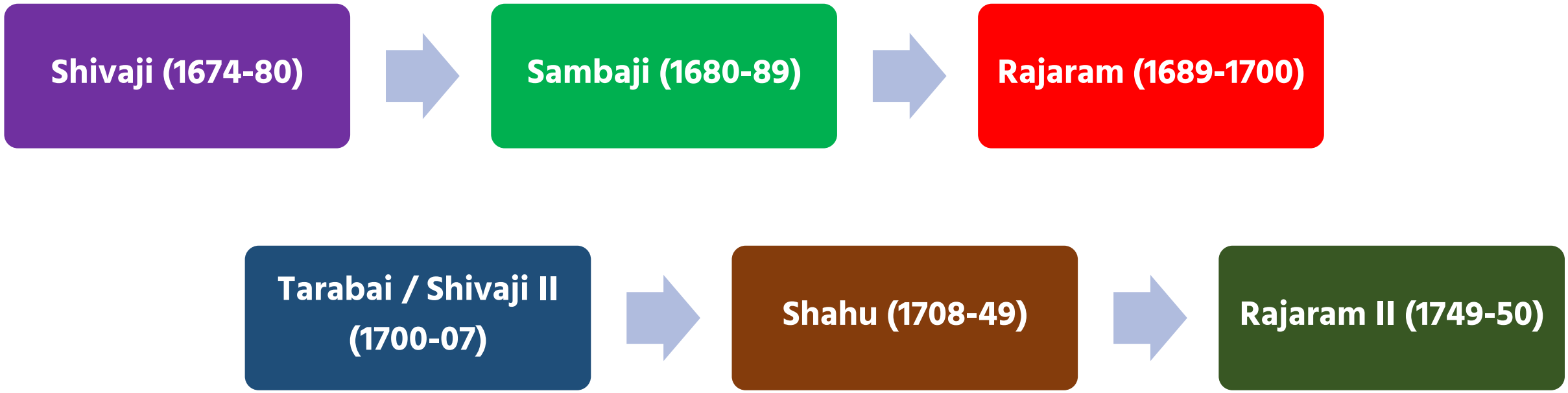
शिवाजी की मृत्यु उपरांत मराठा साम्राज्य में उत्तराधिकार को लेकर विवाद खड़ा हो गया। शिवाजी की दो पत्नियों से उत्पन्न 2 पुत्र थे - शम्भाजी और राजाराम । शिवाजी की इच्छा के अनुरुप 21 अप्रैल 1680 ई को 10 वर्ष की अवस्था में राजाराम का राज्य अभिषेक रायगढ़ में कर दिया गया परंतु पन्हाला किले में कैद शम्भाजी ने किलेदार की हत्या करके प्रधान सेनापति हम्मीरराव मोहिते को अपने पक्ष में कर लिया तथा राजाराम और उसकी माता सोयराबाई को बैठ करके स्वयं 20 जुलाई 1680 को गद्दी पर बैठ गया

शिवाजी (1674-80) → **शम्भाजी (1680-89)** → **राजाराम (1689-1700)**

ताराबाई / शिवाजी II (1700-07) → **शाहू (1708-49)** → **राजाराम द्वितीय (1749-50)**

6) Successor of Shivaji

After the death of Shivaji, a dispute arose over the succession in the Maratha Empire. Shivaji had two sons - Shambaji and Rajaram, born from two wives. According to Shivaji's wish, on 21 April 1680 AD at the age of 10, Rajaram was coronated in Raigad, but Sambhaji, who was imprisoned in the Panhala fort, killed the castelian and took the chief commander Hambirrao Mohite on his side and remove Rajaram and his mother Soyarabai and himself sat on the throne on 20 July 1680.



NOTE

शाहजी भोंसले एवं जीजाबाई

↓

छत्रपति शिवाजी (1627-80) ❶

↓

पत्नी

साइबाई निम्बालकर

पुत्र

❷ **शम्भाजी** (1680-80)

पत्नी - येशुबाई

पुत्र

❺ **शाहूजी** (1708-49)

राजधानी - सतारा

सोयराबाई

पुत्र

❸ **राजाराम** (1689-1700)

पत्नी

ताराबाई (कोल्हापुर)

पुत्र

❹ **शिवाजी II** (1700-1707)

पुत्र

❻ **राजाराम II** (1749-77)

राजसबाई

पुत्र

शम्भाजी II (1707-1749)

पुतलीबाई (सती हो गयी)

NOTE

Shahji Bhonsle and Jijabai

1 Chhatrapati Shivaji (1627-80)

Wife

Saibai Nimbalkar

Son

2 **Shambaji (1680-80)**

Wife - Yesubai

Son

5 **Shahuji (1708-49)**

Capital - Satara

Soyarabai

Son

3 **Rajaram (1689-1700)**

Wife

Tarabai (Kolhapur)

Son

4 **Shivaji II (1700-1707)**

Son

6 **Rajaram II (1749-77)**

Putlibai (became sati)

Rajasbai

Son

Shambaji II (1707-1749)

6.1) शम्भाजी (1680-89)

1) जन्म :- 1657
2) माता :- साईं बाई
3) गुरु व शिक्षक :- केशव भट्ट और उमा जी पंडित
4) पत्नी :- येसुबाई
5) पुत्र :- शाहू
6) राज्य अभिषेक :- 16 जनवरी 1681
7) राजधानी :- रायगढ़
8) संभाजी के शासनकाल में मराठों में एकता नहीं रही
9) नीलोपंत को अपना पेशवा नियुक्त किया
10) साथ ही कन्नौज के कवि कलश नामक विद्वान ब्राह्मण को अपना सलाहकार नियुक्त किया

6.2) राजाराम (1689-1700)

1) शम्भाजी की मृत्यु के समय उनका पुत्र शाहू 7 वर्ष का था इसलिए उनके सौतेले भाई राजाराम को 19 फरवरी 1689 को मराठों का राजा घोषित किया गया
2) वह चरित्रवान, साहसी और दृढ़ निश्चयी था
3) राजाराम ने अंत तक यही कहा कि वह शम्भाजी के पुत्र शाहू का, जो औरंगजेब की कैद में था प्रतिनिधि मात्र है
4) शम्भाजी की विधवा येसुबाई ने राजाराम को विशालगढ़, भेज कर खुद सेना की कमान संभाल ली
5) इस वीरांगना ने मुगल सेना को कई जगह मात दी
6) किंतु एक अधिकारी सूर्य जी पिसाल के विश्वासघात के कारण मुगल सेनापति ने 13 नवंबर 1689 को येसूबाई और उसके पुत्र शाहूजी को अनेक मराठाओं समेत गिरफ्तार कर लिया

6.1) Shambaji (1680-89)

1) Birth :- 1657
2) Mother :- Sai Bai
3) Guru and Teacher :- Keshav Bhatt and Umaji Pandit
4) Wife :- Yesubai
5) Son :- Shahu
6) Coronation :- 16 January 1681
7) Capital :- Raigarh
8) There was no unity among the Marathas during the reign of Sambhaji.
9) Appointed Nilopant as his Peshwa
10) Along with this, a learned Brahmin named Kavi Kalash of Kannauj was appointed as his advisor.

6.2) Rajaram (1689-1700)

1) At the time of Shambaji's death, his son Shahu was 7 years old, so his half-brother Rajaram was declared the king of the Marathas on 19 February 1689.
2) He was virtuous, courageous and determined
3) Rajaram said till the end that he was only the representative of Shahu, the son of Shambaji, who was in Aurangzeb's captivity.
4) Shambaji's widow Yesubai sent Rajaram to Vishalgarh and took command of the army herself.
5) This brave heroine defeated the Mughal army at many places
6) But due to the betrayal of an officer Suryaji Pisal, the Mughal general arrested Yesubai and his son Shahuji along with many Marathas on 13 November 1689.

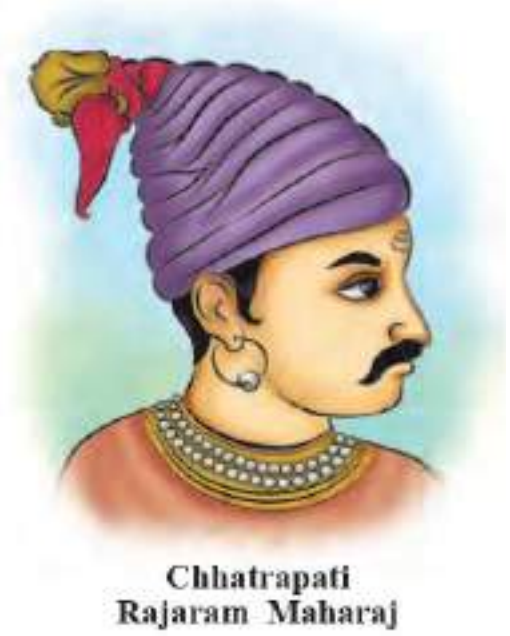
7) 1698 में जिजी से भागकर राजाराम सतारा पहुंचा और उसे अपनी राजधानी बनाई

8) 1700 में राजाराम की सतारा में मृत्यु हो गई परंतु वह जब तक जीवित रहा मराठों की स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत रहा

9) राजाराम ने एक नए पद "प्रतिनिधि" का सृजन किया

10) इस प्रकार शिवाजी के अष्टप्रधान में प्रतिनिधि सहित नौ मंत्री हो गए





6.3) शिवाजी द्वितीय / ताराबाई (1700-1707)

1) राजाराम के बाद उसका 4 वर्षीय अल्पसंख्यक पुत्र शिवाजी द्वितीय मराठों का शासक बना तथा राजाराम की पत्नी ताराबाई संरक्षिका बनी

2) रायगढ़, सातारा तथा सिंहगढ़ आदि किलों को मुगलों से छीन लिया

3) जब औरंगजेब की मृत्यु हो गई तो सम्राट बहादुर शाह ने मराठों को आपसी झगड़ों में फंसा देने की दृष्टि से शाहू को दक्षिण भेज दिया

4) 12 अक्टूबर 1707 को शाहू तथा ताराबाई के मध्य **खेड़ा का युद्ध** हुआ जिसमें शाहू, बालाजी विश्वनाथ की मदद से विजई हुआ

5) 1708 में शाहू ने सतारा पर अधिकार कर लिया

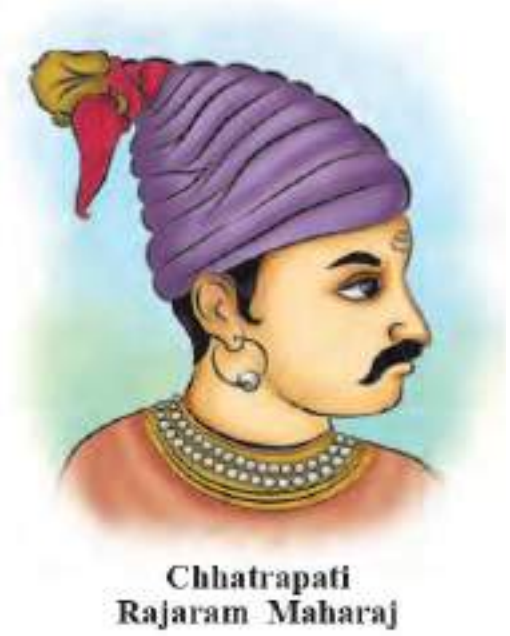
7) In 1698, Raja Ram fled from Jinji and reached Satara and made it as his capital.

8) Rajaram died in Satara in 1700 but as long as he lived he struggled for the independence of the Marathas.

9) Rajaram created a new post "Representative".

10) Thus Shivaji's Ashtapradhan now had nine ministers including a representative.





Chhatrapati
Rajaram Maharaj

6.3) Shivaji II / Tarabai (1700-1707)

1) After Rajaram, his 4-year-old minor son Shivaji II became the ruler of the Marathas and Rajaram's wife Tarabai became the patroness.

2) The forts like Raigad, Satara and Sinhagad were snatched from the Mughals.

3) When Aurangzeb died, Emperor Bahadur Shah sent Shahu to the south with a view to entangle the Marathas in mutual conflicts.

4) On 12 October 1707, Shahu and Tarabai fought in the battle of Kheda in which Shahu was victorious with the help of Balaji Vishwanath.

5) Shahu captured Satara in 1708.

6.4) शाहू (1708-1749)

1) शम्भाजी के पुत्र शाहू का 1708 ई में राज्याभिषेक हुआ इन्होंने सतारा को अपनी राजधानी बनाया
2) एक नवीन पद "सेनाकर्ते" का सृजन किया और उस पर बालाजी विश्वनाथ को नियुक्त किया
3) खेड़ा के युद्ध के बाद मराठा राज्य दो भागों में बंट गया- उत्तर में सतारा राज्य जो शाहू के अधीन था तथा दक्षिण में कोल्हापुर का राज्य शिवाजी द्वितीय (ताराबाई के पुत्र) के अधीन था
4) इन दो प्रतिद्वंदी शक्तियों (सतारा तथा कोल्हापुर) के मध्य शत्रुता का अंत 1731 ई में वारना की संधि द्वारा हो गया
5) शाहू ने 1731 में बालाजी विश्वनाथ को पेशवा के पद पर नियुक्त किया इसी के साथ ही पेशवा का पद वंशानुगत हो गया

6.5) राजाराम द्वितीय (1749-1750)

1) शाहूजी के दत्तक पुत्र राजाराम द्वितीय को छत्रपति बनाया गया
2) 1750 में पेशवा बालाजी बाजीराव से राजाराम द्वितीय ने संगोला की संधि कर ली जिसके अनुसार मराठा संगठन का वास्तविक नेता पेशवा बन गया
3) छत्रपति नाम मात्र का प्रधान रह गया तथा सतारा के किले में बंदी की तरह जीवन व्यतीत करने लगा

6.4) Shahu (1708-1749)

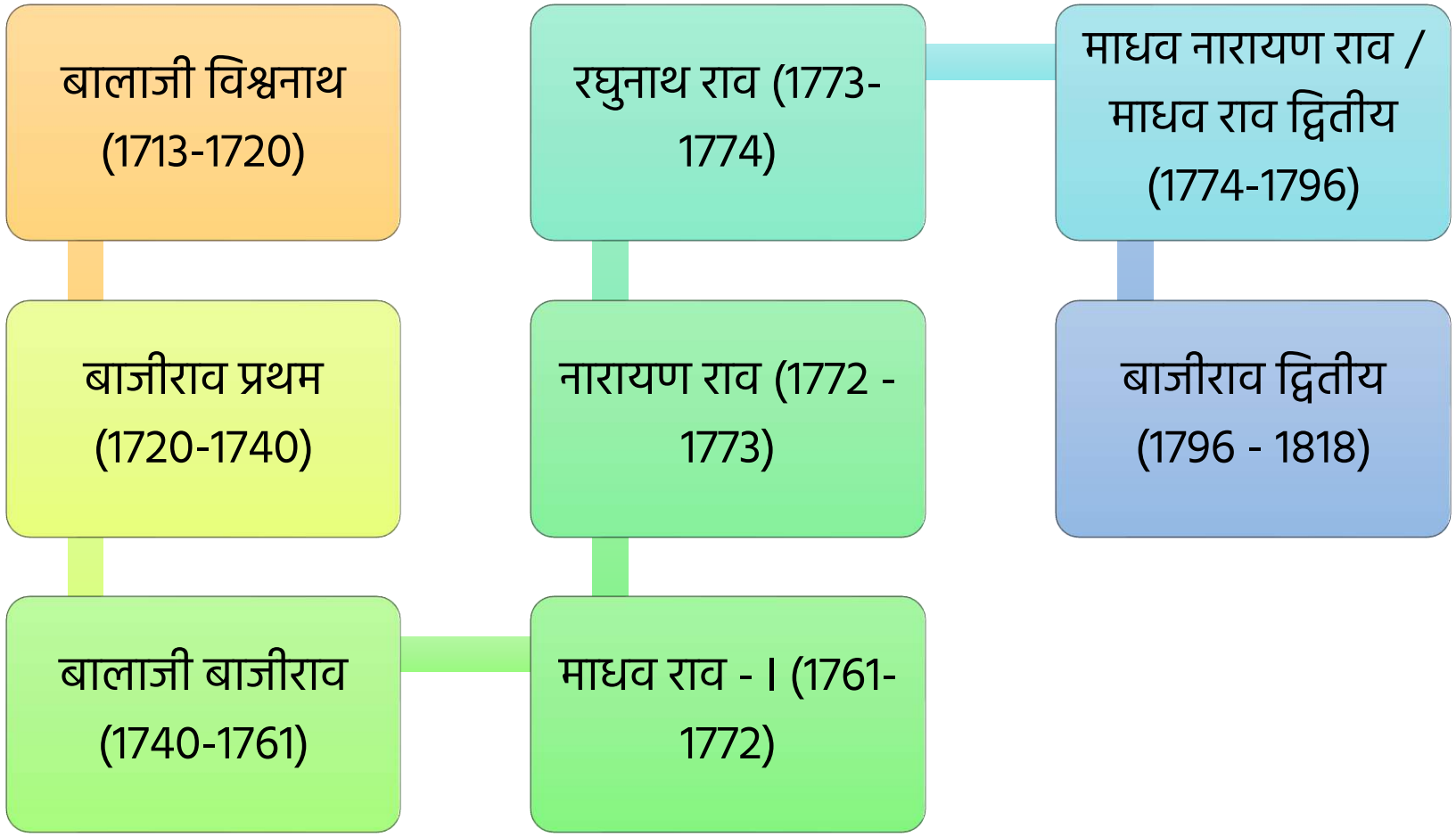
1) Shahu, the son of Shambaji, was coronated in 1708, he made Satara his capital.
2) Created a new post "Senakarte" and appointed Balaji Vishwanath on it.
3) After the Battle of Kheda, the Maratha kingdom was divided into two parts - the Satara kingdom in the north under Shahu and the Kolhapur kingdom in the south under Shivaji II (Tarabai's son).
4) The enmity between these two rival powers (Satara and Kolhapur) ended in 1731 by the Treaty of Warna.
5) Shahu appointed Balaji Vishwanath to the post of Peshwa in 1731, with this the post of Peshwa became hereditary.

6.5) Rajaram II (1749-1750)

1) Shahuji's adopted son Rajaram II was made Chhatrapati.
2) In 1750, Rajaram II made the treaty of Sangola with Peshwa Balaji Bajirao, according to which Peshwa became the real leader of the Maratha organization.
3) Chhatrapati remained a nominal head and started living as a prisoner in the fort of Satara.

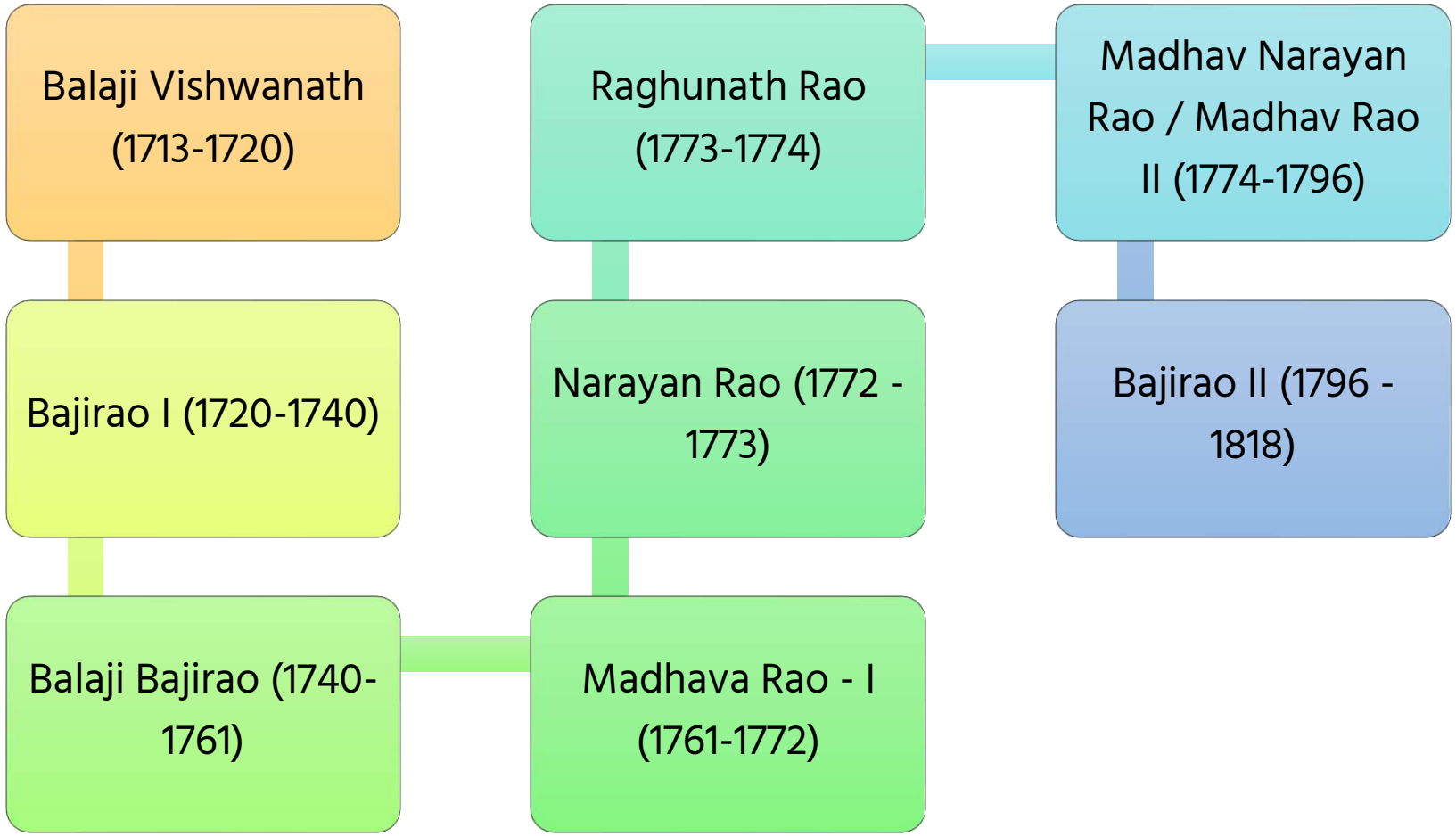
7) प्रमुख पेशवा

छत्रपति शाहू के शासन काल में बालाजी विश्वनाथ के रूप में पेशवा शक्ति का उदय हुआ तथा छत्रपति राजाराम द्वितीय ओर् पेशवा बालाजी विश्वनाथ के मध्य संगोला की संधि के बाद मराठा राजनीति में पेशवा पद को स्थायित्व मिला



7) Major Peshwa

During the reign of Chhatrapati Shahu, Peshwa power emerged in the form of Balaji Vishwanath and after the treaty of Sangola between Chhatrapati Rajaram II and Peshwa Balaji Vishwanath, the Peshwa post got stability in Maratha politics.



7.1) बालाजी विश्वनाथ (1713-20)

1) मराठा प्रशासन में पेशवा युग के आरम्भकर्ता व मराठा साम्राज्य के द्वितीय संस्थापक
2) खेड़ा के युद्ध में शाहू की सहायता
   - ‡ 1708 : शाहू द्वारा सेनाकर्ते का पद
   - ‡ 1713 : शाहू द्वारा पेशवा का पद
3) ये अत्यंत प्रतिभाशाली थे
4) दिल्ली की संधि (1719)

   ⇩

   - ‡ पक्ष - मुगल सूबेदार सैयद हसन अली खान तथा पेशवा बालाजी विश्वनाथ
   - ‡ प्रावधान -
     - ⊥ दक्कन के 6 मुगल सूबों पर मराठाओं को चौथ एवं सरदेशमुखी वसूलने का अधिकार
     - ⊥ हैदराबाद, गोंडवाना, खानदेश और बरार के जो क्षेत्र मराठाओं ने जीता पुनः मराठों को
     - ⊥ साहू की माता येशुबाई को भी मुगल कैद से मुक्त
   - ‡ रिचर्ड टेम्पल - मराठा साम्राज्य हेतु मैग्राकार्टा
5) सैय्यद बन्धुओं (सैयद हसन अली खान और सैयद अब्दुल्लाह) को फरुखसियर को गद्दी से हटाने में अपना सहयोग दिया
6) बालाजी की मृत्यु के पश्चात 17 अप्रैल 1720 ई को उसका पुत्र बाजीराव प्रथम पेशवा बना



7.1) Balaji Vishwanath (1713-20)

1) Beginner of Peshwa era in Maratha administration and second founder of Maratha Empire
2) Helped Shahu in the battle of Kheda
   - ‡ 1708 : The post of Senakarte by Shahu
   - ‡ 1713 : Post of Peshwa by Shahu
3) They were very talented
4) Treaty of Delhi (1719)

   ⇩

   - ‡ Side - Mughal Subedar Syed Hasan Ali Khan and Peshwa Balaji Vishwanath
   - ‡ Provision -
     - ⊥ Right to collect Chauth and Sardeshmukhi to Marathas on 6 Mughal provinces of Deccan
     - ⊥ The areas of Hyderabad, Gondwana, Khandesh and Berar which the Marathas won again given to the Marathas
     - ⊥ Sahu's mother Yesubai was also freed from Mughal captivity.
   - ‡ Richard Temple - Magna Carta for the Maratha Empire
5) Contributed to the Sayyid brothers (Syed Hasan Ali Khan and Syed Abdullah) in the removal of Farrukhsiyar from the throne.
6) After the death of Balaji, on 17 April 1720, his son Bajirao became the first Peshwa.



7.2) बाजीराव प्रथम (1720-1740)

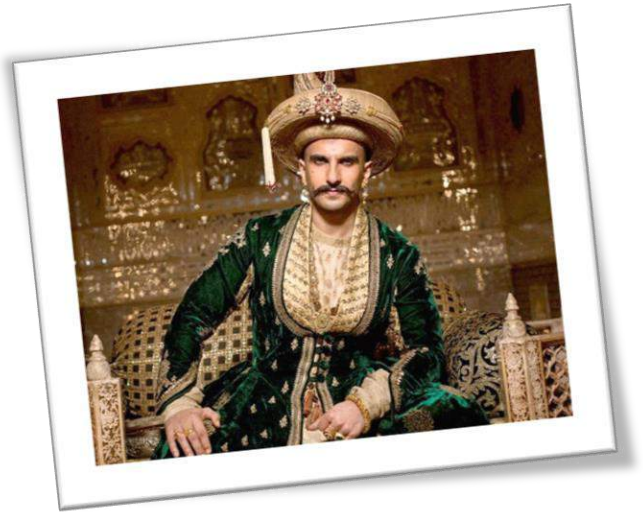
1) एक अद्वितीय सेनानायक व बालाजी विश्वनाथ के पुत्र व मराठा पेशवा

2) मुख्य कार्य :-

- मराठा सरदारों के मतभेद को मिटाकर मराठा एकता का संचार
- हैदराबाद, बुंदेलखंड, मालवा, गुजरात, बसीन आदि में विजय अभियान
- मराठा संघ की स्थापना
- मराठा साम्राज्य को 5 भागों में बांटा -
  I. ग्वालियर के सिंधिया
  II. इंदौर के होलकर
  III. नागपुर के भोंसले
  IV. बड़ौदा के गायकवाड़
  V. पुणे को मुख्यालय बनाया

3) विजय अभियान :-

- मुगल
- हैदराबाद
- बुंदेलखंड
- मालवा

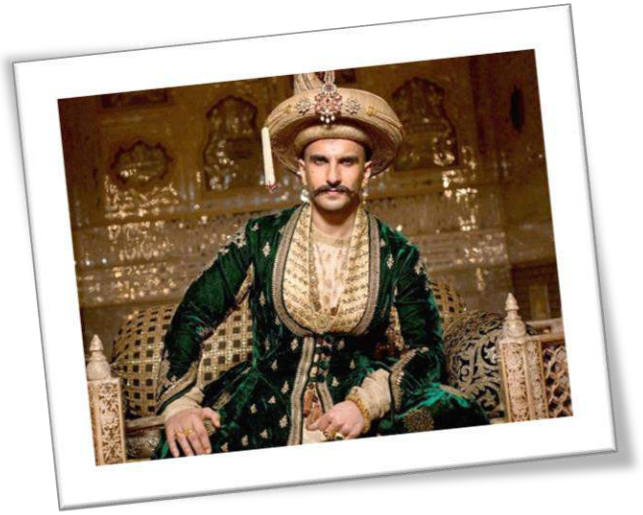


1) मुगल विजय अभियान

- मुगल साम्राज्य (मोहम्मद शाह) पर आक्रमण करने वाला प्रथम पेशवा
- कथन : हमें इस जर्जर वृक्ष के तने पर प्रहार करना चाहिए शाखाएं तो स्वयं ही गिर जाएंगी और इस प्रकार मराठाओं की पताका कृष्णा से लेकर अटक तक फहराने लगेगी

7.2) Bajirao I (1720-1740)

1) A unique general and son of Balaji Vishwanath and Maratha Peshwa
2) Major work :-
   - Communication of Maratha unity by erasing the differences of Maratha chieftains
   - Conquests in Hyderabad, Bundelkhand, Malwa, Gujarat, Basin etc.
   - Establishment of Maratha Federation
   - Maratha Empire divided into 5 parts -
     I. Scindias of Gwalior
     II. Holkar of Indore
     III. Bhonsle of Nagpur
     IV. Gaikwad of Baroda
     V. Made Pune its headquarters
3) Conquest :-
   - Mughal
   - Hyderabad
   - Bundelkhand
   - Malwa



1) Mughal conquest

- The first Peshwa to attack the Mughal Empire (Mohammed Shah)
- Statement : We should strike the trunk of this withering tree and the branches will fall on their own and thus the flag of Marathas will fly from Krishna to Atak

2) हैदराबाद (निजाम-उल-मुल्क आसफजाह) विजय अभियान

1) 1728 - पालखेड़ा का युद्ध

2) 16 मार्च 1728 मुंशी शिवगांव की संधि

- निजाम शाहू को चौथ और सरदेशमुखी का शेष धन प्रदान करेगा
- निजाम ने शाहूजी को समस्त महाराष्ट्र का स्वामी स्वीकार कर लिया
- मराठों के अधिकार को विधिवत स्वीकार कर लिया था

3) 1738 - दुरई सराय की संधि :-

- सम्पूर्ण मालवा, नर्मदा तथा चंबल नदी के बीच की भूमि बाजीराव को दे दी
- 2.50 लाख रुपया बाजीराव को दिया
- निजाम ने बाजीराव से पूर्ण पराजय मान ली

2) बुंदेलखंड विजय

1) बुंदेलखंड राज्य मुगलों की इलाहाबाद की सूबेदारी में था
2) मोबाइल सूबेदार मोहम्मद खां बंगश
3) बुंदेल नरेश छत्रसाल ने मराठों से सहायता मांगी
4) मराठों ने मुगलों द्वारा विजित सभी बुंदेलखंड के प्रदेशों को छीन लिया तथा छत्रसाल को वापस कर दिया
5) छत्रसाल ने पेशवा की शान में एक दरबार का आयोजन किया
6) प्रतिवर्ष 33 लाख रुपए का राजस्व

2) Conquest of Hyderabad (Nizam-ul-Mulk Asafjah)

1) 1728 - Battle of Palkheda



2) 16 March 1728 Treaty of Mungi Shivgaon



- Nizam will provide remaining money of Chauth and Sardeshmukhi to Shahu
- Nizam accepted Shahuji as the lord of entire Maharashtra.
- The authority of the Marathas was duly accepted

3) 1738 - Treaty of Durai Sarai :-



- The entire Malwa, the land between the Narmada and the Chambal river was given to Bajirao.
- 2.50 lakh rupees given to Bajirao
- Nizam accepts complete defeat from Bajirao

2) Victory of Bundelkhand

1) The state of Bundelkhand was under the Mughal subedari of Allahabad.
2) Subedar Mohammad Khan Bangash
3) Bundela king Chhatrasal sought help from the Marathas
4) Marathas snatched all the territories of Bundelkhand conquered by Mughals and returned Chhatrasal
5) Chhatrasal organized a court in the glory of Peshwa
6) Revenue of Rs 33 lakh per annum

4) मालवा विजय

1) 1728 ईस्वी में मालवा पर मराठों ने अदाजी पवार तथा मल्हार राव के नेतृत्व में आक्रमण किया
2) यहां के सूबेदार गिरधर बहादुर को अमझेरा के युद्ध में पराजित किया

5) बसीन की सन्धि

1) यूरोपीय शक्ति के विरुद्ध बसीन की विजय मराठों की पहली जीत थी
2) मराठों ने 1739 में चिमना जी के नेतृत्व में बसीन को पुर्तगालियों से छीन लिया साथ ही सालसेट पर भी अधिकार कर लिया

4) मूल्यांकन :-

- पेशवा की श्रेष्ठता को स्थापित किया
- शम्भाजी द्वितीय को परास्त करके शाहू से उसकी प्रतिद्वंदिता को समाप्त किया
- निजाम को निरंतर परास्त किया
- कोंकण में शाहू की शक्ति को स्थापित किया और मराठा शक्ति को पहली बार उत्तर भारत के उपजाऊ भू प्रदेश में फैला दिया गया
- गुजरात, मालवा, बुंदेलखंड आदि पर मराठों की सत्ता स्थापित हुई और मराठों के आक्रमण दिल्ली तक होने लगे
- अपने 20 वर्ष के कार्यकाल में पेशवा बाजीराव ने मराठों को भारत की सर्वश्रेष्ठ शक्ति बना दिया

4) Conquest of Malwa

1) In 1728 AD, the Marathas attacked Malwa under the leadership of Adaji Pawar and Malhar Rao.
2) The Subedar Girdhar Bahadur was defeated here in the battle of Amjhera.

5) Treaty of Bassein

1) The victory of Bassein was the first victory of the Marathas against a European power.
2) The Marathas under the leadership of Chimna ji snatched Bassein from the Portuguese in 1739 as well as captured Salsette.

4) Assessment :-

- Established the supremacy of the Peshwa
- By defeating Shambaji II, he ended his rivalry with Shahu.
- Consistently defeated the Nizam
- Established Shahu's power in Konkan and Maratha power was spread over the fertile land of North India for the first time
- The power of Marathas was established on Gujarat, Malwa, Bundelkhand etc. and Marathas started attacking till Delhi.
- Peshwa Bajirao made the Marathas the best power of India during his 20 year tenure.

NOTE

1739

1.नादिर शाह (ईरान का नेपोलियन) का भारत पर आक्रमण | Nadir Shah (Napoleon of Iran) invaded India

2. करनाल का युद्ध | Battle of Karnal (1739)

- नादिरशाह | Nadirshah
- मुगल मोहम्मदशाह | Mughal Mohammad Shah

3. तख्ते ए ताऊस + कोहिनूर हीरा + 70 करोड़ संपत्ति | Takhte- e -Taus + Kohinoor diamond + 70 crore assets







NOTE

1739

- 1.Nadir Shah (Napoleon of Iran) invaded India
- 2.Battle of Karnal (1739)
  - Nadirshah
  - Mughal Mohammad Shah
- 3.Takhte- e -Taus + Kohinoor diamond + 70 crore assets







7.3) बालाजी बाजीराव (1740-61)

1) बाजीराव प्रथम के पुत्र तथा शाहू द्वारा नियुक्त मराठा पेशवा
2) इन्हें नानासाहेब भी कहा जाता है
3) संगोला की संधि (14जनवरी 1750)

⇩

‡ पक्ष - छत्रपति राजाराम द्वितीय तथा पेशवा बालाजी बाजीराव

‡ प्रावधान -

- राज्य के सभी प्रमुख विभाग छत्रपति ने पेशवा को सौंप दिया
- छत्रपति राज्य का संवैधानिक प्रधान माना गया और सतारा में उसके निवास की व्यवस्था कर दी गई

4) पानीपत का तृतीय युद्ध (14 जनवरी 1761)

1) पक्ष :-
   - अफगानी आक्रांता अहमद शाह अब्दाली
   - मराठा
     - पेशवा - बालाजी बाजीराव
     - सेनापति - पेशवा पुत्र विश्वास राव
     - वास्तविक सेनापति - चचेरा भाई सदाशिव राव भाऊ
     - तोपखाना - इब्राहिम गर्दी





7.3) Balaji Bajirao (1740-61)

1) Maratha Peshwa, son of Bajirao I and appointed by Shahu
2) He is also called Nanasaheb
3) Treaty of Sangola (14 January 1750)

‡ Side - Chhatrapati Rajaram II and Peshwa Balaji Bajirao

‡ Provision -

- The Maratha Chhatrapati handed over all the major departments of the state to the Peshwa.
- Chhatrapati was considered the constitutional head of the state and arrangements were made for his residence in Satara.

4) Third Battle of Panipat (14 January 1761)

1) Side :-
   - Afghan invader Ahmed Shah Abdali
   - Maratha
     - Peshwa - Balaji Bajirao
     - General - Peshwa's son Vishwas Rao
     - Actual Commander - Cousin Sadashiv Rao Sahu
     - Artillery - Ibrahim Gardi

2) कारण
- मराठों द्वारा मुगल सम्राट की सहायता
- मराठों द्वारा अब्दाली के नवाब से पंजाब छीनना
- मुगल सम्राट की दुर्बलता
- मराठा विस्तारवादी नीति
- अब्दाली की विस्तारवादी नीति

3) परिणाम -
- मराठा पराजय
- मृत्यु - विश्वास राव, सदाशिवराव,तुकोजी सिंधिया

4) कथन :-

- जे एन सरकार :- महाराष्ट्र में सम्भवतः ही कोई ऐसा परिवार होगा जिसने कोई न कोई सम्बंधी न खोया हो तथा कुछ परिवारों का तो सर्वनाश हो गया
- काशीराज पंडित :- पानीपत का तृतीय युद्ध मराठों के लिए प्रलयकारी सिद्ध हुआ
- बालाजी बाजीराव को एक व्यापारी :- दो मोती विलीन हो गए, सत्ताईस सोने की मुहरें लुप्त हो गयी और चांदी तथा तांबे की तो पूरी गणना ही नहीं की जा सकती है
- आर बी सरदेसाई :- पानीपत के तृतीय युद्ध ने यह निश्चित नहीं किया कि भारत पर कौन शासन करेगा बल्कि यह निश्चित किया कि भारत पर कौन शासन नहीं करेगा

5) पराजय के कारण :-

- सामंतवादी व्यवस्था
- चौथ या मराठा लूटमार नीति
- मराठों सरकार में आपसी मतभेद
- मराठा अनुशासन व दृढ़ता में कमी

2) Reason
- Help to Mughal Emperor by Marathas
- Seizing Punjab from Nawab of Abdali by Marathas
- Weakness of the Mughal Emperor
- Maratha Expansionist Policy
- Abdali's expansionist policy

3) Result -
- Maratha defeat
- Death – Vishwas Rao, Sadashivrao, Tukoji Scindia

4) Statement :-

- JN Sarkar :- There will probably be such a family in Maharashtra which has not lost any relative and some families have been destroyed.
- Kashiraj Pandit :- The third battle of Panipat proved to be a disaster for the Marathas.
- Balaji Bajirao was a businessman :- Two pearls have merged, twenty-seven gold seals have disappeared, and silver and copper cannot be fully calculated.
- R B Sardesai :- The Third Battle of Panipat did not decide who would rule India, but decided who would not rule India.

5) Reasons of defeat :-

- Feudal system
- Chauth and plundering policy of Maratha
- Differences among Maratha governments
- Lack of discipline and perseverance in Maratha

7.4) माधवराव प्रथम (1761-1772)

1) बालाजी बाजीराव का पुत्र व अत्यंत प्रतिभाशाली मराठा पेशवा
2) अल्प वयस्क होने के कारण चाचा रघुनाथ राव (राघोबा) का संरक्षण
3) सरदेसाई :- माधवराव, पेशवाओं में सबसे महान था
4) चुनौतियां :-
   - राघोबा व दीवान सखाराम बापू का विद्रोह
   - पानीपत तृतीय के बाद मराठा शक्ति व एकता का विखराव
   - हैदराबाद के निजाम से संघर्ष
   - दक्षिण में हैदर अली व अंग्रेजों का उदय
   - राजकोश का अभाव
5) समाधान :-
   - दो बार निजाम को पराजित किया
   - 1772 तक मैसूर को चार बार पराजित किया
   - 1768 में रघुनाथ राव को पराजित किया
   - मालवा और बुंदेलखंड को पुनः विजित किया
   - जाटों और रुहेलों के आधिपत्य को कम किया
   - मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय को पेंशनर सम्राट बनाया
6) मृत्यु :- 27 वर्ष की आयु में 1772 में मृत्यु

⇩

   - ग्रांड डफ :- उसकी मृत्यु मराठों के लिए पानीपत की पराजय से भी अधिक हानिकारक सिद्ध हुई
   - सरदेसाई :- माधवराव प्रथम की असामयिक मृत्यु मराठों के लिए पानीपत के युद्ध से भी महंगी पड़ी



7.4) Madhavrao I (1761-1772)

1) Son of Balaji Bajirao and extremely talented Maratha Peshwa
2) Patronage of Uncle Raghunath Rao (Raghoba) as he was minor
3) Sardesai :- Madhavrao was the greatest of all the Peshwas
4) Challenges :-
   - Disunification of Maratha power and unity after Panipat III
   - Revolt of Raghoba and Diwan Sakharam Bapu
   - Conflict with the Nizam of Hyderabad
   - Rise of Haider Ali in the South and British
   - Lack of economic resources
5) Solution :-
   - Defeated the Nizam twice
   - Defeated Mysore four times by 1772
   - Defeated Raghunath Rao in 1768
   - Reconquered Malwa and Bundelkhand
   - Reduced the hegemony of Jats and Rohelas
   - Mughal emperor Shah Alam II was made pensioner emperor
6) Death :- In 1772 at the age of 27

⇩

- Grand Duff :- His death proved to be more harmful to the Marathas than the defeat of Panipat.
- Sardesai :- The untimely death of Madhavrao I cost the Marathas even more than the battle of Panipat.



7.5) नारायण राव (1772-1773)

1) माधवराव की मृत्यु के बाद उसका छोटा भाई नारायणराव पेशवा बना,
2) 1773 ई. में उसके चाचा रघुनाथराव ने पेशवा बनने के लिए नारायणराव की हत्या कर दी

7.6) माधवराव - II (1774-1795)

1) नारायणराव की मृत्यु के बाद उसका पुत्र माधवराव नारायण पेशवा बना ।
2) नाना फड़नवीस के नेतृत्व में मराठा सरदारों ने मराठा राज्य की देखभाल के लिए बारा भाई कौंसिल की नियुक्ति हुई
3) रघुनाथराव पूना से भागने पर विवश हो गया और बम्बई जाकर नाना फड़नवीस के विरुद्ध अंग्रेजों से सहायता (सूरत की संधि) माँगी

7.7) बाजीराव द्वितीय (1796-1818)

1) यह रघुनाथराव का पुत्र था। नाना फड़नवीस की मृत्यु के बाद जिन मराठा नेताओं के हाथों में शक्ति रही, उनमें पेशवा बाजीराव द्वितीय, दौलतराव सिंधिया व जसवंतराव होल्कर प्रमुख थे
2) पेशवा बाजीराव द्वितीय और दौलतराव सिंधिया ने जसवंतराव होल्कर के भाई बिठूजी की निर्मम हत्या कर दी गई
3) होल्कर ने पूना पर आक्रमण कर पेशवा व सिंधिया की सेनाओं को 1802 ई. में हृदयसर नामक स्थान पर पराजित किया तथा पूना पर अधिकार कर लिया। उसने अमृत राव के पुत्र विनायक राव को पूना की गद्दी पर बैठा दिया
4) बाजीराव द्वितीय ने भाग कर बसीन में शरण ली थी तथा 31 दिसंबर, 1802 को अंग्रेजों से एक संधि कर ली, जिसे बसीन की संधि कहा जाता है |

7.5) Narayan Rao (1772-1773)

1) After the death of Madhavrao, his younger brother Narayanrao became Peshwa.
2) In 1773 AD, his uncle Raghunathrao killed Narayanrao to become Peshwa.

7.6) Madhavrao II (1774-1795)

1) After the death of Narayanrao, his son Madhavrao Narayan became the Peshwa.
2) The Maratha chieftains under the leadership of Nana Fadnavis appointed Bara Bhai Council to look after the Maratha state.
3) Raghunathrao was forced to flee from Poona and went to Bombay and sought help from the British (treaty of Surat) against Nana Fadnavis.

7.7) Bajirao II (1796-1818)

1) He was the son of Raghunathrao. The Maratha leaders who held power after the death of Nana Fadnavis were Peshwa Bajirao II, Daulatrao Scindia and Jaswantrao Holkar.
2) Jaswantrao Holkar's brother Bithuji was brutally murdered by Peshwa Bajirao II and Daulatrao Scindia
3) Holkar attacked Poona and defeated the armies of Peshwa and Scindia in 1802 AD at a place called Hridaysar and occupied Poona.
4) He put Vinayak Rao, son of Amrit Rao, on the throne of Poona.
5) Bajirao II fled and took refuge in Basin and made a treaty with the British on December 31, 1802, which is called the Treaty of Basin.

आंग्ल मराठा संबंध

1. 1761 → माधवराव प्रथम पेशवा बने

↓

मराठा शक्ति का पुनर्गठन

- → अंग्रेज → विस्तारवाद
- → अंग्रेज → चिंता





Mahadaji Shinde

2. 1772 → माधवराव I की मृत्यु

↓

मराठों में आपसी कलह

- → चाचा - रघुनाथ राव
  - ↓ हत्या
- → छोटा भाई - नारायण राव

1) मूल नाम → बालाजी जनार्दन भानु
2) जेम्स ग्रांट डफ → मैकियावेली
3) अत्यंत चतुर और प्रभावशाली मराठा मंत्री
4) नाना का टीपू सुल्तान से भी युद्ध हुआ था

नाना फडणवीस और महादजी सिंधिया ने माधवराव – II (नारायणराव का पुत्र) को पेशवा बनाया

अंग्रेजों के साथ सूरत की संधि (1775)

↓

आंग्ल मराठा संघर्ष

Anglo Maratha Relations

1. 1761 → Madhavrao became the first Peshwa

↓

Reorganization of Maratha Power

- British → Expansionist
- British → Worries





Mahadaji Shinde

2. 1772 → Death of Madhavrao I

↓

Contention among Marathas

- Uncle – Raghunath Rao
  - ↓ Killed
- Younger Brother - Narayan Rao

Nana Fadnavis and Mahadji Scindia made Madhavrao-II (son of Narayanrao) Peshwa

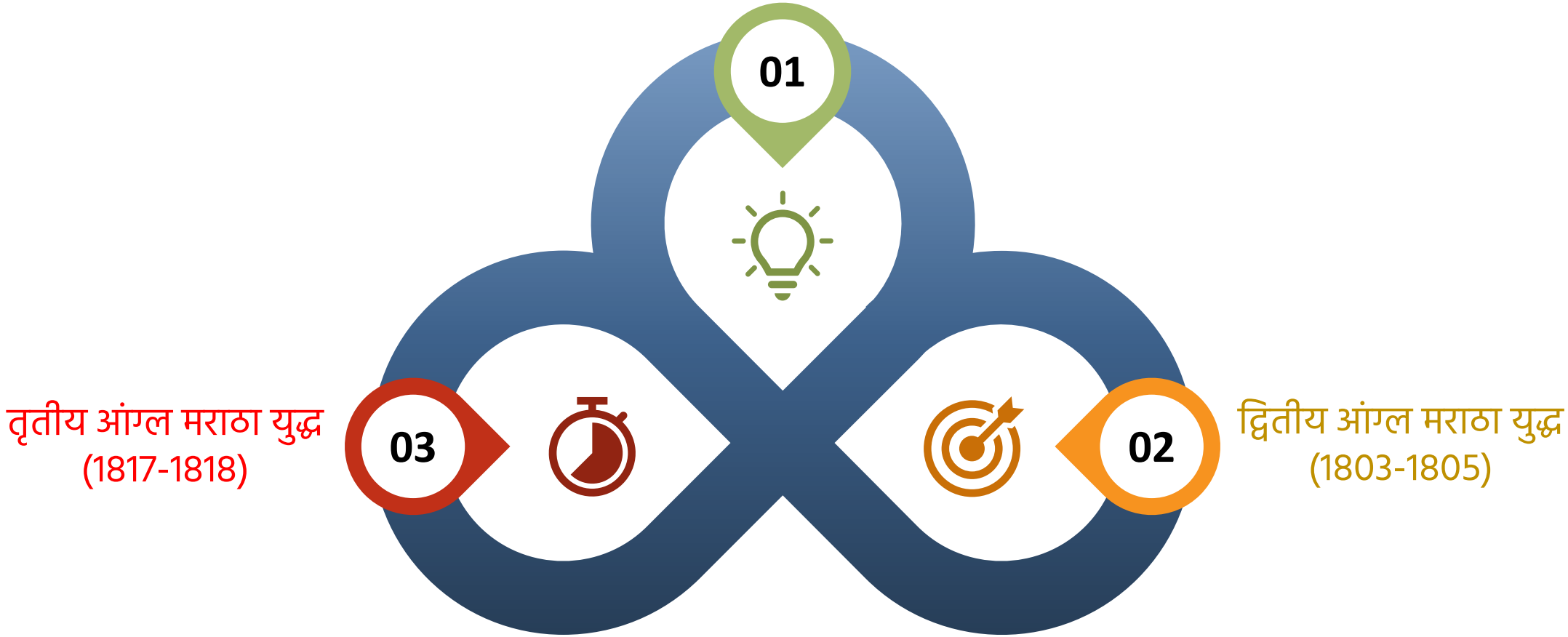
Treaty of Surat with the British (1775)

↓

Anglo – Marath Conflict

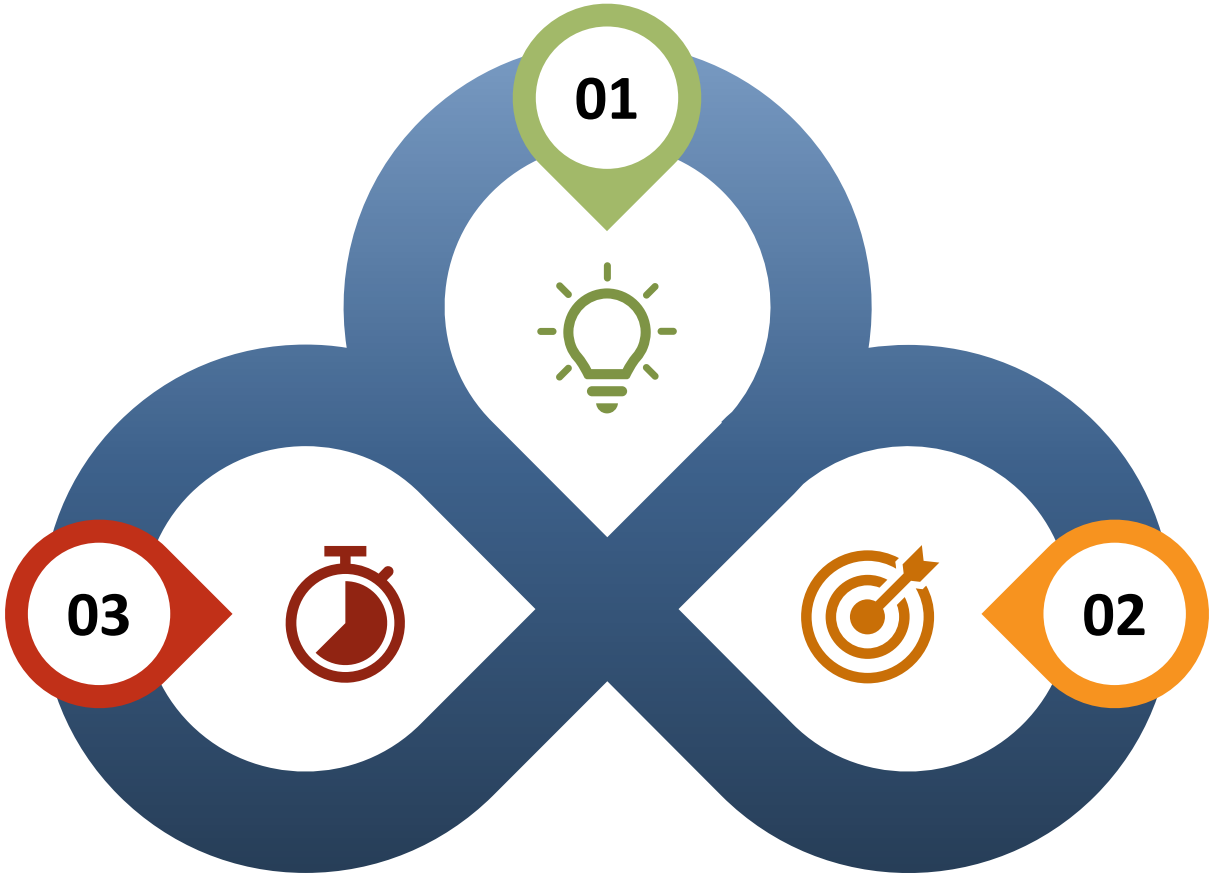
1) Original Name :- Balaji Janardan Bhanu
2) James Grant Duff :- Machiavelli
3) Very clever and influential Maratha minister
4) Nana also had a war with Tipu Sultan.

8) आंग्ल मराठा संघर्ष



8) Anglo Maratha Struggle

First Anglo-Maratha War (1775 -82)



Third Anglo-Maratha War (1817-1818)

Second Anglo-Maratha War (1803–1805)

8.1) प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775 -82)

1) कारण

1) पेशवा पद हेतु आपसी संघर्ष :-

- 1772 में पेशवा माधवराव की मृत्यु के बाद उनके भाई नारायणराव पेशवा बने
- चाचा रघुनाथ राव द्वारा नारायणराव की हत्या
- नाना फडणवीस ने अल्पवयस्क माधवराव द्वितीय को पेशवा बनाया
- राघोबा सहायता हेतु अंग्रेजों के पास गया

2) रघुनाथ राव व अंग्रेंजों के मध्य सूरत की संधि (7 मार्च 1775) :-

- अंग्रेज, रघुनाथराव (राघोबा) को पेशवा बनाने के लिए 2,500 सैनिकों की सहायता देंगे।
- इन सैनिकों का व्यय रघुनाथराव देगा।
- सालसेट, बेसीन और आसपास के टापू अंग्रेजों को दे दिये जायेंगे
- सूरत तथा भड़ौंच के जिलों की आय का कुछ भाग भी अंग्रेजों को मिला करेगा।
- मराठे, बंगाल और कर्नाटक पर आक्रमण करना बन्द कर देंगे।
- यदि रघुनाथराव ने पूना-दरबार से कोई सन्धि की तो उसमें अंग्रेजों को सम्मिलित किया जायेगा।



8.1) First Anglo-Maratha War (1775 -82)

1) Reasons

1) Mutual struggle for the post of Peshwa :-

- After the death of Peshwa Madhavrao in 1772, his brother Narayanrao became Peshwa.
- Narayanrao murdered by uncle Raghunath Rao
- Nana Fadnavis appointed a minor Madhavrao II as Peshwa
- Raghoba went to the British for help

2) Treaty of Surat (7 March 1775) between Raghunath Rao and the British :-

- The English were to give Raghunathrao 2500 soldiers whose upkeep would be paid for by Raghunathrao.
- He would also cede to the English Bassein and Salsette, and also relinquish a share in the revenues of Surat and Broach
- Marathas will stop attacking Bengal and Karnataka.
- If Raghunathrao made any treaty with Poona-Durbar, the British would be included in it.



2) महत्वपूर्ण घटनाएं

1) आरा के मैदान का युद्ध (1775) :- सूरत की सन्धि के तहत अंग्रेजी कर्नल कीटिंग बनाम पूना की सेना। इसमें पूना की आंशिक हार हुई

2) पुरंदर की संधि (1777) :- कलकत्ता परिषद ने सूरत संधि को अमान्य कर पूना दरबार से पुरंदर की संधि की -

- अंग्रेजों और मराठों के मध्य शांति
- कम्पनी रघुनाथराव का पक्ष नहीं लेगी
- सालसेट कंपनी को मिलेगा
- पूना सरकार अंग्रेजों को युद्ध के खर्च हेतु 12 लाख रुपया प्रदान करेगी
- पूना दरबार रघुनाथ राव को ₹25000 प्रति माह पेंशन के रूप में देगा और वह गुजरात चला जाएगा

3) अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम व मराठों की फ्रांसीसी नजदीकियों के कारण अंग्रेजों ने पुरंदर की संधि को तोड़कर पुनः सूरत की संधि को मान्य किया

4) तालेगांव का युद्ध (1779) :- मराठों ने अंग्रेजी कर्नल कोकबर्न को हराया

⇩

परिणाम - अंग्रेजों की पराजय व अपमानजनक बड़गांव की संधि

⇩

- अंग्रेजों ने समस्त विजित प्रदेश मराठों को लौटा दिए तथा राघोबा का पक्ष लेना बंद कर दिया
- सिंधिया को भड़ोंच के राजस्व का कुछ हिस्सा देना स्वीकार किया गया
- वारेन हेस्टिंग्स इस अपमान को आसानी से सहन नहीं कर सका

2) Course of the War

1) **Battle of the Ara (1775) :-** English Colonel Kenting v. Army of Poona under the Treaty of Surat. In this Poona was partially defeated.

2) **Treaty of Purandar (1776) :-** The Calcutta Council invalidated the Surat treaty and made a treaty of Purandar with the Poona court -

- Peace between the British and the Marathas
- The company will not favor Raghunathrao
- British got Salsette and Bassein
- Poona government will provide 12 lakh rupees to the British for war expenses
- Poona court will give ₹25000 per month to Raghunath Rao as pension and he will go to Gujarat

3) Due to the American freedom struggle and French proximity to the Marathas, the British broke the Treaty of Purandar and again accepted the Treaty of Surat.

4) **Battle of Talegaon (1779) :-** - Marathas defeated English Colonel Cockburn

↓

Result - The defeat of the British and the humiliating Treaty of Badgaon

↓

- The British returned all the conquered territories to the Marathas and stopped favoring Raghoba.
- Compony will give some part of the revenue of Bhorach to Scindia.
- Warren Hastings could not easily bear this humiliation

‡ किंतु इसी समय ज्ञात हुआ कि हैदर अली और निजाम भी अंग्रेजों के विरुद्ध मराठों की सहायता के लिए आ रहे हैं अतः इन खतरों के बीच अंग्रेजों ने महादजी सिंधिया की मध्यस्थता में सालाबाई की संधि हुई

5) सीपरी का युद्ध (1780) :-

- वारेन हेस्टिंग्स ने एक अन्य सेना पोफाम के नेतृत्व में भेज दी थी उसने अगस्त 1780 में ग्वालियर पर अधिकार कर लिया
- कैमक के नेतृत्व में एक अंग्रेजी सेना ने सिंधिया को सीपरी (आधुनिक शिवपुरी) के युद्ध में हराया
- इन पराजय से सिंधिया घबरा गया उसने अंग्रेजों से संधि वार्ता आरंभ कर दी और पूना दरबार तथा अंग्रेजों के बीच मध्यस्थता करने का भी वचन दिया
- 17 मई 1782 को सालाबाई की संधि हुई और युद्ध बंद हो गया

3) परिणाम का महत्व

सालाबाई की सन्धि - 17 मई 1782 को अंग्रेजों व मराठों के मध्य :-

- सालसेट तथा एलिफेंटा अंग्रेजों को प्राप्त हो गया।
- अंग्रेजों ने रघुनाथराव का पक्ष त्याग दिया और पेशवा की ओर से उसकी पेंशन की व्यवस्था की गयी।
- सिन्धिया को यमुना नदी के पश्चिम की अपनी समस्त भूमि पुनः प्राप्त हो गयी।
- बम्बई तथा दक्षिण में एक-दूसरे के जीते हुए भू-क्षेत्र वापस
- इस संधि के परिणामस्वरुप हैदरअली को अर्काट के नबाब से जीती गई भूमि छोड़नी पड़ी।

‡ But at the same time it was known that Hyder Ali and Nizam were also coming to help the Marathas against the British, so in the midst of these threats, the British signed the Treaty of Salabai in the mediation of Mahadji Scindia.

5) Battle of Sipri (1780) :-

- Warren Hastings sent another army under the leadership of Popham, he captured Gwalior in August 1780.
- An English army led by Camac defeated Scindia at the Battle of Sipri (modern Shivpuri)
- Scindia was frightened by these defeats, he started treaty with the British and also promised to mediate between the Poona court and the British.
- The Treaty of Salabai was signed on 17 May 1782 and the war ended.

3) Importance of result

Treaty of Salbai - between the British and the Marathas on 17 May 1782:-

- Salsette and Elephanta received by British.
- The British abandoned the side of Raghunathrao and his pension was arranged by the Peshwa.
- Scindia got all his land in west of the Yamuna river.
- Bombay and south territories areas was given to one another
- As a result of this treaty, Hyder Ali had to give up the lands he had won from the Nawab of Arcot.

सालाबाई की संधि का महत्व :-

- इस युद्ध और संधि से अंग्रेजों को भूमि और साम्राज्य की दृष्टि से कुछ विशेष लाभ प्राप्त ना हो सका क्योंकि उन्हें केवल सालसेट ही प्राप्त हुआ था जबकि इस युद्ध से उनकी आर्थिक कठिनाइयां बहुत बढ़ गयी थीं
- डोडवेल के अनुसार सालबाई की संधि भारत में अंग्रेजी प्रभुसत्ता के इतिहास को एक नवीन मोड़ देने वाली थी
- इससे मराठों और कंपनी में अगले 20 वर्षों तक शांति रही और भारतीय राजनीति में अंग्रेजों का प्रभाव बढ़ा

Significance of the Treaty of Salbai :-

- From this war and treaty, the British could not get any special advantage in land and empire because they got only Salsette, while their economic difficulties increased due to this war.
- According to Dodwell, the Treaty of Salbai was a turning point in the history of British sovereignty in India.
- This led to peace between the Marathas and the Company for the next 20 years and the influence of the British in Indian politics increased.

8.2) द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803-1805)

1) कारण

1) **लॉर्ड वेलेजली की साम्राज्यवादी नीतियां :-**
   - सहायक संधि व्यवस्था के तहत भारतीय राज्यों (निजाम, अवध) आदि पर नियंत्रण
   - 1801 में कर्नाटक, 1799 में तंजौर तथा 1800 में सूरत को कंपनी के राज्य में मिलाया

2) **मराठा साम्राज्य में योग्य नेतृत्वकर्ता का अभाव :-**
   - माधवराव द्वितीय के बाद अयोग्य बाजीराव द्वितीय (राघोबा का पुत्र) पेशवा बना
   - 1794 में महादजी सिंधिया की मृत्यु
   - 1795 में अहिल्याबाई होल्कर की मृत्यु
   - 1800 में नाना फडणवीस की मृत्यु

3) **मराठों की आंतरिक कलह व हृदयसर का युद्ध (1802) :-**
   - बाजीराव द्वितीय तथा दौलतराव सिंधिया द्वारा जसवंत राव होलकर के भाई बिठूजी जी की हत्या
   - हृदयसर के युद्ध में जसवंत राव ने पेशवा व सिंधिया की संयुक्त सेना को हराया
   - बाजीराव द्वितीय ने अंग्रेजों से बसीन (बेसीन) की संधि की

4) **बसीन की संधि (दिसंबर 1802) :-** जसवंतराव होल्कर से हृदयसर के युद्ध में हारने के बाद पेशवा बाजीराव द्वितीय तथा लार्ड वेलेजली के मध्य –
   - पेशवा अपनी रक्षा के लिए अपने राज्यों में कम्पनी की एक सहायक सेना रखेगा
   - सेना के खर्च के लिए 26 लाख रुपये की आय का अपना एक क्षेत्र कम्पनी के हवाले कर देगा।
   - पेशवा ने सूरत पर अपना दावा त्याग दिया।

8.2) Second Anglo-Maratha War (1803–1805)

1) Reasons

1) Imperialist Policies of Lord Wellesley :-

- Control over Indian states (Nizam, Oudh) etc. under subsidiary treaty system
- Annexed Karnataka in 1801, Tanjore in 1799 and Surat in 1800 in the Company's state.

2) Lack of qualified leader in Maratha Empire :-

- The incompetent Bajirao II (Raghoba's son) became Peshwa after Madhavrao II.
- Death of Mahadji Scindia in 1794
- Death of Ahilyabai Holkar in 1795
- Death of Nana Fadnavis in 1800

3) Maratha internal strife and Hridaysar's war (1802) :-

- murder of Bithuji, brother of Jaswant Rao Holkar by Bajirao II and Daulatrao Scindia
- Jaswant Rao defeated the combined army of Peshwa and Scindia in the battle of Hridaysar.
- Bajirao II made the treaty of Basin (Basin) with the British

4) Treaty of Basin (December 1802) :-

After defeating Jaswantrao Holkar at the Battle of Hridasar, between peshwa Bajirao II and Lord Wellesley -

- The Peshwa would keep a subsidiary army of the Company in his states for his defense.
- Will hand over an area of his income of 26 lakh rupees to the company for the expenditure of the army.
- The Peshwa relinquished his claim on Surat.

- पेशवा किसी यूरोपीय को अंग्रेजों की आज्ञा के बिना अपने राज्य में नहीं रखेगा।
- पेशवा भविष्य में किसी राज्य से अंग्रेजों की अनुमति के बिना युद्ध, सन्धि अथवा पत्र-व्यवहार नहीं करेगा।
- निजाम तथा गायकवाड़ के साथ अपने झगड़ों के निपटारे में वह अंग्रेजों की मध्यस्थता स्वीकार करेगा।

NOTE

- सिडनी ओवन :- कंपनी को अप्रत्यक्ष रूप से भारत का साम्राज्य मिला,
- मराठा संघ का प्रमुख नेता अंग्रेजों के अधीन हो गया, मराठा शक्ति की प्रतिष्ठा को भारी धक्का लगा। जिससे मराठा सरदार भी औपचारिक रूप से अंग्रेजों के अधीन थे।

5) बसीन की सन्धि के परिणामस्वरूप सिंधिया और भोंसले का अंग्रेजों के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा

2) युद्ध की प्रमुख घटनाएं

1) दक्षिण में लॉर्ड वेलेजली के भाई आर्थर वेलेजली ने कंपनी की सेनाओं का संचालन किया और उत्तर में जनरल लेक ने
2) आर्थर वेलेजली ने सिंधिया तथा भोंसले की संयुक्त सेनाओं को असायी (औरंगाबाद से 6 किमी उत्तर में) के युद्ध में परास्त
3) नवंबर में भोंसले की सेना की अरागांव (बुरहानपुर से लगभग 80 किलोमीटर पूर्व में) के युद्ध में पराजय हुई
4) जनरल लेक ने अगस्त 1803 में अलीगढ़ पर और सितंबर में दिल्ली पर अधिकार कर लिया
6) सबसे भीषण युद्ध अलवर के निकट लासवाड़ी में हुआ जिसमें सिंधिया की सेनाओं ने अद्भुत वीरता का परिचय दिया
7) सिंधिया तथा भोसले दोनों ने कंपनी से अलग-अलग संधिया कर ली

- Peshwa would not keep any European without the permission of British.
- The Peshwa would not enter into war, treaty or correspondence with any state in future without the permission of the British.
- He would accept the mediation of the British in settling his disputes with the Nizam and the Gaekwad.

NOTE

- Sydney Oven :- The company got the empire of India indirectly,
- Supreme leader of the Maratha confederacy fell under the British, the prestige of the Maratha power suffered a major setback. Due to which the Maratha Sardars were also fell under the British.

5) United Front of Scindia and Bhonsle against the British as a result of the Treaty of Basin

2) Course of the War

1) Lord Wellesley's brother Arthur Wellesley led the Company's forces in the south and General Lake in the north.
2) Arthur Wellesley defeated the combined armies of Scindia and Bhonsle in the Battle of Asai (6 km north of Aurangabad).
3) Bhonsle's army was defeated in the battle of Aragaon (about 80 km east of Burhanpur) in November.
4) General Lake captured Aligarh in August 1803, and Delhi in September
5) The most fierce battle took place at Laswadi near Alwar, in which the armies of Scindia showed amazing valor.
6) Both Scindia and Bhosale entered into separate treaties with the company.

3) युद्ध का परिणाम

मराठा पराजय

- भोंसले से देवगांव की संधि (17 दिसम्बर, 1803)
- सिंधिया से सुर्जी अर्जुनगांव की संधि (30 दिसंबर 1803)

भोंसले से देवगांव की संधि (17 दिसम्बर, 1803)

द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान 17 दिसम्बर, 1803 को रघुजी भोंसले एवं कम्पनी के बीच यह संधि हुई :-



- ♀ भोसले ने कटक एवं बालासोर छोड़ा
- ♀ मद्रास तथा बंगाल को प्रेसीडेसियों को मिलाने के लिए पूर्वी समुद्री किनारे को कम्पनी को सौंपा
- ♀ अपनी सेवा से सभी विदेशियों को निकाल देना।
- ♀ निजाम एवं पेशवा के साथ मतभेदों को सुलझाने के लिए अंग्रेजों की मध्यस्थता
- ♀ अपने दरबार में अंग्रेज रेजीडेण्ट रखना। (माउंट स्ट्राट एलफिन)

3)Result of war

Maratha defeat

- Treaty of Deogaon with Bhonsle (Dec 17, 1803)
- Treaty of Surji-Arjungaon with Scindia (30 Dec 1803)

Treaty of Deogaon with Bhonsle (December 17, 1803)

This treaty was signed between Raghuji Bhonsle and company on December 17, 1803, during the Second Anglo-Maratha War :-



- By this treaty the raja of Berar ceded Cuttack and Balasore in Orissa to the company, thus making British territory continuous between Calcutta and Madras .
- Expelling all foreigners from Bhonsle’s service.
- British mediation to resolve conflict with Nizam and Peshwa
- An English resident appointed in Bhosle's court. (Mount Strait Elfin

सिंधिया से सुर्जी अर्जुनगांव की संधि (30 दिसंबर 1803)

द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान 30 दिसंबर 1803 को दौलतराव सिंधिया एवं कम्पनी के बीच यह संधि हुई :-

- गंगा और यमुना नदी के बीच की अपनी समस्त भूमि तथा जयपुर, जोधपुर और गोहद के उत्तर की सम्पूर्ण भूमि अंग्रेजों को दे दी
- अहमदनगर, भड़ौंच, अजन्ता तथा गोदावरी नदी के बीच की समस्त भूमि अंग्रेजों को दे दी;
- मुगल बादशाह, पेशवा, गायकवाड़ और निजाम से अपने समस्त अधिकारों को वापस ले लिया
- किसी भी यूरोपियन, अमरीकन या अंग्रेजों के शत्रु-राज्य के व्यक्ति को अंग्रेजों की स्वीकृति के बिना अपनी सीमाओं में न रखने का वायदा
- एक अंग्रेज रेजीडेण्ट रखना स्वीकार किया। (प्रथम अंग्रेज रेजीडेण्ट मेजर माल्कम)
- बेसीन की सन्धि को स्वीकार कर लिया

NOTE

उपर्युक्त संधि के अतिरिक्त 27 फरवरी 1804ई को सिंधिया ने बुरहानपुर की सहायक संधि पर हस्ताक्षर किए जिसके अनुसार उसने अंग्रेजों से किसी भी युद्ध के अवसर पर सहायता पाने और उन्हें सहायता देने का आश्वासन प्राप्त किया तथा दिया

मराठा शक्ति और ईस्ट इंडिया कम्पनी के साथ संधि के स्थान का सही युग्म है – (IAS-2004)

पेशवा	– बसीन की संधि	1802 – बाजीराव-II
होल्कर	– राजघाट की संधि	1805 – यशवंतराव
भोंसले	– देवगांव की संधि	1803 – रघुजी
सिंधिया	– सुर्जी अर्जुन गांव की संधि	1803 – दौलतराव

मराठों के साथ की गई संधियों का सही क्रम है – (IAS-2002)





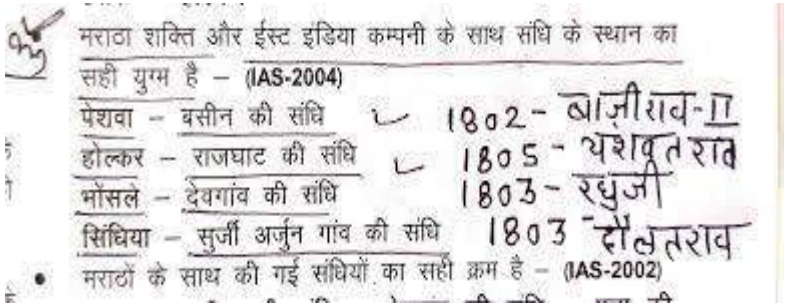
Treaty of Surji-Arjungaon (Dec. 30, 1803)

Treaty of Surji-Arjungaon, (Dec. 30, 1803), settlement between the Maratha chief Daulat Rao Sindhia and the British, the result of Lord Lake's campaign in upper India in the first phase of the Second Maratha War :-

- British got the territories of Rohtak, Ganga-Yamuna Doab, Gurgaon, Delhi Agra region, Broach, some districts in Gujarat, parts of Bundelkhand and Ahmadnagar fort.
- Mughal emperor Shah ʿĀlam II passed under British protection
- Promise not to keep any European, American or British enemy-state within its borders without the approval of the British
- Sindhia received a British resident (First English Resident Major Malcolm)
- Sindhia accepted the treaty of basin

NOTE

In addition to the above treaty, on 27 February 1804, Scindia signed the subsidiary treaty of Burhanpur, according to which he received and gave assurances of assistance and assistance from the British on the occasion of any war.


मराठा शक्ति और ईस्ट इंडिया कम्पनी के साथ संधि के स्थान का सही युग्म है – (IAS-2004)

पेशवा – बसीन की संधि — 1802 – बाजीराव-II

होल्कर – राजघाट की संधि — 1805 – यशवंतराव

भोंसले – देवगांव की संधि — 1803 – रघुजी

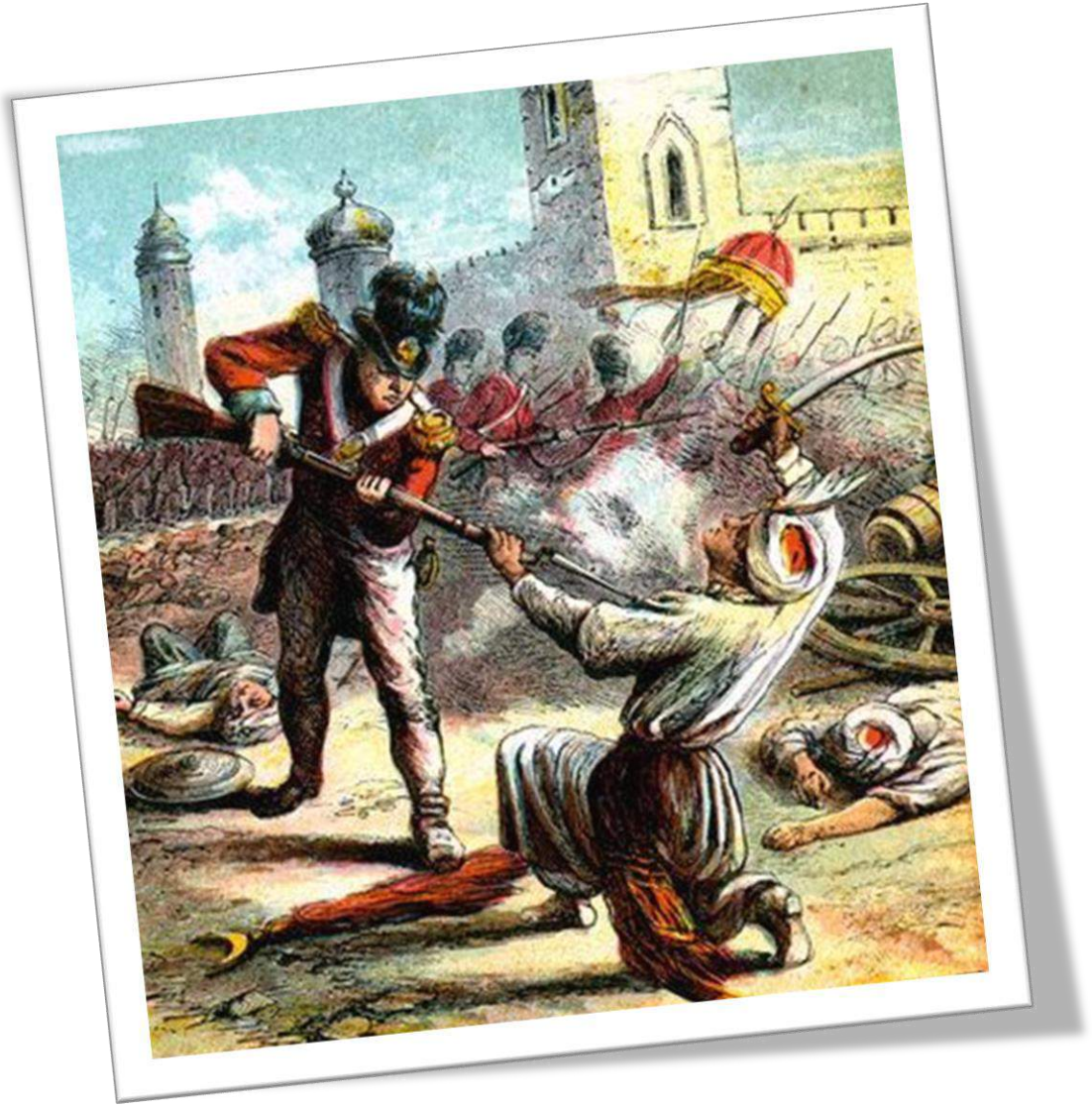
सिंधिया – सुर्जी अर्जुन गांव की संधि — 1803 दौलतराव

मराठों के साथ की गई संधियों का सही क्रम है – (IAS-2002)



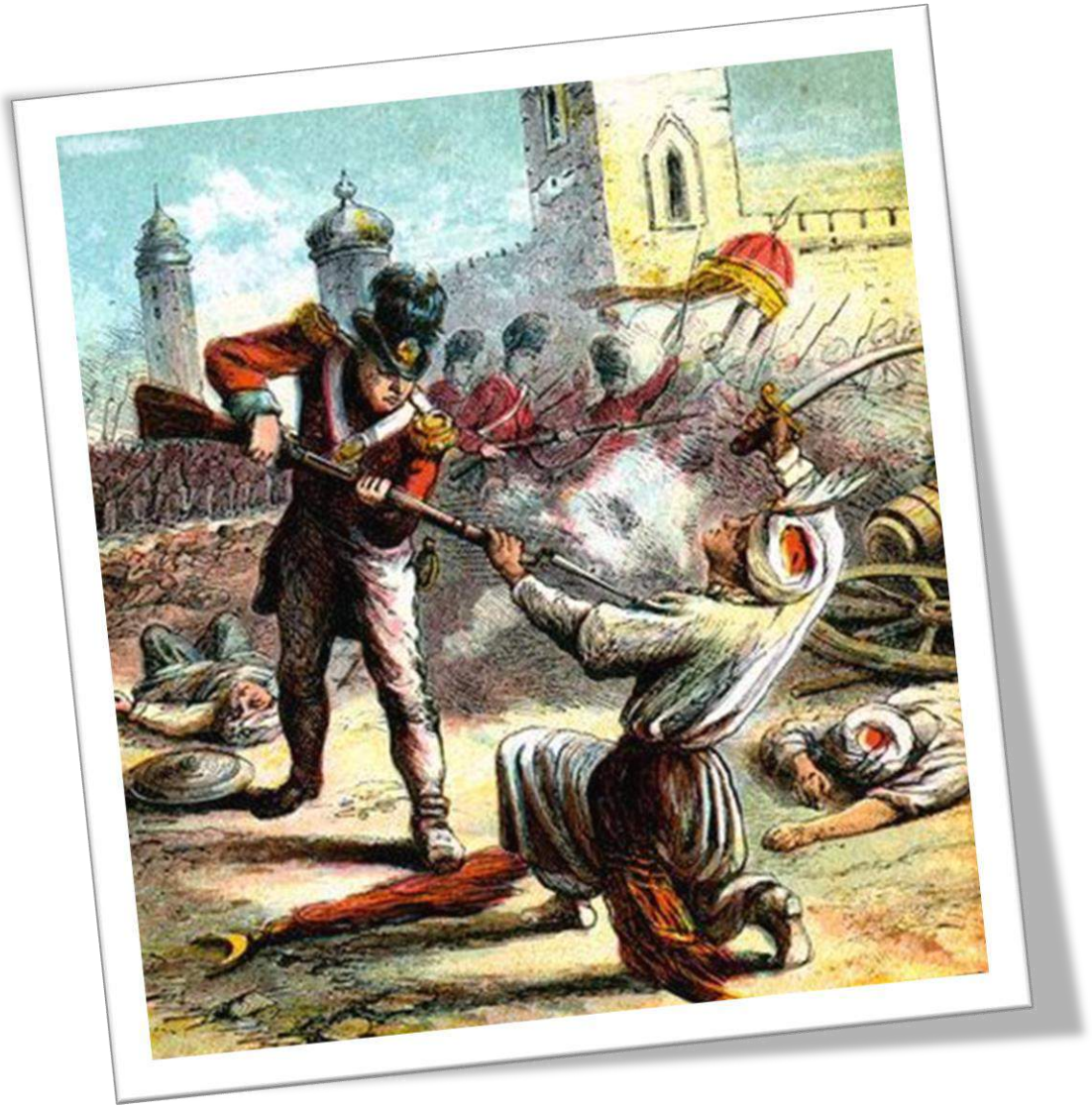
4) युद्ध का महत्व

1) द्वितीय अंग्रेज मराठा युद्ध ने कंपनी को सचमुच भारत की सर्वोच्च सत्ता बना दिया
2) उत्तर भारत की दो प्रमुख नगर आगरा और दिल्ली, कंपनी के अधिकार में आ गए
3) मद्रास और बंगाल के प्रदेशों के बीच संपर्क स्थापित हो गया
4) वेलेजली :- अंग्रेज अब पूर्णता भारत के स्वामी हो और हमारी शक्ति को कोई नियंत्रित नहीं कर सकता शर्त यह है कि हम उसके स्थायित्व के लिए समुचित प्रयत्न करते रहें
5) इस युद्ध ने सभी समस्याओं का समाधान नहीं कर दिया था मराठा सरदारों ने पराजय स्वीकार नहीं की और उनके तथा कम्पनी के बीच एक बार पुनः टक्कर हुई



4) Importance of War

1) The Second Anglo-Maratha War made the Company supreme authority of India.
2) Agra and Delhi, the two major cities of North India, came under the control of the Company.
3) Seamless connectivity established between the Madras and Bengal
4) Lord Wellesley :- The British are now the masters of India completely and no one can control our power, the condition is that we keep on making proper efforts for its stability.
5) This war did not solve all the problems, the Maratha chieftains did not accept defeat and once again there was a confrontation between them and the company.



क्र.सं.	क्षेत्रीय शक्तियाँ	संधि	वर्ष	महत्वपूर्ण बिंदु
1.	भोसले	देवगाँव की संधि	1803 ई.	अंग्रेजों को कटक तथा वर्धा नदी का पश्चिमी भाग प्राप्त हुआ।
2.	सिंधिया	सुर्जीअर्जन गाँव की संधि	1803 ई.	गंगा यमुना के दोआब प्रदेश, राजस्थान के कुछ क्षेत्र, अहमदनगर का दुर्ग, भड़ौच, गोदावरी और अजंता घाट का क्षेत्र अंग्रेजों को प्राप्त हुआ।
3.	होल्कर	राजपुरघाट की संधि	1805 ई.	चम्बल नदी के उत्तरी प्रदेश और बुंदेलखंड का क्षेत्र अंग्रेजों को प्राप्त हुआ।

S.N	Regional powers	Treaty	Year	Important points
1.	Bhosle	Treaty of Devgaon	1803	The British got Cuttack and the western part of the Wardha river.
2.	Scindia	Treaty of surji arjan	1803	The Doab region of Ganga Yamuna, some areas of Rajasthan, the fort of Ahmednagar, Bharuch, Godavari and the area of Ajanta Ghat were received by the British.
3.	Holkar	Treaty of Rajpurghat	1805	The territory of the northern region of Chambal river and Bundelkhand was given to the British.

8.3) तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध (1817-1818)

1) कारण

1) लार्ड मोरिया / लार्ड हेस्टिंग्स की साम्राज्यवादी नीतियां
2) पिंडारियों व पठानों द्वारा कम्पनी की लूट मार
3) मराठों सरदारों पर थोपी गई अपमानजनक संधियां :-
   - सिंधिया के साथ 5 नवंबर 1817 में ग्वालियर की संधि की गई, जिसके अनुसार उसने पिंडारियों को कुचलने में अंग्रेजों के समर्थन का वादा किया और राजपूत राज्यों पर से अपना प्रभाव हटाया
   - पेशवा के साथ 13 जून 1817 ई में पूना की संधि की गई जिसके अनुसार पेशवा ने मराठा संघ की अध्यक्षता त्याग दी और कुछ सामरिक महत्व के क्षेत्र अंग्रेजों को दे दिए
   - 27 मई 1816 में नागपुर के भोसले ने सहायक संधि स्वीकार कर ली

पिंडारी

- पिंडारी मराठा सेना में अवैतनिक सैनिकों के रूप में अपनी सेवा देते थे। ये लूटमार करने वाले दलों के रूप में होते थे जिनकी नियुक्ति बाजीराव-प्रथम के समय शुरू हुई थी
- पानीपत के युद्ध में मराठों की पराजय के बाद ये सिंधिया तथा होल्कर की सेना में थे, इनके प्रमुख नेता वासिल मुहम्मद, हीरू, चीतू, अमीर खां, करीम खां आदि थे।
- तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान लॉर्ड हेस्टिंग्स के द्वारा थॉमस हिसलोप की सेना के नेतृत्व में पिंडारियों का दमन किया गया।

8.3) Third Anglo-Maratha War (1817-1818)

1) Reasons

1) Imperial Policies of Lord Morea / Lord Hastings
2) Company looted by Pindaris and Pathans
3) humiliating treaties imposed on Maratha sardars :-
   - The Treaty of Gwalior was signed with Scindia on 5 November 1817, according to which he promised the support of the British in crushing the Pindaris and removed his influence over the Rajput states.
   - The Treaty of Poona was made with the Peshwa on 13 June 1817, according to which the Peshwa relinquished the presidency of the Maratha Union and gave some strategic areas to the British.
   - On 27 May 1816, the Bhosale of Nagpur accepted the subsidiary treaty.

Pindari

- Pindari served in the Maratha army as unpaid soldiers. These were in the form of plundering parties whose appointment started during the time of Bajirao-I.
- After the defeat of the Marathas in the battle of Panipat, they were in the army of Scindia and Holkar, their main leaders were Vasil Muhammad, Hiru, Cheetu, Amir Khan, Karim Khan etc.
- During the Third Anglo-Maratha War the Pindaris were suppressed by Lord Hastings under the leadership of Thomas Hislop's army.

पठान

- इसी प्रकार का एक झुण्ड पठानों का था। उनके नेता अमीरखाँ और मुहम्मद शाहखाँ थे।
- पठानों के झुण्डों का रूप कुछ संगठित सेनाओं जैसा था और उनके पास अच्छे हथियार भी थे।
- उनका कार्यक्षेत्र राजस्थान तक सीमित था।
- 1799 ई. में अमीरखाँ जसवन्तराव होल्कर से जा मिला था और उसकी मृत्यु के बाद भी होल्कर राज्य की राजनीति पर उसका प्रभाव था।

2) युद्ध की प्रमुख घटनाएं व परिणाम

1) किरकी में पेशवा की, सीताबाल्दी में भोंसले की और महीदपुर में होल्कर की सेनाओं को हराकर अंग्रेजों ने मराठों की सैन्य शक्ति समाप्त कर दी

2) 6 जनवरी 1818 में होल्कर ने मंदसौर की संधि पर हस्ताक्षर किए जिससे उसने राजपूत राज्यों पर से अपना नियंत्रण समाप्त कर लिया तथा सहायक संधि स्वीकार कर लिया

3) पेशवा बाजीराव द्वितीय अभी लड़ता रहा लेकिन कोरेगांव (जनवरी 1818) और अष्टी (फरवरी 1818) की लड़ाईयों में हार जाने के बाद उसने 3 जून 1818 को सर जॉन मैल्कम के सामने आत्मसमर्पण कर दिया

4) अंग्रेजों ने पेशवा पद को ही समाप्त घोषित कर दिया और उसे ₹8लाख वार्षिक पेंशन दे कर कानपुर के निकट बिठूर में रहने दिया

5) सातारा को एक छोटा राज्य बना दिया गया और मराठों की संस्तुष्टि हेतु उसको शिवाजी के वंशज प्रताप सिंह के अधीन कर दिया गया

Pathan

- One such group was of the Pathans. Their leaders were Amir Khan and Muhammad Shah Khan.
- The groups of Pathans was somewhat like organized armies and had good weapons.
- Their areas was limited to Rajasthan.
- In 1799 AD, Amir Khan joined Jaswantrao Holkar and after his death, he had an influence on the politics of the Holkar state.

2) Major events and results of the war

1) The British ended the military power of the Marathas by defeating the Peshwas at Kirkee, the Bhonsles at Sitabaldi and the Holkars at Mahidpur.
2) On 6 January 1818, Holkar signed the Treaty of Mandsaur by which he ended his control over the Rajput states and accepted the subsidiary treaty.
3) Peshwa Bajirao II continued to fight but surrendered to Sir John Malcolm on 3 June 1818 after he was defeated in the battles of Koregaon (January 1818) and Ashti (February 1818).
4) The British abolished post of peshwa and allowed him to live in Bithoor near Kanpur by giving him an annual pension of ₹ 8 lakh.
5) Satara was made a small kingdom and for the satisfaction of the Marathas it was placed under Pratap Singh, a descendant of Shivaji.

9) मराठा असफलता के कारण

1) परस्पर विश्वास व एकता का अभाव :-

- मराठा एक संघ राज्य था नाम मात्र की एकता पेशवा माधवराव प्रथम के समय तक रही
- सिंधिया, होल्कर, भोंसले और गायकवाड जैसे मराठा सरदार स्वतंत्र शासक की तरह व्यवहार करने लगे

2) दोषपूर्ण आर्थिक संगठन :-

- मराठा साम्राज्य महाराष्ट्र के साधनों पर नहीं अपितु बलपूर्वक एकत्रित की गई धनराशि पर निर्भर था
- 1804 में दक्कन में एक भीषण अकाल पड़ा जिससे अनंत जानमाल की हानि हुई
- उद्योग तथा विदेशी व्यापार अभाव

3) कूटनीतिक असफलता :- भारत के मुसलमान शासकों, राजपूत और जाट शासकों को अपने साथ नहीं मिला सके बल्कि इसके विपरीत अपने दुर्व्यवहार से उन्होंने उन्हें असंतुष्ट ही किया

4) अन्य कारण :-

- चौथ व सरदेशमुखी से जनता व पड़ोसी राज्यों का असहयोग
- आधुनिक सैन्य व्यवस्था व प्रशिक्षण का अभाव
- जागीरदारी प्रथा
- राष्ट्रीयता की भावना का अभाव
- सुदृढ़ शासन व्यवस्था व केंद्रीयकरण का अभाव
- अंग्रेजों की श्रेष्ठता व आयोग्य नेतृत्व

9) Reasons for Maratha failure

1) lack of mutual trust and unity :-

- Maratha was a union state, nominal unity lasted till the time of Peshwa Madhavrao I.
- Maratha chieftains like Scindia, Holkar, Bhonsle and Gaikwad started behaving like independent rulers
- faulty economic organization :-
- The Maratha Empire did not depend on the resources of Maharashtra but on the money collected forcefully.
- In 1804, there was a severe famine in the Deccan causing loss of life and property.
- industry and foreign trade

3) diplomatic failure :- The Muslim rulers of India could not get the Rajput and Jat rulers with them, but on the contrary they dissatisfied them with their misbehavior.

4) Other reasons:-

- Chauth and Sardeshmukhi was not supported by neighbouring states and people
- Lack of modern military system and training
- jagirdari system
- lack of nationalism
- Lack of strong governance and centralization
- British superiority and incompetent leadership

युद्ध	अंग्रेज	कारण	परिणाम
प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775-82) पेशवा माधवराव – II	वॉरेन हेस्टिंग्स	1) पेशवा पद को लेकर मतभेद (माधवराव व रघुनाथ राव) 2) अंग्रेजों का वाणिज्यिक व राजनीतिक लाभ	1) 1782 - सालबाई की संधि (हेस्टिंग्स और फडणवीस) 2) 1775 - सूरत की संधि (रघुनाथ राव और अंग्रेज) 3) 1779 - वडगाँव की संधि (मराठा और अंग्रेज)
द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803-05) पेशवा बाजीराव II	लॉर्ड वैलेस्ली	1) पेशवा बाजीराव द्वितीय द्वारा अंग्रेजों के साथ बसीन की संधि (सहायक संधि) करना 2) नेपोलियन का उदय व फ्रांसीसी आक्रमण का भय	1) 1803 - भोसले - देवगांव की संधि 2) 1803 - सिंधिया - सुर्जीअर्जन गाँव की संधि 3) 1805 - होलकर - राजपुर घाट की संधि
तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध (1817-19) पेशवा बाजीराव द्वितीय	लॉर्ड हेस्टिंग्स	1) लॉर्ड हेस्टिंग्स के द्वारा पिंडारियों की शक्ति का दमन 2) पिंडारी पहले मराठा सेना का हिस्सा थे, जो स्वतंत्र रूप से लूटपाट करने लगे 3) सिंधिया (1817 - ग्वालियर की संधि) और होलकर (181 8- मंदसौर की संधि) के साथ अपमानजनक संधि	1) पेशवा बाजीराव द्वितीय को कीर्कि के युद्ध में परास्त करके पुणे पर अधिकार 2) भोंसले को सीताबर्डी और होलकर को महिदपुर में पराजित किया 3) मराठा संघ का विघटन

War	British	Reasons	Result
First Anglo-Maratha War (1775–82) Peshwa Madhavrao – II	Warren hastings	1) Conflict for the post of Peshwa (Madhavrao and Raghunath Rao) 2) Commercial and political advantage of the British	1) 1782 - Treaty of Salbai (Hastings and Fadnavis) 2) 1775 - Treaty of Surat (Raghunath Rao and the British) 3) 1779 - Treaty of Vadgaon (Maratha and British)
Second Anglo-Maratha War (1803-05) Peshwa Bajirao II	lord wellesley	1) Treaty of Basin with the British by Peshwa Bajirao II (subsidiary treaty) 2) Rise of Napoleon and Fear of the French	1) 1803 - Bhosale - Treaty of Deogaon 2) 1803 - Scindia - Treaty of Surjiarjan 3) 1805 - Holkar - Treaty of Rajpur Ghat
Third Anglo-Maratha War(1817-19) Peshwa Bajirao II	lord hastings	1) Suppression of Pindaris by Lord Hastings 2) Pindari was part of the Maratha army, who started looting independently 3) humiliating treaty with Scindia (1817 -	1) Possession of Pune by defeating Peshwa Bajirao II in the Battle of Kirki 2) Defeated Bhonsle at Sitabardi and Holkar at Mahidpur

5) सिंध में ब्रिटिश विस्तार (1843)

1. प्रथम आंग्ल अफगान युद्ध (1839- 42)

⬇

सिंध ने अंग्रेजों की मदद की

⬇

2. 1843 :- चार्ल्स नेपियर ने सिंध का विलय किया
3. इतिहासकारों और राजनीतिज्ञों ने इसे "निंदनीय" बताया
4. चार्ल्स नेपियर :- हमें सिंध को अपने अधीन करने का कोई अधिकार नहीं है किंतु फिर भी हम ऐसा करेंगे और यह एक बहुत लाभदायक उपयोगी एवं मानवता पूर्ण नीचता होगी



सिंध (1843)





5) British expansion in Sindh (1843)

1. First Anglo-Afghan War (1839- 42))

⬇

Sindh helped the British

⬇

2. 1843 :- Charles Napier annexed Sindh
3. Historians and politicians called it "reprehensible"
4. Charles Napier:- We have no right to subjugate Sindh but still we will do so and it will be a very beneficial useful and humane degrading.





Maull and Fox
LORD ELLENBOROUGH
Governor-General from 1841 to 1844, during the Afghan troubles.

सिंध (1843)



6) सिख साम्राज्य तथा पंजाब पर ब्रिटिश आधिपत्य



01 - सिख धर्म

02 - आरम्भिक सिख साम्राज्य

03 - महाराजा रणजीत सिंह

04 - महाराजा दलीप सिंह

महारानी जींद कौर - 05

पंजाब का महत्व - 06

प्रथम आंग्ल सिख युद्ध - 07

द्वितीय आंग्ल सिख युद्ध - 08

6) British occupation of Punjab and sikh empire

Second Anglo-Sikh War -08

First Anglo-Sikh War - 07

importance of punjab - 06

Maharani Jind Kaur - 05



01 - Sikhism

02 - Early Sikh Empire

03 - Maharaja Ranjit Singh

04 - Maharaja Dalip Singh

5.1) सिख धर्म || Sikhism

1) गुरु नानक देव (1469-1539)

2) गुरु अंगद (1504-1552)

3) गुरु अमरदास (1479-1574)

4) गुरु रामदास (1534-1581)

5) गुरु अर्जुन (1563-1606)

6) गुरु हरगोविंद (1595-1644)

7) गुरु हरराय (1630-1661)

8) गुरु हरकिशन (1656-1664)

9) गुरु तेग बहादुर (1621-1675)

10) गुरु गोविंद सिंह (1675-1699)



5.1) सिख धर्म || Sikhism

1) Guru Nanak Dev (1469-1539)
2) Guru Angad (1504-1552)
3) Guru Amardas (1479-1574)
4) Guru Ramdas (1534-1581)
5) Guru Arjun (1563-1606)
6) Guru Hargobind (1595-1644)
7) Guru Harrai (1630-1661)
8) Guru Harkishan (1656-1664)
9) Guru Tegh Bahadur (1621-1675)
10) Guru Gobind Singh (1675-1699)



1) गुरुनानक देव (1469-1539)

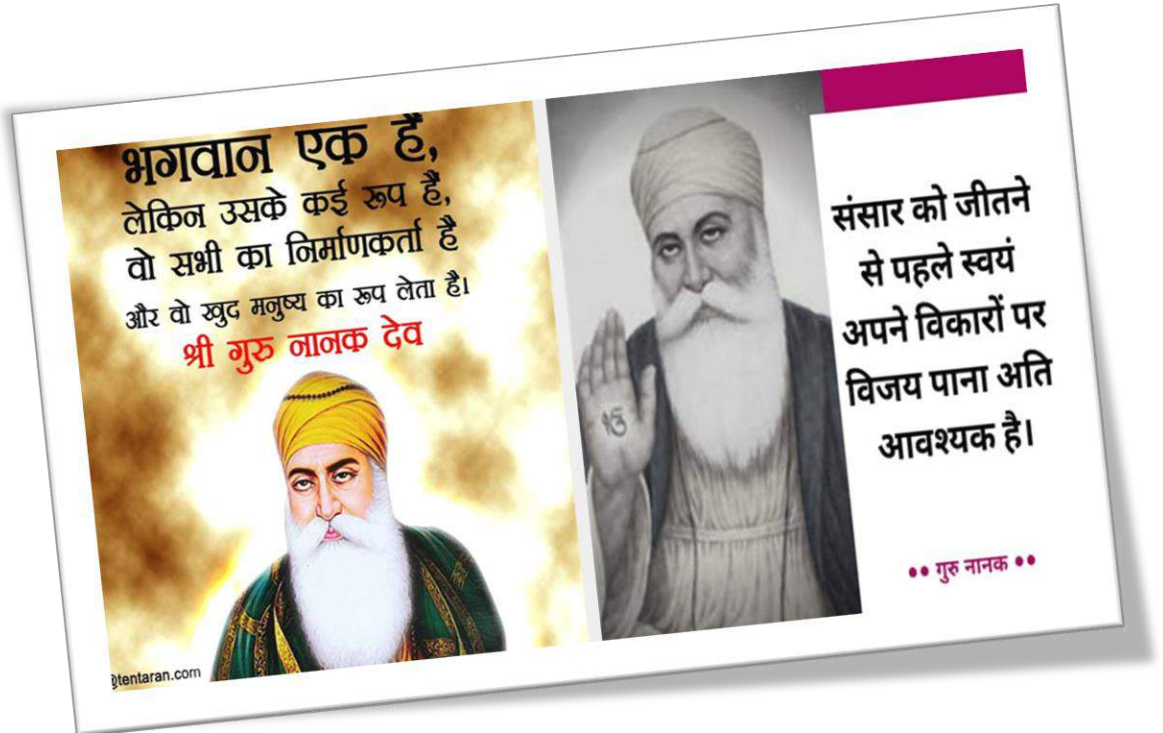
1) सिख धर्म के संस्थापक व प्रथम गुरु
2) जन्म :- 15 अप्रैल 1469 ननकाना साहिब, तलवंडी (पाकिस्तान)
3) माता व पिता :- तृप्ता देवी व कालू जी
4) पत्नी :- सुलक्षणा देवी
5) प्रभाव :- बाबा फरीद
6) मृत्यु :- 22 सितंबर 1539, करतारपुर (डेरा बाबा)
7) मुख्य कार्य :-
   - सिख धर्म की स्थापना
   - **उदासीस :-** देश की पांच बार यात्रा
   - ईश्वर को निराकार व अकाल पुरुष माना
   - पुनर्जन्म व कर्म का सिद्धान्त
   - कीर्तन द्वारा उपदेश
   - लंगर व्यवस्था के आरंभकर्ता
8) अन्य तथ्य :-
   - पानीपत के प्रथम युद्ध के प्रत्यक्षदर्शी
   - बाबर, हुमायूं, इब्राहिम लोदी, चैतन्य महाप्रभु व कबीरदास के समकालीन
   - **"काली बेईं"** नदी के किनारे ज्ञान प्राप्ति
   - इनके उपदेशों का संलग्न गुरु अर्जुन के आदिग्रन्थ के **जपुजी** में संकलित किया गया



1) Guru Nanak Dev (1469-1539)

1) Founder and First Guru of Sikhism
2) Born :- 15 April 1469 Nankana Sahib, Talwandi (Pakistan)
3) Mother and Father :- Tripta Devi and Kalu ji
4) Wife :- Sulakshana Devi
5) Effect :- Baba Farid
6) Death :- 22 September 1539, Kartarpur (Dera Baba)
7) Major work :-
   - Establishment of Sikhism
   - Udashish: Five times trip to the country
   - considered god as formless
   - theory of reincarnation and karma
   - sermon by kirtan
   - Langar system

8) Other facts:-
   - Witnessed of the First Battle of Panipat
   - Contemporaries of Babur, Humayun, Ibrahim Lodi, Chaitanya Mahaprabhu and Kabirdas
   - Attain knowledge on the banks of the river "Kali Bein"
   - His teachings were compiled in the Japuji which is the Adi grantha of Guru Arjuna's .



2) गुरु अंगद (1539-1552)

1) सिखों के दूसरे गुरु व गुरु नानक के शिष्य
2) मूलनाम :- लहना
3) मुख्य कार्य :-
   - **लंगर व्यवस्था** को स्थायी बनाया
   - **"गुरुमुखी"** लिपि का अविष्कार
   - खादुर में गुरु गद्दी का निर्माण
   - हुमायूं ने पंजाब में भेंट की

3) गुरु अमरदास (1552-1574)

1) सिखों के तीसरे गुरु
2) मुख्य कार्य :-
   - 22 गद्दियों की स्थापना की और प्रत्येक गद्दी पर महंत की नियुक्ति
   - सिखों के लिए नई विवाह पद्धति **"लवन"** को प्रारंभ किया
3) अकबर के समकालीन
4) अकबर स्वयं गोइंदवाल जाकर गुरु अमरदास से भेंट की और गुरु की पुत्री बीबी भानी को सम्मान स्वरुप कुछ गांव प्रदान किए थे

4) गुरु रामदास (1574-1581)

1) सिक्खों के चौथे गुरु तथा गुरु अमरदास के शिष्य व दामाद
2) अकबर ने इन्हें 500 बीघा भूमि प्रदान की, जहां गुरु रामदास द्वारा **अमृतसर की स्थापना** की गई
3) हरमिंदर साहिब **(स्वर्ण मंदिर)** का निर्माण प्रारंभ किया
4) इन्होंने अपने तीसरे पुत्र अर्जुन देव को अपना उत्तराधिकारी बना कर गुरु पद को पैतृक बना दिया





2) Guru Angad (1539-1552)

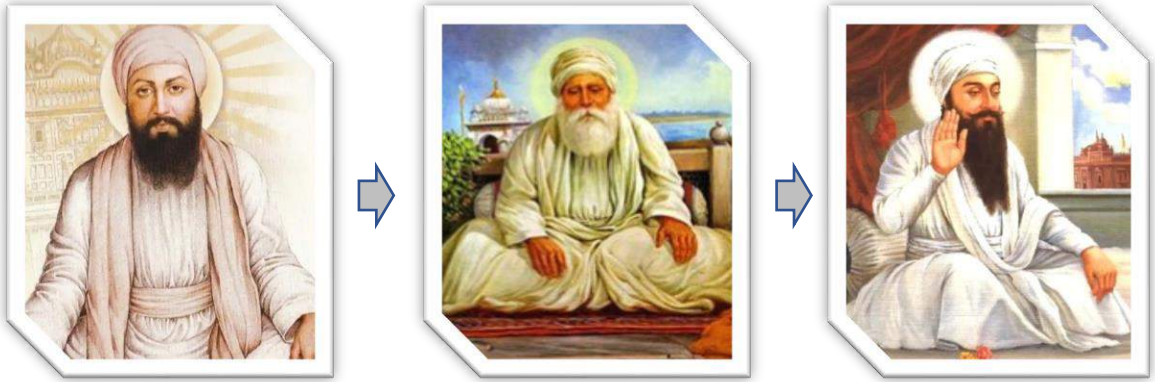
1) Second Guru of Sikhs and Disciple of Guru Nanak
2) Original Name :- Lahna
3) Major works :-
   - Made “Langar” system permanent
   - Invention of "Gurmukhi" script
   - Formation of Guru Gaddi in Khadur
   - Met Humayun in Punjab

3) Guru Amardas (1552-1574)

1) Third guru of sikhs
2) Major work :-
   - Established 22 Gaddis and appointed Mahant on each
   - Started the new marriage system "Lavan" for Sikhs
   - Akbar's contemporary
3) Akbar went to Goindwal and met Guru Amardas and had given some villages as a respect to Bibi Bhani, the daughter of the Guru.

4) Guru Ramdas (1574-1581)

1) The fourth guru of the Sikhs and the disciple and son-in-law of Guru Amardas
2) Akbar granted them 500 bighas of land, where Amritsar was founded by Guru Ramdas.
3) Started the construction of Harminder Sahib (Golden Temple)
4) He made the position of Guru patrimonial by making his third son Arjun Dev his successor.



5) गुरु अर्जुन देव (1581-1606)

1) पांचवे सिक्ख गुरु तथा गुरु रामदास के पुत्र

2) मुख्य कार्य :-

- 1589 :- अमृतसर सरोवर के मध्य हरमिंदर साहिब **(स्वर्ण मंदिर)** का निर्माण
- शिलान्यास :- कादरी संप्रदाय के **संत मियां मीर**
- तरनतारन, करतारपुर एवं गोविंदपुर नामक शहरों का बसाव
- निर्माण कार्य के निमित्त धन एकत्रित करने वाले अनुयायियों को **रामदासी** कहा जाता था कुछ लोगों उन्हें **मसंद** वा **मेउरा** की संज्ञा से अनुमोदित करते थे
- अर्जुनदेव अपने अनुयायियों से **अनिवार्य आध्यात्मिक कर** लेने लगे थे
- **गुरु ग्रंथ साहिब/आदिग्रंथ** का संपादन - इसमें 5 सिख गुरुओं के, 18 हिंदू संतो के उपदेशों का संग्रह किया गया
- सूफी संत बाबा फरीद, बौद्धमतावलंबी जयदेव, कबीरदास, रैदास, नामदेव एवं रामानंद जैसे संतों का उल्लेख आदि ग्रंथ में किया गया है

3) अकबर के समकालीन

4) जहांगीर के विद्रोही पुत्र खुसरो को अर्जुन देव ने आशीर्वाद तथा कुछ आर्थिक सहायता प्रदान की थी कारण स्वरुप मुगल शासक जहांगीर ने कठोर यात्रा देकर उन्हें 30 मई 1606 में बंदी गृह में मार डाला था





5) Guru Arjun Dev(1581-1606)

1) Fifth Sikh Guru and son of Guru Ramdas
2) Major work:-
   - 1589 :- Construction of Harminder Sahib (Golden Temple) in the middle of Amritsar Sarovar
   - Foundation stone :- Saint Mian Mir of Qadri sect
   - Settlement of cities named Tarn Taran, Kartarpur and Govindpur
   - The followers who collected money for construction work were called Ramdasi, some people approved them with the name of Masand and Meura.
   - Arjundev began to collect compulsory spiritual taxes from his followers.
   - Composition of the Guru Granth Sahib / Adi Granth - a collection of teachings of 5 Sikh Gurus, 18 Hindu saints
   - Saints like Sufi saint Baba Farid, Buddhist scholar Jaidev, Kabirdas, Raidas, Namdev and Ramanand have been mentioned in the Adi Granth.
3) Akbar's contemporary
4) Jahangir's rebellious son Khusrau was blessed by Arjun Dev and given some financial assistance, due to which the Mughal ruler Jahangir had given a harsh journey and killed him in a prison on 30 May 1606.





6) गुरु हर गोविंद (1606-1644)

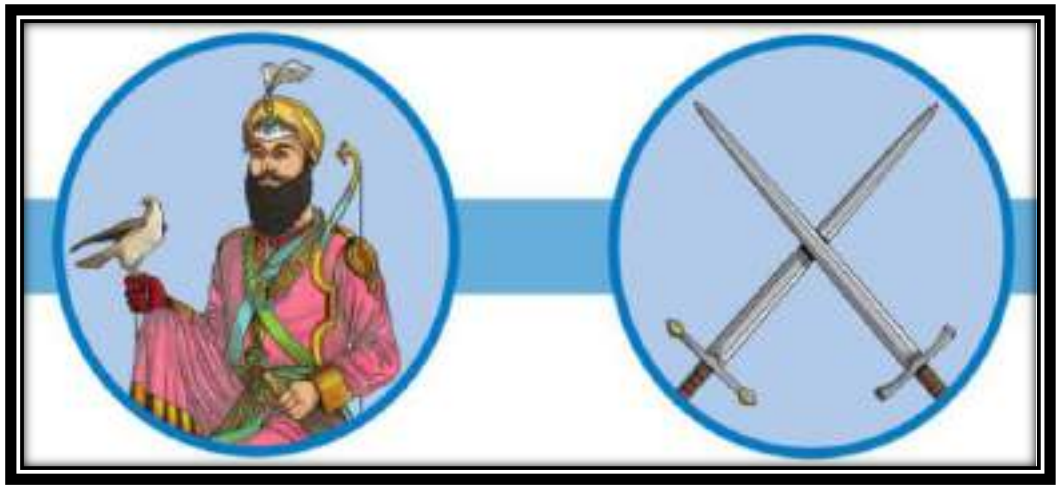
1) छटवें सिख गुरु
2) मुख्य कार्य :-
   - सिखों को **राजसत्ता के प्रतीकों** को धारण करने की व्यवस्था दी
   - सिखों को एक **लड़ाकू जाति** के रूप में परिवर्तित किया
   - अकाल तख्त का निर्माण
   - दरबार में **नगाड़ा** बजाने की व्यवस्था
   - अमृतसर की किलेबंदी
   - शिष्यों से धन के बदले शस्त्र एवं घोड़े प्राप्त किए
3) जहांगीर ने 2 वर्ष तक ग्वालियर के किले में कैद रखा था
4) कश्मीर में किरतपुर नामक नगर बसाया था और वहीं पर 1644 में उनकी मृत्यु भी हो गई

7) गुरु हरराय (1644-1661)

1) शाहजहां के पुत्रों के उत्तराधिकार में दारा शिकोह के पक्षधर थे
2) अपना उत्तराधिकारी अपने छोटे पुत्र हरकिशन को बनाया

8) गुरु हरकिशन (1661-64)

1) गुरु हरराय के छोटे पुत्र एवं रामराय के भाई थे
2) रामराय ने देहरादून में अपनी एक अलग गद्दी स्थापित की थी। उनके अनुनायियों को रामरायी कहा जाता था



6) Guru Har Govind (1606-1644)

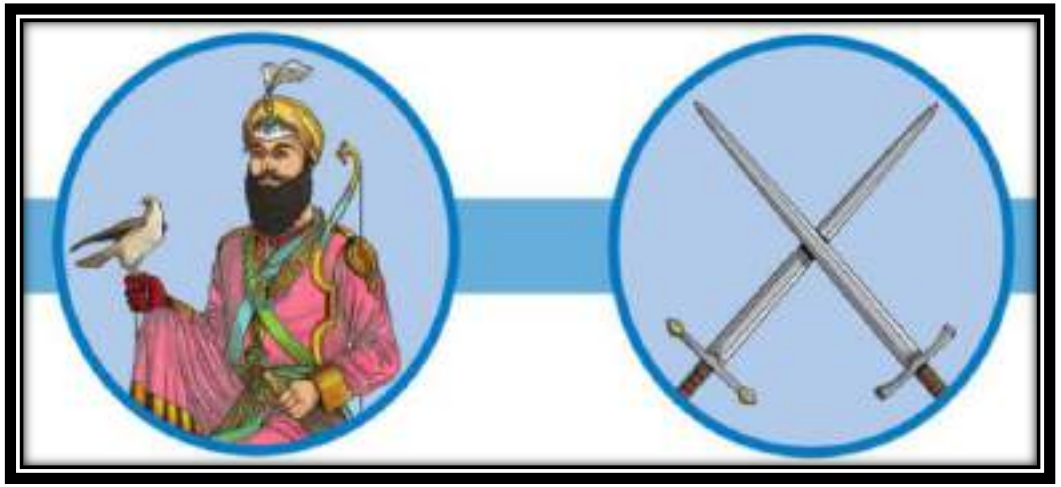
1) Sixth guru of sikhs
2) Major work:-
   - The Sikhs were given the arrangement to wear the symbols of the state.
   - Converted Sikhs into a Fighting Caste
   - Built Akal Takht
   - system of playing drums in the court
   - Fortifications of Amritsar
   - Received arms and horses from disciples in exchange for money
3) Jahangir imprisoned him in Gwalior fort for 2 years.
4) A city named Kiratpur was established in Kashmir and he died there in 1644.

7) Guru Harrai (1644-1661)

1) In favor of Dara Shikoh in the succession of the sons of Shah Jahan.
2) He made his younger son Harkishan his successor.

8) Guru Harkishan (1661-64)

1) He was the younger son of Guru Harrai and brother of Ram Rai.
2) Ram Rai had established a separate throne of his own in Dehradun. His followers were called Ramarayi.



9) गुरु तेगबहादुर
(हिन्द की चादर : 1664-1675)

1) सिक्खों के छटवें गुरु तथा गुरु हरगोविंद के पुत्र
2) मुख्य कार्य :-
   - असोम में गुरु टीला
   - अमृतसर के माखोवल में गद्दी
   - मुगलों के विरुद्ध करतारपुर का युद्ध
   - औरंगजेब की धार्मिक नीतियों का विरोध
   - आनन्दपुर की स्थापना
3) मृत्यु :- 1675 में औरंगजेब द्वारा हत्या

⇩

दिल्ली में शीशगंज गुरुद्वारा

10) गुरु गोविंद सिंह (1675-1708)

1) सिक्खों के दसवें व अंतिम गुरु तथा गुरु तेग बहादुर के पुत्र, इनके बाद गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु मान लिया गया
2) जन्म :- 22 दिसम्बर 1666, पटना (बिहार)
3) मुख्य कार्य :-
   - 1699 में **दल खालसा** की स्थापना
   - सिखों को सैनिक संप्रदाय **खालसा** में परिवर्तित
   - सिखों के लिए **5 ककार** - केश, कच्छा, कंघा, कड़ा व कृपाण को अनिवार्य कर दिया
   - **पाहुल** नामक एक त्यौहार
   - पाओन्टा (हिमाचल प्रदेश) नामक स्थान की स्थापना
   - **दसम ग्रंथ व कृष्ण अवतार** नामक ग्रंथों की रचना
     - आत्मकथा :- **विचित्रनाटक**
     - फारसी में **जफरनामा** (औरंगजेब से पत्रव्यवहार)

9) Guru Tegh Bahadur
(The Chadar of Hind: 1664-1675)

1) Sixth Guru of the Sikhs and the son of Guru Hargobind
2) Major work:-
   - Guru Tila in Assam
   - Gaddi at Makhowal in Amritsar
   - Battle of Kartarpur against the Mughals
   - Opposition to Aurangzeb's religious policies
   - Establishment of Anandpur
   - Death :- Assassination by Aurangzeb in 1675

⇩

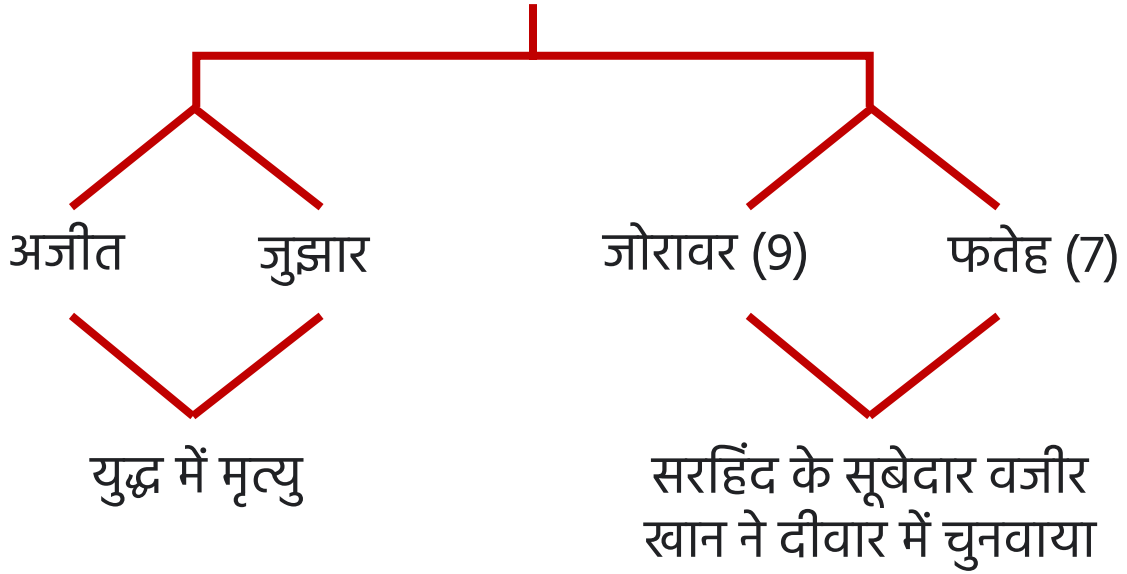
Sheeshganj Gurdwara in Delhi

10) Guru Gobind Singh(1675-1708)

1) The tenth and last Guru of the Sikhs and the son of Guru Tegh Bahadur, the Guru Granth Sahib was accepted as Guru after him.
2) Birth:- 22 December 1666, Patna (Bihar)
3) Major work :-
   - Establishment of Dal Khalsa in 1699
   - Converted sikh into military sect Khalsa
   - For Sikhs, 5 kakars - Kesh (uncut hair), Kara (a steel bracelet), Kanga (a wooden comb), Kaccha (cotton underwear), Kirpan (steel sword) were made mandatory.
   - Started festival called Pahul
   - Establishment of a place called Paonta (Himachal)

- लौहगढ़, फतेहगढ़, आनंदगढ़ और केशगढ़ के किले
- पुरुष सिखों को **सिंह** और महिला सिखों **कौर** नामक टाइटल धारण करने को कहा :- मैं चार वर्णों को सिंह बना दूंगा और मुगलों को भारत से मिटा दूंगा
- बहादुर शाह ने गुरु गोविंद सिंह को 5000 जात तथा 5000 सवार का मनसब प्रदान किया था
- 1708 में **नांदेड़ (महाराष्ट्र)** नामक स्थान पर एक पठान अजीम खान ने उनकी हत्या कर दी
- उनकी मृत्यु के बाद गुरु की परंपरा समाप्त हो गई तथा सिखों का नेतृत्व बंदा बहादुर ने संभाला

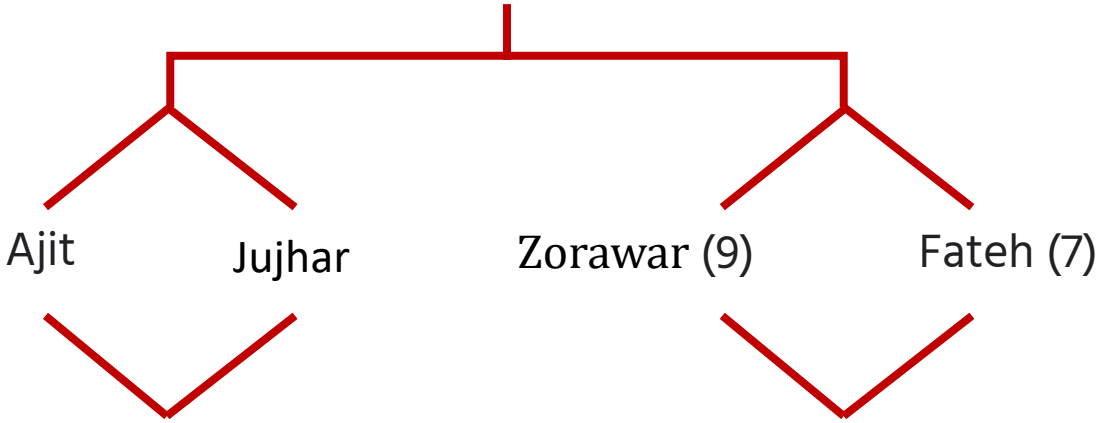
4) इनके चार बेटे थे





- The composition of texts named Dasam Granth and Krishna Avatar
  - Autobiography :- Vichitra Natak
  - Zafarnama in Persian (correspondence with Aurangzeb)
- Forts of Lohagarh, Fatehgarh, Anandgarh and Keshgarh
- Male Sikhs were asked to wear the title Singh and the female Sikhs Kaur :- I will make the four varnas into lions and wipeout the Mughals from India.
- Bahadur Shah had given the mansab of 5000 zat and 5000 sawar to Guru Gobind Singh.
- He was assassinated by a Pathan Azim Khan in 1708 at a place called Nanded (Maharashtra).
- After his death tradition of the Guru ended and the Sikh leadership was take over by Banda Bahadur.

4) They had four sons





बंदा बहादुर (1708-1716)

1) गुरु गोविंद सिंह के बाद सिख नेतृत्व
2) मूल नाम :- लक्ष्मण देव / माधव दास बैरागी
3) नांदेड़ में गुरु गोविंद सिंह से मुलाकात
4) राजधानी :- लौहगढ़
5) नारा :- फ़तहदर्शन
6) मुख्य कार्य :-
   - सिख राज्य की स्थापना
   - **कत्लगढ़ी** में हजार मुगलों की हत्या
   - गुरुनानक व गुरु गोविन्द सिंह के नाम के सिक्के
7) मृत्यु :- 1716 में गुरुदासपुर युद्ध के बाद फरुखसियर द्वारा हत्या

2) आरंभिक सिख साम्राज्य



बंदा बहादुर - सिख साम्राज्य की स्थापना

⬇

1716 में बंदा बहादुर की मृत्यु

⬇

पुनः सिख कमजोर

⬇

नादिरशाह आक्रमण (1739) व पानीपत तृतीय (1761) के बाद पुनः उत्थान

⬇

1748 में कर्पूर सिंह द्वारा दल खालसा का निर्माण

⬇

1773 में दल खालसा का 12 मिसलों में विभाजन

⬇

1) अहलूवालिया 2) निशानवाला 3) फुलकिया

4) रामगढ़िया 5) सुकरचकिया → संस्थापक - चरतसिंह

→ महाराजा रणजीत सिंह

⬇

महाराजा रणजीत सिंह द्वारा पुनः एकीकरण

Banda Bahadur (1708-1716)

1) Sikh leader after Guru Gobind Singh
2) Original name :- Laxman Dev / Madhav Das Bairagi
3) Meet Guru Gobind Singh in Nanded
4) Capital :- Lohagarh
5) Slogan:- Fatehdarshan
6) मुख्य कार्य :-
   - Establishment of Sikh Empire
   - Thousands of Mughals were killed in Katlagarhi
   - Coins in name of Guru Nanak and Guru Gobind Singh
   - Death :- Assassination by Farukhsiyar after the Gurdaspur war in 1716

2) Early Sikh Empire



Banda Bahadur - Establishment of Sikh Empire

↓

Banda Bahadur's death in 1716

↓

Sikh again got weaken

↓

Resurrection after Nadirshah invasion (1739) and Panipat III (1761)

↓

Formation of Dal Khalsa by Karpoor Singh in 1748

↓

The division of the Dal Khalsa into 12 Misls in 1773

↓

1) Ahluwalia 2) Nishanwalia 3) Phulkian

2) 4) Ramgarhia 5) Sukarchakia → Founder- CharatSingh

→ Maharaja Ranjit Singh

↓

Reunification by Maharaja Ranjit Singh

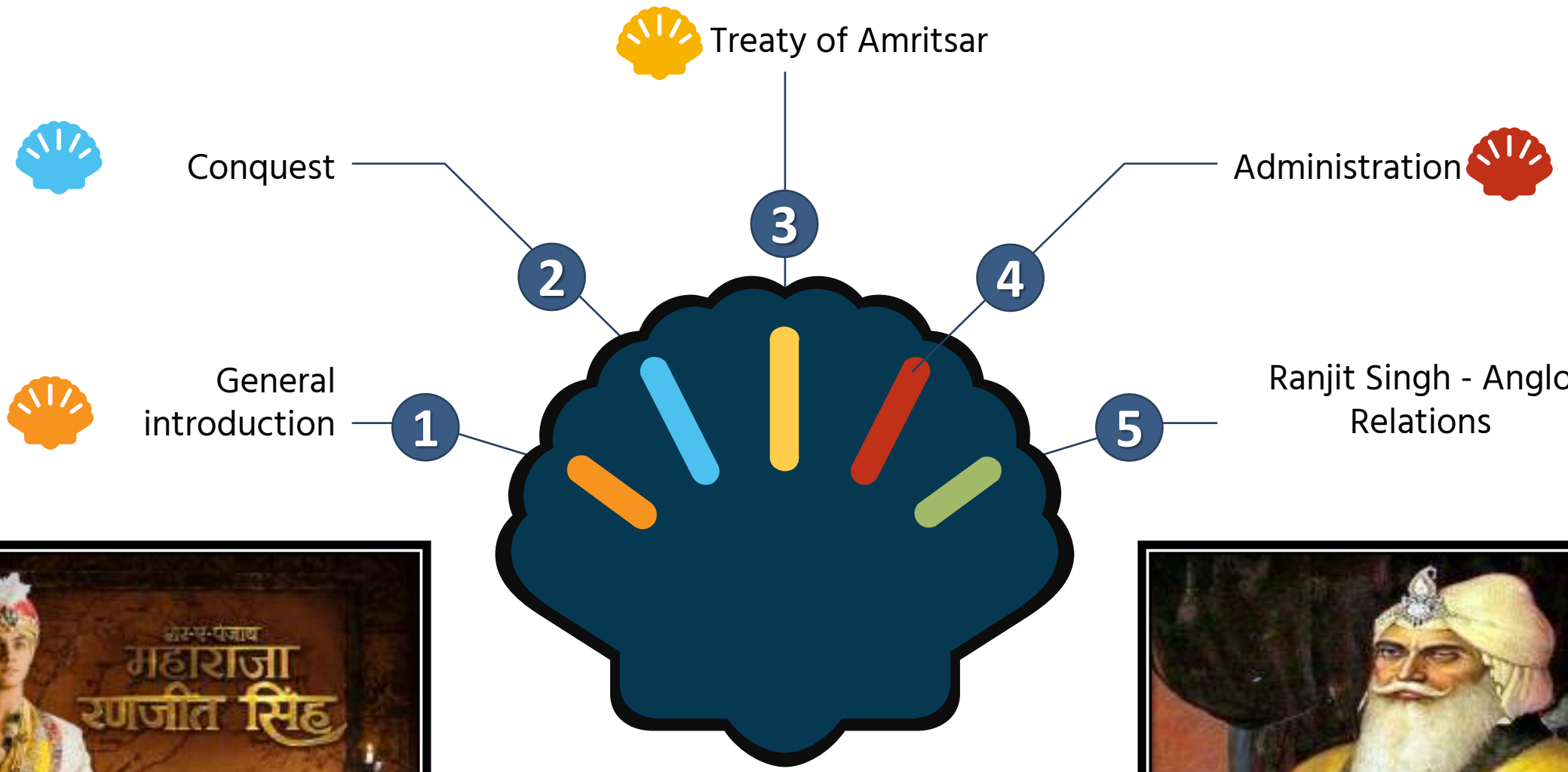
3) महाराजा रणजीत सिंह (1780-1839)

1. सामान्य परिचय
2. विजय अभियान
3. अमृतसर की संधि
4. शासन व्यवस्था
5. रणजीत सिंह - आंग्ल सम्बंध





3) Maharaja Ranjit Singh (1780-1839)







3.1) सामान्य परिचय

1) जन्म :- 13 नवंबर 1780 (सुकरचकिया मिसल)
2) पिता :- महासिंह
3) माता :- राजकौर
4) राजधानी :- लाहौर
5) धार्मिक राजधानी :- अमृतसर
6) मृत्यु :- 1839

3.2) विजय अभियान

1) 1798/99 :- अफगान शासक जमानशाह की 12 तोपे चिनाब नदी से निकालकर काबुल भेजी परिणामस्वरूप जमान ने लाहौर व राजा की उपाधि प्रदान की
2) 1805 :- रणजीत सिंह ने अमृतसर को भंगी मिसल से छींन लिया
3) 1807 :- अम्बाला, थानेश्वर, नारायणगढ़ और फिरोजपुर
4) 1808 :- फरीदकोट, मालेरकोटा तथा अम्बाला
5) 25 अप्रैल 1809 :- अंग्रेजों के साथ अमृतसर की संधि (फ्रांस का भय) - सतलज नदी को सीमा बनाया
6) 1811 – 1836 :- कश्मीर(सुपेर का युद्ध), अटक, डेराजाट, पेशावर, लद्दाख, शिकारपुर(सिंध का द्वार)
7) 1814 :- अफगान शासन शाहशुजा से कोहिनूर हीरा मिला
8) 1831 :- लॉर्ड विलियम बैंटिक की मध्यस्थता से सिंध व महाराजा के मध्य रोपड़ की संधि
9) 1838 :- प्रथम अफगान युद्ध



3.1) General introduction

1) Birth:- 13 November 1780 (Sukarchakia Misal)
2) Father:- MahaSingh
3) Mother:- Rajkaur
4) Capital :- Lahore
5) Religious capital :- Amritsar
6) Death :- 1839

3.2) Conquest

1) 1798/99 :- Sent 12 canons of Afghan ruler Zamanshah to Kabul which were drown into Chenab river, as a result Zaman gave Lahore and the title of Raja.
2) 1805 :- Ranjit Singh snatched Amritsar from Bhangi Misal
3) 1807 :- Ambala, Thaneshwar, Narayangarh and Firozpur
4) 1808 :- Faridkot, Malerkota and Ambala
5) 25 April 1809 :- Treaty of Amritsar with British (Fear of France) - Sutlej river decided the border
6) 1811–1836 :- Kashmir (War of Super), Attock, Derajat, Peshawar, Ladakh, Shikarpur (Gate of Sindh)
7) 1814 :- Got Kohinoor diamond from Afghan ruler Shah Shuja
8) 1831 :- Treaty of Ropar between Sindh and Maharaja with the mediation of Lord William Bentinck
9) 1838 :- First afghan war



Sikh Empire under Maharaja Ranjit Singh 1838AD



PUNJAB under Maharaja Ranjit Singh shaded Yellow
Area : 260,124 sq.km (100,436 sq.miles)
Map not to scale



NOTE

- अफगानिस्तान का शासक दोस्त मुहम्मद रणजीतसिंह से पेशावर छीनना चाहता था तथा इस कार्य में वह अंग्रेजों की सहायता का इच्छुक था। यद्यपि रूस के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकने के लिए दोस्त मुहम्मद से सन्धि करना अंग्रेजों के लिए अत्यन्त आवश्यक था किन्तु रणजीतसिंह को भी वे लोग क्रुद्ध करना नहीं चाहते थे।
- इसलिए दोस्त मुहम्मद को सहायता देना अंग्रेजों ने स्वीकार नहीं किया। अतः अब दोस्त मुहम्मद ने रूस से मित्रता स्थापित कर ली तो आकलैण्ड ने उसे पदच्युत करने के लिए षड्यन्त्र रचा तथा शाहशुजा को अफगानिस्तान का अमीर बनाने के लिए 1838 ई0 में एक त्रिपक्षीय सन्धि कर ली। इस सन्धि में महाराजा रणजीतसिंह भी सम्मिलित थे। इस सन्धि के पश्चात् ही प्रथम अफगान युद्ध प्रारम्भ हो गया।

3.3) अमृतसर की संधि (1809)

अंग्रेजों को उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत से नेपोलियन के आक्रमण का भय था इस कारण चार्ल्स मैटकॉर्प ने 1809 में रणजीत सिंह के साथ अमृतसर की संधि की :

1) सतलज नदी को रणजीत सिंह के राज्य की दक्षिणी सीमा मान लिया गया
2) लुधियाना में अंग्रेजी सेनाएं रखी गयीं
3) अंग्रेजों ने सतलज के उत्तर की ओर हस्तक्षेप नहीं करने का वायदा किया
4) रणजीत सिंह ने सतलज के पूर्व के राज्यों में हस्तक्षेप नहीं करने का वायदा किया

NOTE

- Dost Muhammad, the ruler of Afghanistan, wanted to snatch Peshawar from Ranjit Singh and was willing to help British . Although it was very important for the British to make a treaty with Dost Muhammad to stop the growing influence of Russia, they did not want to make Ranjit Singh anger.
- Therefore, the British did not accept the aid to Dost Muhammad. So now Dost Muhammad had established friendship with Russia, then Auckland conspired to depose him and made a tripartite treaty in 1838 AD to make Shah Shuja the amir of Afghanistan. Maharaja Ranjit Singh was also involved in this treaty. After this treaty that the First Afghan War started.

3.3) Treaty of Amritsar (1809)

The British feared Napoleon's invasion from the North-West Frontier Province, due to which Charles Metcalfe singed Treaty of Amritsar with Ranjit Singh in 1809 :-

1) Sutlej river was considered as the southern boundary of Ranjit Singh's kingdom.
2) English forces were placed in Ludhiana
3) The British promised not to interfere on the north side of the Sutlej.
4) Ranjit Singh promised not to interfere in the states before the Sutlej.

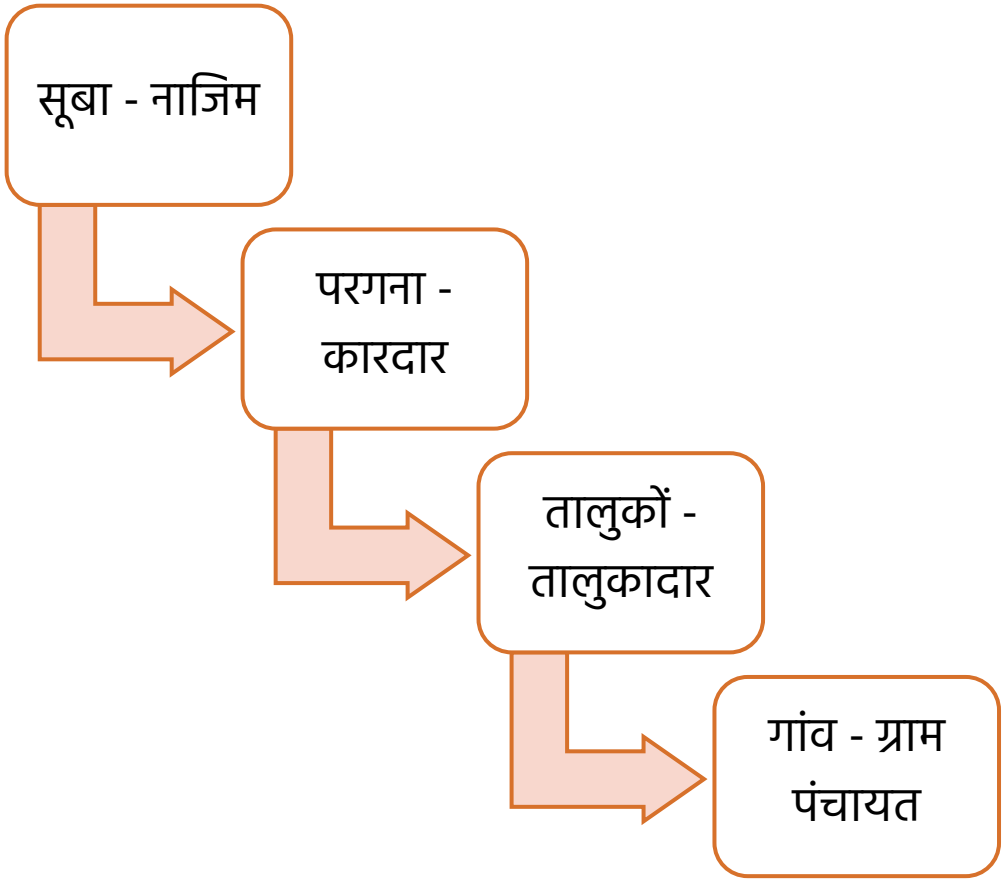
3.4) शासन व्यवस्था

केंद्रीय प्रशासन

1) एक उदार शासक
2) राज्य को **"सरकार ए खालसा"** कहा
3) सहायता हेतु 5 मंत्रियों की नियुक्ति
   - वजीर - ध्यानसिंह
   - वित्त - दीनानाथ व भगवानदास
   - विदेश - फकीर अजीमुद्दीन
4) 12 विभाग :- इसमें 4 विभाग प्रमुख थे –
   - दफ्तर-ए-आबवाब-उल-माल - भू-राजस्व
   - दफ्तर-ए-तोहिजात - राज परिवार के व्यय और व्यवस्था
   - दफ्तर-ए-मवाजात - कर्मचारियों के वेतन का विवरण
   - दफ्तर-ए-रोजनामचा - राजा के प्रतिदिन के खर्चों का विवरण

2) प्रांतीय व्यवस्था

संपूर्ण राज्य को चार प्रांतो में विभाजित किया था - लाहौर, मुल्तान, कश्मीर और पेशावर



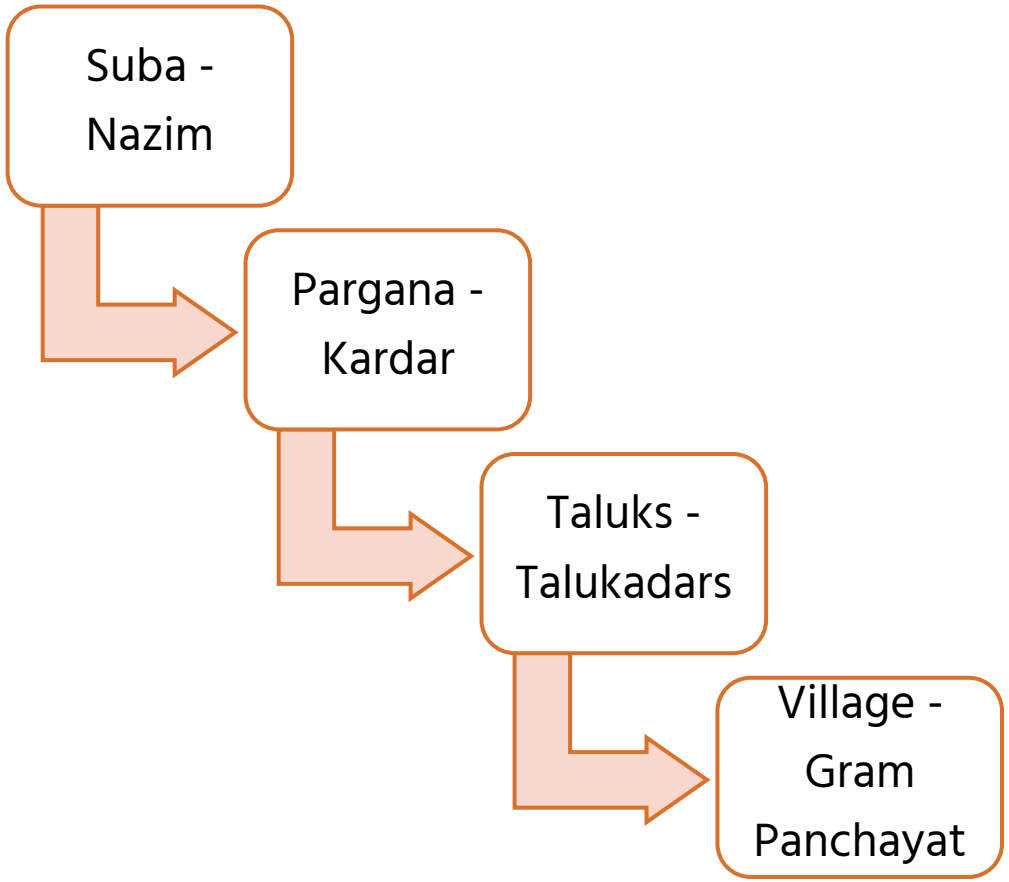
3.4) Administration System

Central administration

1) A benevolent ruler
2) The state was called "Sarkar-e-Khalsa"
3) 5 ministers for assistance to king
   - Wazir - Dhyan Singh
   - Finance - Dinanath and Bhagwandas
   - Foreign - Fakir Azimuddin
4) 12 Departments :-
   - Daft-e-Abwab-ul-Mal - Land Revenue
   - Daft-e-Tohijat - Expenses and Arrangements of the Royal Family
   - Daft-e-Mawazat - Salary Details of Employees
   - Daft-e-Roznamcha - Details of daily expenses of the king

2) Provincial system

The entire state was divided into four provinces - Lahore, Multan, Kashmir and Peshawar.

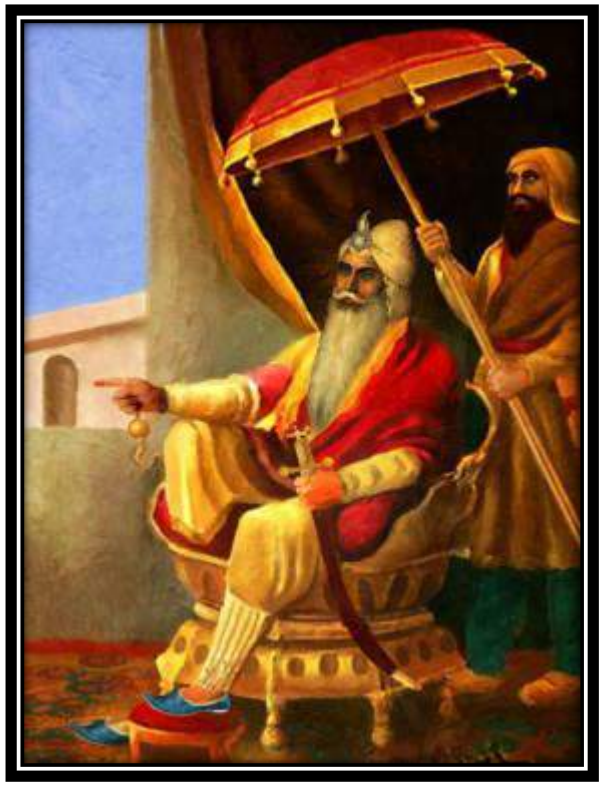


3) राजस्व

1) भूमिकर राज्य की आमदनी का प्रमुख स्त्रोत था
2) भूमिकर उत्पादन के 33 से लेकर 40% तक होता था
3) 1824-34 ई तक कनकूत व्यवस्था थी, जिसके तहत कर वसूली उपज को आधार बनाकर नकद ली जाती थी
4) आय के दो अन्य साधन सीमा शुल्क व आबकारी कर थे ।

4) सैन्य प्रशासन

1) यूरोपीय पद्धति पर आधारित सुप्रशिक्षित सेना का निर्माण
2) सेना :-
   - फ़ौज ए खास (नियमित सेना)
   - फौज ए बेकवायद (अनियमित सेना)
3) अश्वारोही सेना :- फ्रांसीसी सेनापति एलॉर्ड द्वारा प्रशिक्षित
4) पैदल सेना :- इटालियन सेनापति बंतुरा द्वारा प्रशिक्षण
5) तोपखाना :- फ्रांसीसी जनरल कोर्ट एवं कर्नल गार्डनर द्वारा संगठित

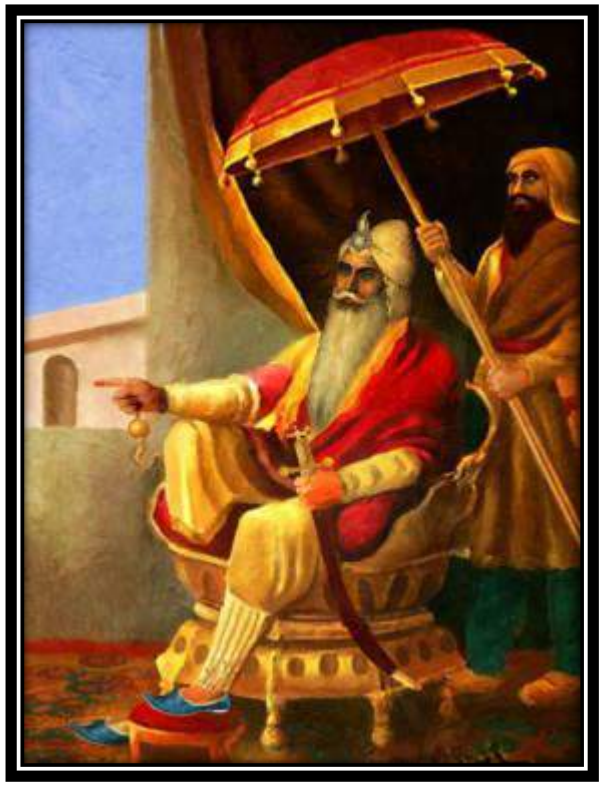


3) Revenue

1) Land tax was the main source of income of the state.
2) The land tax used to range from 33 to 40% of the production.
3) Till 1824-34 AD, there was Kankut system, under which cash was taken on the basis of tax collection yield.
4) Two other sources of income were customs duty and excise tax.

4) Military administration

1) Build a well-trained army based on the European method
2) Army :-
   - Fauj-e-Khas (Regular Army)
   - Fauj e Beqwaid (Irregular Army
3) Cavalry: Trained by French general lord
4) Infantry: Training by Italian General Bantura
5) Artillery: Organized by the French General Court and Colonel Gardner



5) रणजीत सिंह - आंग्ल सम्बंध

रणजीत सिंह ने अंग्रेजों से अच्छे संबंध बनाए रखने का प्रयत्न किया जबकि अंग्रेजों ने उनके प्रति मित्रता के भाव नहीं रखे । जिन्हें निम्न आधारों पर समझा जा सकता है :-

- ♀ रणजीत सिंह द्वारा अमृतसर की संधि का पालन
- ♀ आंग्ल नेपाल तथा आंग्ल बर्मा युद्ध में अंग्रेजों के विरुद्ध सहायता ना देना
- ♀ नागपुर के भोसले और होलकर को अंग्रेजों के विरुद्ध सहायता ना देना
- ♀ 1838 में शाह शुजा के साथ त्रिदलीय संधि करना
- ♀ सिंध पर अपने युद्ध अभियान को रोकना



जबकि अंग्रेजों ने फिरोजपुर पर अधिकार किया तथा वहाबी जाति को रणजीत सिंह के विरुद्ध सहायता दी। कुछ इतिहासकार रणजीतसिंह की इस नीति को यथार्थवादी और उचित बताते हैं जबकि कुछ दुर्बल और आदूरदर्शी।

उचित कहने वाले इतिहासकारों का मानना है की रणजीत सिंह को अंग्रेजों की शक्ति का आभास था जबकि आदूरदर्शी मानने वाले इतिहासकारों का कहना है की उसे नेपाल मराठा और अन्य भारतीय राजाओं से संधि करके अंग्रेजों को परास्त करने का प्रयास करना चाहिए था क्योंकि अवसर आने पर अंग्रेज पंजाब पर आक्रमण जरूर करते।

5) Ranjit Singh - Anglo Relations

Ranjit Singh tried to maintain good relations with the British while the British did not keep friendly feelings towards him. which can be understood on the basis of :-

- ♀ Compliance of the Treaty of Amritsar by Ranjit Singh
- ♀ Not giving aid against the British in the Anglo-Nepal and Anglo-Burma wars
- ♀ Not helping the Bhosales and Holkars of Nagpur against the British
- ♀ In 1838, a three-party treaty with Shah Shuja
- ♀ Stoped his war campaign on Sindh



Whereas the British occupied Firozpur and assisted the Wahabi community against Ranjit Singh. Some historians describe this policy of Ranjit Singh as realistic, while some called it weak and imprudent.

Historians who are right, believe that Ranjit Singh was aware of the power of the British, while the historians who believe nonvisionary say that he should have tried to defeat the British by making a treaty with Nepal Maratha and other Indian kings because when the opportunity came, the British Would definitely attack Punjab.

4) दिलीप सिंह (1843- 1849)

1) अल्प वयस्क शासक :- संरक्षिका (महारानी जिन्द कौर)

2) चिलयावाला का युद्ध (1849) :- लॉर्ड डलहौजी

3) प्रथम और द्वितीय आंग्ल सिख युद्ध

4) 1849 :- पंजाब पर शासन करने हेतु डलहौजी ने तीन लोगों की परिषद बनाई

↓

अध्यक्ष → सर हेनरी लॉरेंस

5) दिलीप सिंह → 50,000 पोंड की वार्षिक पेंशन

↓

ईसाई धर्म अपनाया

↓

कोहिनूर हीरा अंग्रेजों को

↓

फ्रांस में मृत्यु और इंग्लैंड में अंतिम संस्कार



4) Duleep Singh (1843- 1849)

1) Minor Ruler :- Patroness (maharani Jind Kaur)
2) Battle of Chillayawala (1849) :- Lord Dalhousie
3) First and Second Anglo-Sikh Wars
4) 1849: Dalhousie formed a council of three people to rule Punjab.

↓

Chairman → Sir Henry Lawrence

5) Dilip Singh → 50,000 pound annual pension

↓

Adopted christianity

↓

Give kohinoor Diamond to the British

↓

Death in France and Funeral in England



5) महारानी जिन्द कौर (1817 – 1 अगस्त 1863)

1) महारानी जिन्द कौर :- 1843 से 1846 तक सिख साम्राज्य की संरक्षिका थीं।

2) वे महाराजा रणजीत सिंह के सबसे छोटी महारानी थीं।

3) अन्तिम महाराजा दिलीप सिंह उनके ही पुत्र थे।

4) वे अपने सौन्दर्य, ऊर्जा तथा उद्देश्य के प्रति समर्पण के लिये प्रसिद्ध थीं।

इसलिये उन्हें 'रानी जिन्दा' भी कहते थे।

5) उनकी प्रसिद्धि का मुख्य कारण अंग्रेजों का उनसे डरना है।

6) अंग्रेज उनको पंजाब का मेस्सालिना (Messalina) कहा करते थे जिनके

विद्रोह को दबाना अत्यन्त कठिन था।



5) Maharani Jind Kaur (1817 – 1 August 1863)

1) Maharani Jind Kaur: - She was the patroness of the Sikh Empire from 1843 to 1846.

2) She was the youngest Maharani of Maharaja Ranjit Singh.

3) The last Maharaja Duleep Singh was his only son.

4) She was famous for her beauty, energy and devotion to purpose. That's why she was also called 'Queen Zinda'.

5) The main reason for his fame is the fear of the British from her.

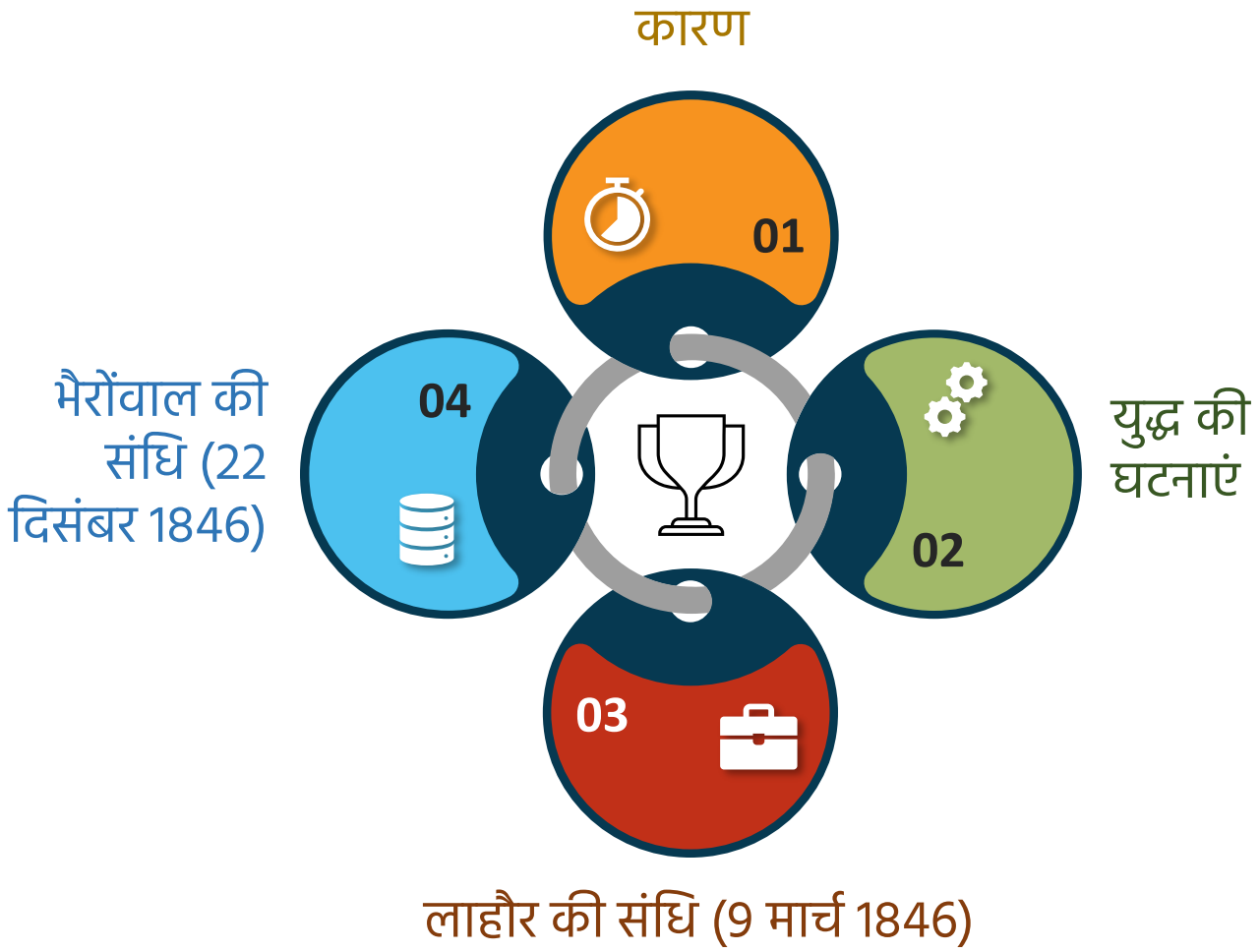
6) The British used to call her the Messalina of Punjab, whose rebellion was very difficult to suppress.



6) पंजाब का महत्व

1) रणजीत सिंह द्वारा पंजाब में शक्तिशाली राज्य की स्थापना
2) पश्चिम में इसकी सीमाएं दिल्ली तक पहुंच गई, अतः कंपनी के लिए पंजाब सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण
3) नेपोलियन ने यूरोप में ऑस्ट्रिया, हंगरी साम्राज्य तथा जर्मनी के प्रशा राज्य के विरुद्ध विजय अर्जित की और वह तुर्की तथा ईरान में होकर भारत पर आक्रमण करने की योजना बनाने लगा
4) अतः भारत में कंपनी के राज्य के लिए खतरा उत्पन्न हो गया इस प्रकार यूरोप की राजनीति ने भारत में ब्रिटिश सरकार की नीति को बहुत प्रभावित किया

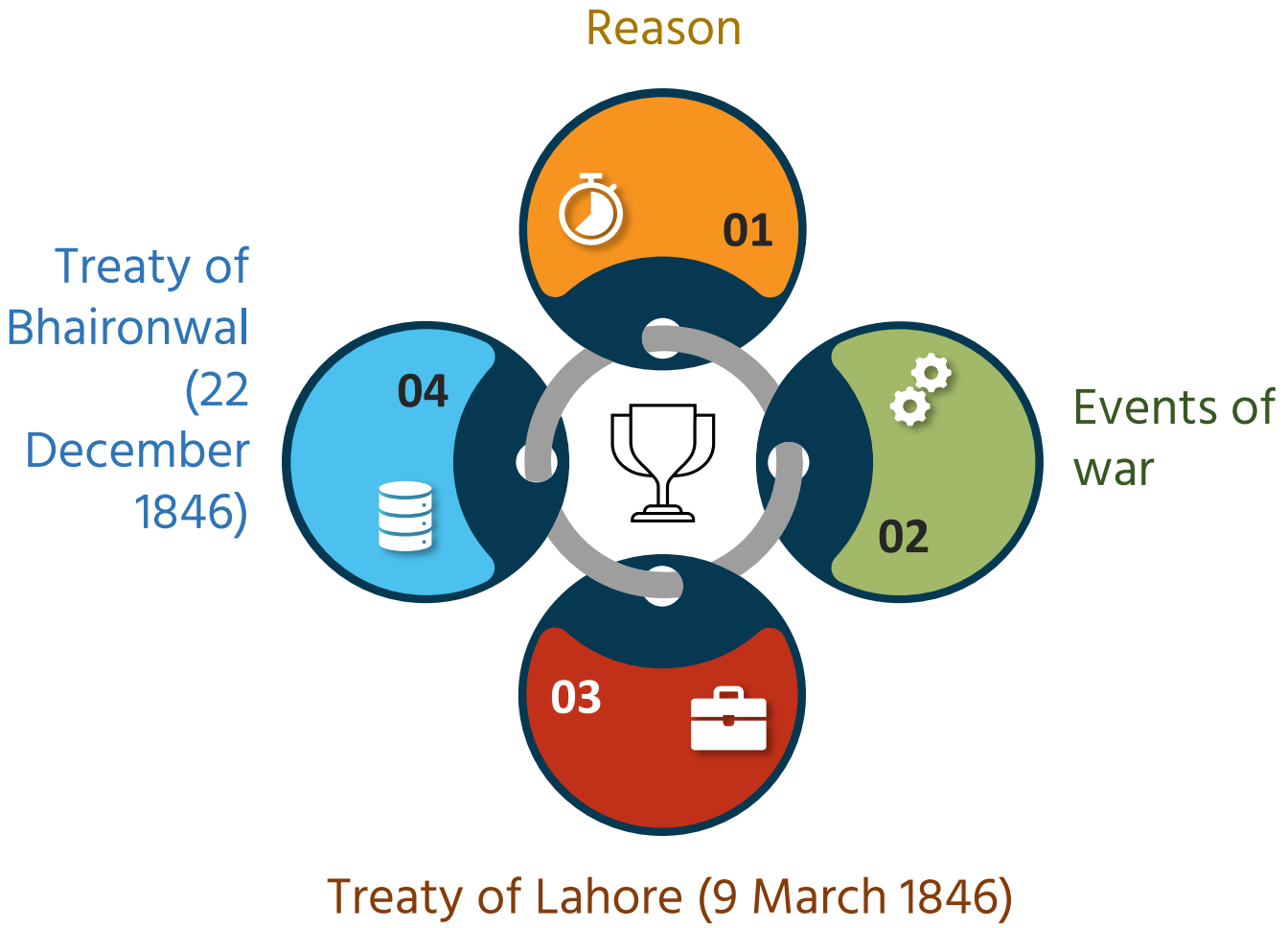
7) प्रथम आंग्ल सिख युद्ध (1845-46)



6) Importance of Punjab

1) Establishment of a powerful state in Punjab by Ranjit Singh
2) In the west its borders reached Delhi, so Punjab was strategically important for the Company.
3) Napoleon won a miraculous victory in Europe against the Austrian Hungarian Empire and the Prussian state of Germany and he started planning to attack India through Turkey and Iran.
4) Therefore, there was a threat to the Company's state in India, thus politics of Europe greatly influenced the policy of the British government in India.

7) प्रथम आंग्ल सिख युद्ध (1845-46)



1) कारण

1) अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीतियां
2) रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद पंजाब में राजनीतिक अराजकता - 1839 से 1845 के मध्य 4 राजा व 4 वजीर बदले
3) लॉर्ड हार्डिंग की उत्तेजनात्मक कार्यवाहियों के कारण सिखों द्वारा अमृतसर संधि का उल्लंघन करने सतलज नदी पार करके अंग्रेजों पर हमला
4) महारानी झिन्दन / जिंद कौर के दल तथा खालसा सेना के मध्य विवाद
5) सिख दरबार की आंतरिक कलह व सेना की अनुशासनहीनता

2) युद्ध की घटनाएं

1) 11 दिसंबर 1845 को सिख सेना ने सतलज को पार किया और अंग्रेज सेना से टक्कर ली
2) इस युद्ध में चार लड़ाइयां, मुदकी, फीरोजशाह, बद्दोवाल, आलीवाल ऐसी हुईं जो कि निर्णायक नहीं थीं।
3) केवल पांचवीं **सबराओं की लड़ाई (10 फरवरी, 1846)** निर्णायक सिद्ध हुई।
4) लालसिंह, और तेजासिंह के विश्वासघात के कारण ही सिक्खों की पूर्णतया हार हुई।
5) अंग्रेज सेना ने लाहौर पर अधिकार कर लिया और 9 मार्च, 1846 को सिक्खों को **'लाहौर की संधि'** पर हस्ताक्षर करने पर बाध्य किया



1)Reasons

1) Imperialist Policies of the British
2) Political chaos in Punjab after the death of Ranjit Singh - 4 kings and 4 viziers changed between 1839 and 1845
3) Due to the provoking actions of Lord Hardinge, the Sikhs attacked the British by crossing the Sutlej River in violation of the Amritsar Treaty.
4) Dispute between Maharani Jhindan / Jind Kaur's team and Khalsa army
5) The internal strife of the Sikh court and the indiscipline army

2)Coarse of war

1) On 11 December 1845, the Sikh army crossed the Sutlej between Harike and Kasur and clashed with the British army.
2) There were four battles in this war, Mudki, Ferozshah, Baddowal, Aliwal which were not decisive.
3) Only the fifth Battle of Sabraon (February 10, 1846) proved decisive.
4) It was because of the betrayal of Lal Singh and Teja Singh that the Sikhs were completely defeated.
5) The British army captured Lahore and forced the Sikhs to sign the 'Treaty of Lahore' on March 9, 1846.



3) लाहौर की संधि (9 मार्च 1846)

1) सतलज नदी के दक्षिणी ओर के सभी प्रदेशों पर अंग्रेजों का अधिकार मान लिया गया।
2) सिक्खों की सेना में कमी कर दी गई। उसमें केवल 20 हजार पैदल और 12,000 घुड़सवार रहने दिए गये
3) लाहौर-दरबार को **डेढ़ करोड़ रुपये अंग्रेजों** को हर्जाना देना था। चूँकि, दरबार के पास इतना रुपया न था अतएव अंग्रेजों ने **व्यास से सिन्ध तक का प्रदेश गुलाबसिंह को एक करोड़** रुपये में बेच दिया
4) लालसिंह को दलीपसिंह का मंत्री और जिन्दा (झिंदन) को उसकी संरक्षिका बनाया गया।

4) भैरोंवाल की संधि (22 दिसंबर 1846)

लॉर्ड हार्डिंग लाहौर की संधि से भी संतुष्ट नहीं हुआ क्योंकि संधि की एक शर्त यह थी कि **कंपनी की सेना पंजाब में दिसंबर 1846 के अंत** तक रहेगी। जैसे ही सेना को वापस बुलाने की तिथि निकट आई हार्डिंग ने उसको वहां स्थाई रूप से बनाए रखने के लिए कुचक्र आरम्भ कर दिए। रानी तथा लालसिंह पर विद्रोह भड़काने का आरोप लगाया गया लाहौर दरबार पर भैरोंवाल संधि थोप दी :

- ♀ लाहौर में ब्रिटिश सेना सितम्बर, 1854 ई. तक बनी रहेगी
- ♀ सेना के खर्च के लिए लाहौर दरवार **22 लाख रुपये वार्षिक** कम्पनी को देता रहेगा।
- ♀ हेनरी लॉरेन्स को रेजीडेण्ट नियुक्त किया गया।

इस सन्धि ने पंजाब में सिक्खों की शक्ति का अन्त कर दिया और अंग्रेज पंजाब के वास्तविक शासक बन गये।

3) Treaty of Lahore (9 March 1846))

1) British got right over all the territories in the southern of satluj.
2) The Sikh army was reduced. Only 20 thousand footmen and 12,000 cavalry were allowed in it.
3) The Lahore-Durbar had to pay a compensation of 1.5 crore rupees to the British. Since the court did not have that much money, the British sold the region from Beas to Sindh to Gulab Singh for one crore rupees.
4) Lal Singh was made the minister of Duleep Singh and Zinda (Jhindan) was made his guardian.

4) Treaty of Bhaironwal (22 December 1846)

Lord Hardinge was also not satisfied with the Treaty of Lahore as one conditions of the treaty was that the Company's forces would remain in the Punjab till the end of December 1846. As the date for the withdrawal of the army approached, Harding began a vicious circle to keep him there permanently. Rani and Lal Singh were accused of instigating rebellion, imposed Bhaironwal treaty on Lahore court :

- ♀ The British army would remain in Lahore till September 1854.
- ♀ For the expenses of the army, the Lahore Darwar would continue to give 22 lakh rupees annually to the company.
- ♀ Henry Lawrence was appointed resident.

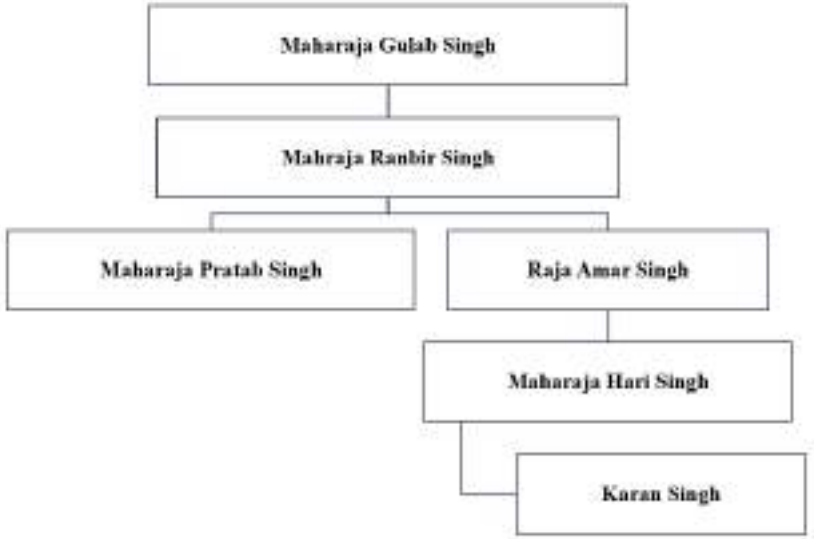
This treaty put an end to the power of the Sikhs in Punjab and the British became the real rulers of Punjab.

NOTE

अमृतसर की सन्धि



- गुलाब सिंह ने अपने राजा तथा देश के साथ विश्वासघात करके कंपनी की बहुमूल्य सहायता की थी इसलिए हार्डिंग में उसे पुरस्कृत किया
- **16 मार्च 1846** को अमृतसर में उसके साथ एक संधि की गई जिसके अनुसार **कश्मीर** उसे दे दिया गया
- गुलाब सिंह ने 1 करोड़ रुपए देने का वचन दिया, बाद में यह धनराशि कुछ कम कर दी गई
- अंग्रेजों की अनुमति के बिना किसी यूरोपीय या अमेरिकी को अपने यहां नौकर नहीं रखेगा
- धन के बदले गुलाब सिंह को कश्मीर का स्वतंत्र शासक बना देना दिलीप सिंह की पीठ में छुरा भोंकना था किंतु यह सब अंग्रेजों के राष्ट्रीय चरित्र के अनुरूप था

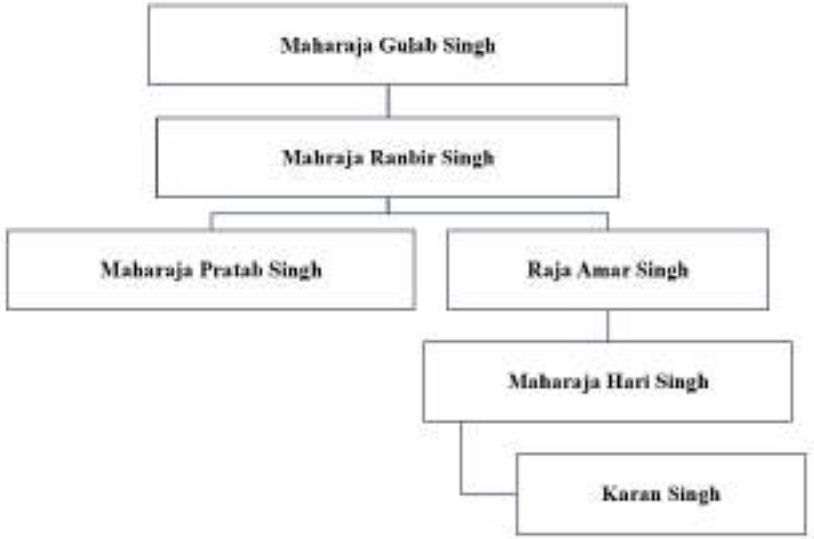


NOTE

Treaty of Amritsar

- Gulab Singh helped the company by betraying his king and country, so Hardinge rewarded him.
- A treaty was made with him at Amritsar on 16 March 1846 according to which Kashmir was given to him.
- Gulab Singh promised to give 1 crore rupees, later this amount was reduced a bit.
- shall not employ any European or American servant without the permission of the British.
- Making Gulab Singh an independent ruler of Kashmir in exchange of money was like stabbing back of Dilip Singh but all this was in accordance with national character of the British.





8) द्वितीय आंग्ल सिख युद्ध (1848-49)

1) कारण

3) युद्ध का परिणाम



2) युद्ध की घटनाएं

1) कारण

1) रानी झिन्दन पर देशद्रोह का आरोप, पेंशन में कमी तथा अपमान
2) विश्वासघाती गुलाब सिंह को कश्मीर सौंपना
3) लाहौर व भैरोवाल की अपमानजनक संधियां
4) अंग्रेजों द्वारा गौवध की अनुमति तथा प्रशासनिक पदों से सिखों को हटाना
5) मुल्तान में सेना द्वारा दो अंग्रेज अधिकारियों की हत्या
6) लॉर्ड डलहौजी की आक्रामक विस्तारवादी नीतियां

2) युद्ध की घटनाएं

1) 13 जनवरी 1849 को चिलयावाला नामक स्थान पर भयंकर युद्ध हुआ जिसमें सिखों की विजय हुई
2) तोपों का युद्ध (21 फरवरी 1849) :- चेनाब के निकट गुजरात में। सिखों ने अद्भुत पराक्रम का परिचय दिया (पराजय)

3) युद्ध का परिणाम

1) लॉर्ड डलहौजी ने चार्ल्स नेपियर के नेतृत्व में, पंजाब का अंग्रेजी राज्य में विलय
2) पंजाब का प्रशासन 3 सदस्यों की कमेटी को सौंपा, जिसका अध्यक्ष हेनरी लॉरेंस था
3) अल्प वयस्क दिलीप सिंह को ₹50000 की वार्षिक पेंशन लेकर ब्रिटेन भेजा
4) दिलीप सिंह ने कोहिनूर हीरा अंग्रेजों को दिया

8) Second Anglo-Sikh War (1848-49)



1) Reason

1) Treason charge on Rani Jindan, reduction in pension and humiliation
2) Handing over Kashmir to betrayer Gulab Singh
3) Outrageous treaties of Lahore and bhairowal british allowed cow slaughter and removal of Sikhs from administrative posts
4) Two British officers killed by the army in Multan
5) Lord Dalhousie's offencive expansionist policies

2) Coarse of war

1) On January 13, 1849, a fierce battle took place at chilianwala in which the Sikhs were victorious.
2) Cannon War (21 February 1849) :- In Gujarat near Chenab. Sikhs showed amazing valor (Defeated)

3) Result of war

1) Under the leadership of Charles Napier, Lord Dalhousie merged Punjab into british
2) The administration of Punjab was handed over to a committee of 3 members, headed by Henry Lawrence.
3) Minor duleep Singh sent to Britain with an annual pension of ₹ 50000
4) Duleep Singh gave Kohinoor diamond to British

6) अवध || Awadh

सामान्य परिचय

अवध के प्रमुख नवाब

6) अवध || Awadh

General Introduction

Major nawab of Awadh

6.1) सामान्य परिचय

अवध :- पश्चिम में कन्नौज से लेकर पूर्व में कर्मनाशा नदी तक फैला



Bara Imambara

मराठा | अवध | अंग्रेज

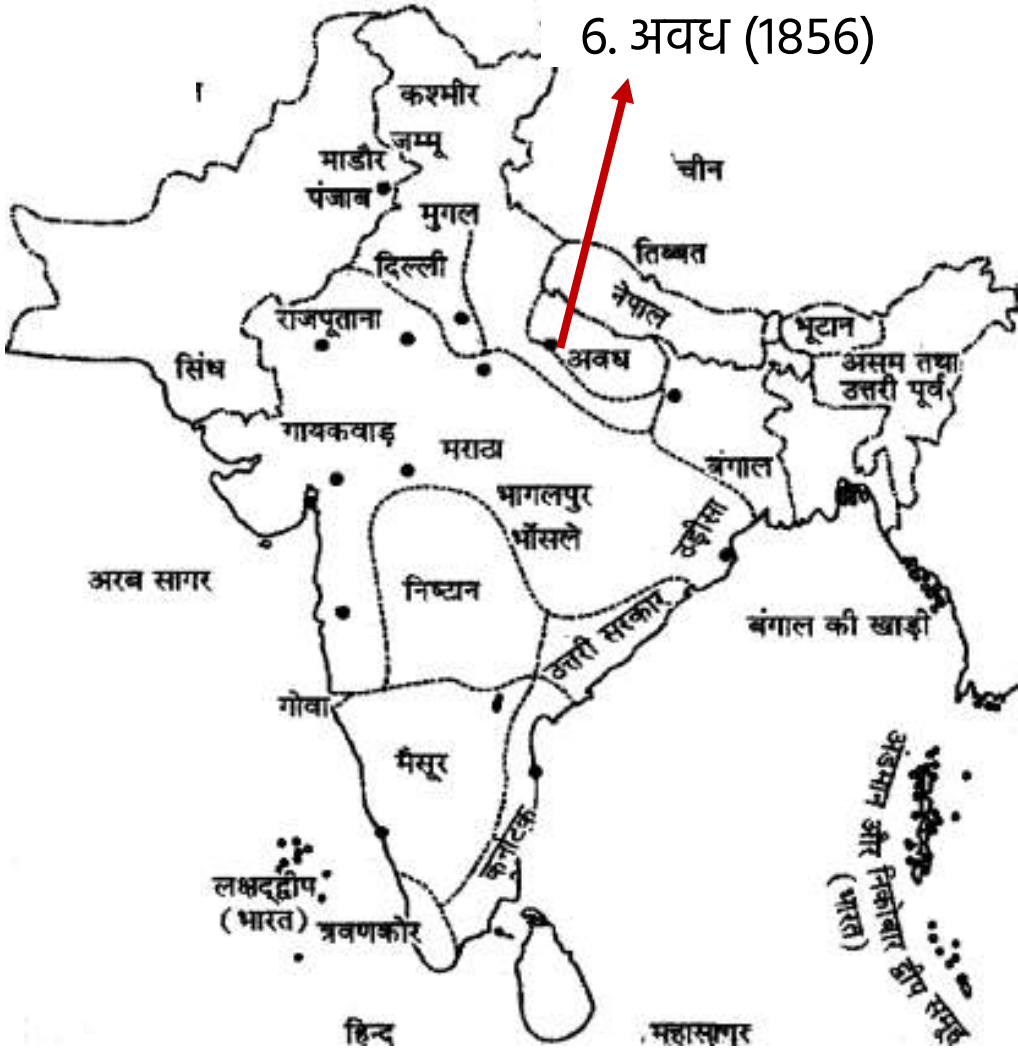
बफर राज्य || Buffer







Lord Dalhousie
(1848-1856)



6.1) General Introduction

Awadh :- Extended from Kannauj in the west to the Karmanasha river in the east



Bara Imambara

Maratha | अवध | British

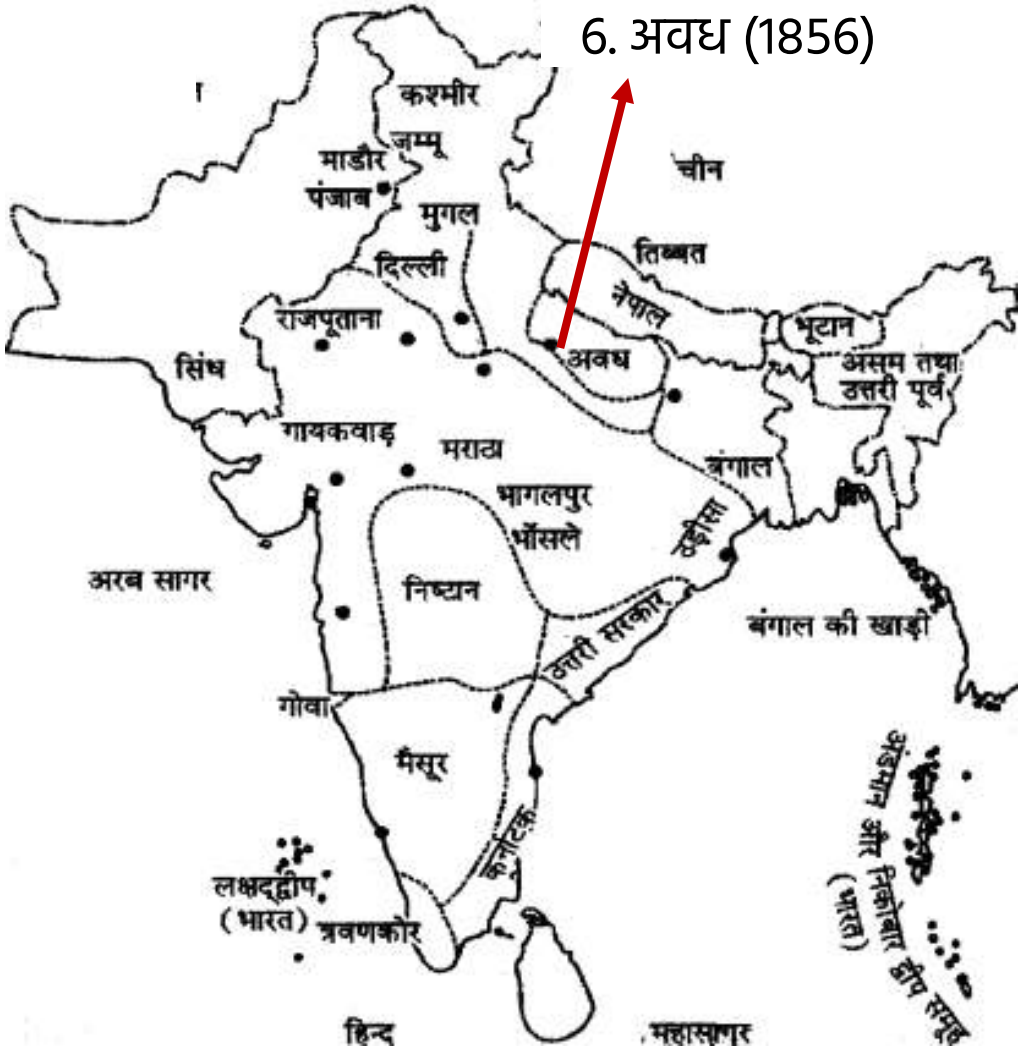
बफर राज्य | Buffer

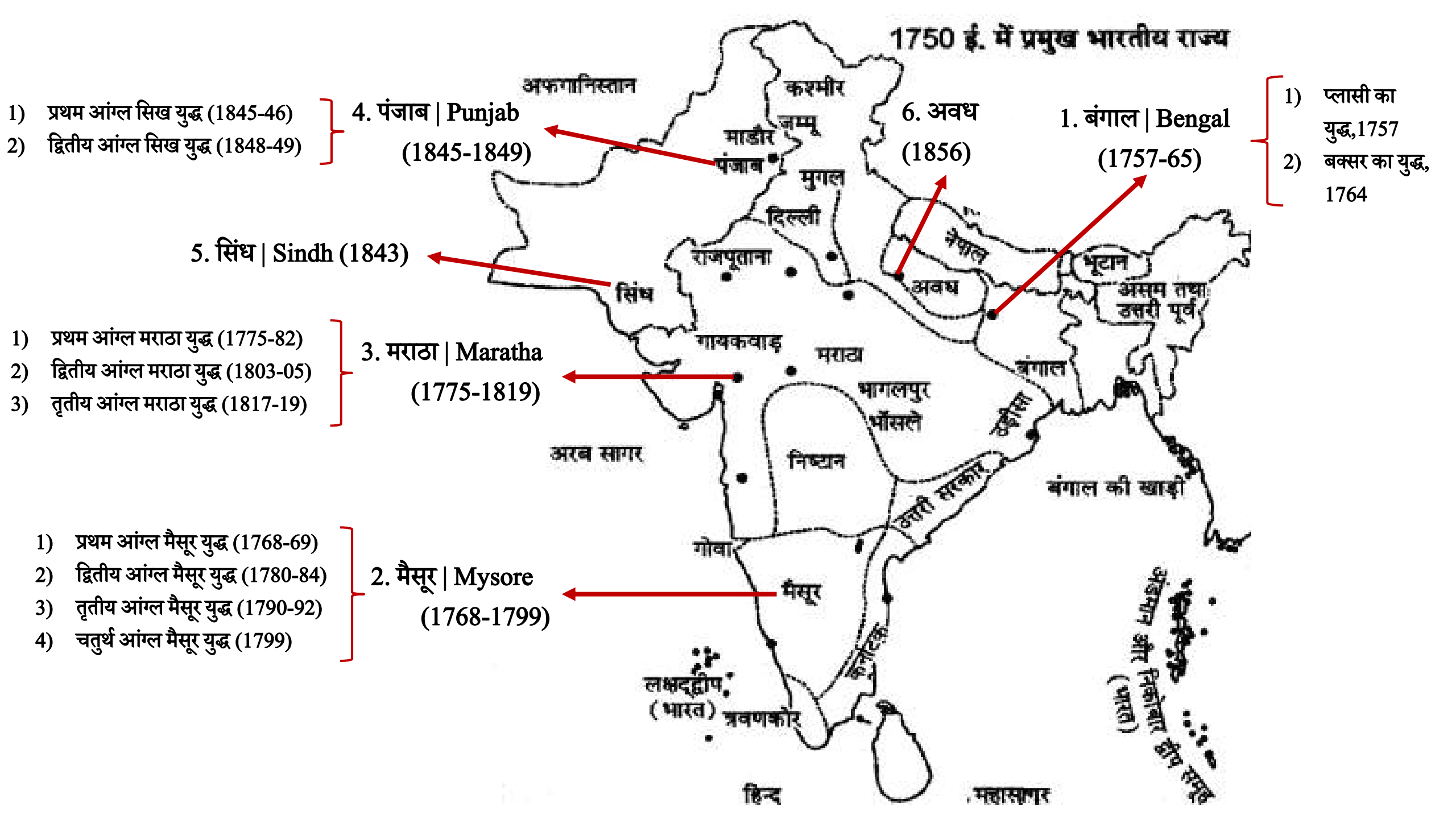






Lord Dalhousie
(1848-1856)




1750 ई. में प्रमुख भारतीय राज्य
1) प्रथम आंग्ल सिख युद्ध (1845-46)
2) द्वितीय आंग्ल सिख युद्ध (1848-49)
4. पंजाब | Punjab (1845-1849)
5. सिंध | Sindh (1843)
1) प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775-82)
2) द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803-05)
3) तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध (1817-19)
3. मराठा | Maratha (1775-1819)
1) प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध (1768-69)
2) द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1780-84)
3) तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1790-92)
4) चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध (1799)
2. मैसूर | Mysore (1768-1799)
6. अवध (1856)
1. बंगाल | Bengal (1757-65)
1) प्लासी का युद्ध,1757
2) बक्सर का युद्ध, 1764
अफगानिस्तान
कश्मीर
जम्मू
माडौर
पंजाब
मुगल
दिल्ली
राजपूताना
सिंध
अवध
नेपाल
भूटान
असम तथा उत्तरी पूर्व
बंगाल
गायकवाड़
मराठा
भागलपुर
भोंसले
अरब सागर
निष्ठान
उत्तरी सरकार
बंगाल की खाड़ी
गोवा
मैसूर
कर्नाटक
लक्षद्वीप (भारत)
त्रवणकोर
हिन्द महासागर
अंडमान और निकोबार द्वीप समूह (भारत)

6.2) प्रमुख नवाब

वाजिद अली शाह (1847-1856)

हैदर अली खान (1814-27)

सआदत अली खान II (1798-1814)



सआदत अली खान प्रथम

सफदरजंग (1739 -54)

शुजाउद्दौला (1754-75)

आसफ-उद्दौला (1775-97)

6.2) Major Nawabs

Wajid Ali Shah(1847-1856)

Hyder Ali Khan(1814-27)

Sahadat Ali Khan II (1798-1814)



Sahadat Ali Khan I

Safdarjung (1739 -54)

Shuja-ud-daula (1754-75)

Asaf-ud-daula (1775-97)

1) सआदत अली खान प्रथम

1) अवध का संस्थापक
2) उपाधि :- बुरहान उल मुल्क
3) राजधानी :- फैजाबाद
4) मुगल बादशाह मोहम्मद शाह रंगीला ने 1720 में बयाना का सूबेदार नियुक्त किया
5) सैयद बंधुओं के विरुद्ध षड्यंत्र में मदद

⇩

- 1722 - अवध का सूबेदार (स्वतंत्र)

6) 1723 :- अवध में नया राजस्व बंदोबस्त लागू किया
7) 1739 :- विष खाकर आत्महत्या



2) सफदरजंग (1739 -54)

1) शहादत खान का भतीजा और दामाद
2) बेहद नैतिक कुशल और सादा जीवन जैसे (मुर्शिद कुली खां अलीवर्दी खां निजाम उल मुल्क)
3) रुहेला और बंगश पठान के विरुद्ध युद्ध

⇩

- पश्चिम-उत्तर सीमा की पर्वत श्रेणियों से आए अफगान

4) लखनवी संस्कृति :-
   - साहित्य, व्यापार
   - 1775 के बाद अवध के नवाबों का निवास



1) Sahadat Ali Khan I

1) Founder of Awadh
2) Title:- Burhan ul Mulk
3) Capital:- Faizabad
4) Mughal emperor Mohammad Shah Rangeela appointed Subedar of Bayana in 1720
5) Help in conspiracy against Syed brothers

⇩

- 1722 - subedar of awadh(Independent)

6) 1723 :- New revenue system in awadh
7) 1739 :- Suicide by consuming poison



2) Safdarjung (1739 -54)

1) Shahadat Khan's nephew and son-in-law
2) Highly moral, efficient and simple living like (Murshid Quli Khan Alivardi Khan Nizam ul Mulk)
3) War against Ruhela and Bangash Pathan

⇩

- Afghans from the mountain ranges of the west-north border
- Lucknowi Culture :-
- Literature, trade
- Residence of the Nawabs of Awadh after 1775



3) शुजाउद्दौला (1754-75)

1) सफदरजंग का पुत्र

2) शुजाउद्दौला :-
- पानीपत III में अहमद शाह अब्दाली का साथ (14 जनवरी 1761)
- बक्सर का युद्ध (22 अक्टूबर 1764)

↓

इलाहाबाद की II संधि

- अंग्रेज और ने इलाहाबाद और कड़ा का क्षेत्र छिना
- चुनार दुर्ग और कर मुक्त व्यापार

3) 1773 :- → बनारस की संधि
- वारेन हेस्टिंग्स
- शुजाउद्दौला

↓

शुजाउद्दौला ने 50 लाख रुपए देकर अंग्रेजों से इलाहाबाद और कड़ा लिया



3) Shuja-ud-Daula (1754-75)

1) Son of Safdarjung

2) Shuja-ud-Daula :-
   - Supported ahmad shah Abdali in 3rd battle of panipat(14 January 1761)
   - Battle of Buxar(22 october 1764)

↓

II Treaty of Allahabad

- British snatched area of Allahabad and Kara
- Chunar fort and tax-free trade

3) 1773 :- → Treaty of Banaras
   - Warren Hastings
   - Shuja ud daula

↓

Shuja-ud-daula took Allahabad and kara from the British by giving 50 lakh rupees



4) आसफ-उद्दौला (1775-97)

1) हेस्टिंग्स के साथ फैजाबाद संधि
   - बनारस पर अंग्रेज अधिकार
   - बेगम के साथ दुर्व्यवहार :- महाभियोग
2) लखनऊ में बिना स्तंभ वाले इमामबाड़े का निर्माण |
3) राजधानी :- फैजाबाद से लखनऊ

5) सआदत अली खान II (1798-1814)

1) शुजाउद्दौला का पुत्र
2) 1801 :- वेलेजली ने सहायक संधि
3) राजा की उपाधि
4) इलाहाबाद अंग्रेजों को

6) गाजी उद्दीन हैदर अली खान (1814-27)

1) सहादत II का पुत्र
2) हेस्टिंग्स ने 1815 में " बादशाह" की उपाधि दी

7) वाजिद अली शाह (1847-1856)

1) अवध का अंजेम्स ऑउट्रम की रिपोर्ट के आधार पर कुशासन का आरोप
2) अंतिम नवाब :-
   ↓
   1856 - अंग्रेजी राज्य में विलय
3) परिणाम :- यह अनैतिक था
   ↓
   सैन्य विद्रोह और प्रथम स्वतंत्रता संग्राम



4) Asaf-ud-Daula (1775-97)

1) Treaty of Faizabad with Hastings
2) British right on Banaras
3) Misbehaviour with begum :- Impeachment
4) Construction of pillarless Imam bara in Lucknow
5) Capital: - Faizabad to Lucknow

5) Saadat Ali Khan II (1798-1814)

1) Shuja-ud-daula's son
2) 1801 :- Wellesley's subsidiary alliance
3) Title of king
4) Allahabad to the British

6) Ghazi Uddin Haider Ali Khan(1814-27)

1) Son of Sahadat II
2) Hastings gave the title of "Badshah" in 1815.

7) Wajid Ali Shah(1847-1856)

1) Awadh's allegation of misgovernance based on James Outrum's report
2) Last Nawab :-

↓

1856 –Merge in English state

3) Result :- it was immoral

↓

Military Mutiny and First War of Independence



NOTE

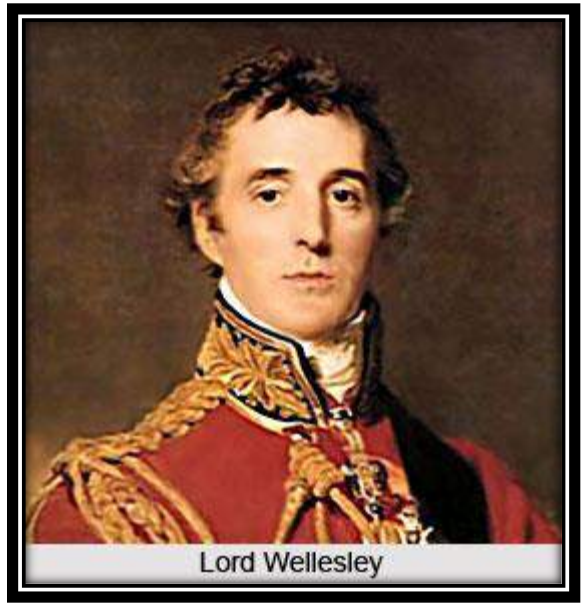
- अवध अंग्रेजों के लिए एक बफर राज्य था
- 1722 :- सआदत अली खान प्रथम ने स्वतंत्र अवध की स्थापना की
- सफदरजंग के समय लखनवी संस्कृति का विकास हुआ
- 22 अक्टूबर 1764 :- शुजाउद्दौला ने मीर कासिम और मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय के साथ बक्सर के युद्ध में भाग लिया
- 16 अगस्त 1765 :- शुजाउद्दौला ने रॉबर्ट क्लाइव के साथ इलाहाबाद की द्वितीय संधि पर हस्ताक्षर किया
- 1773 :- वारेन हेस्टिंग और शुजाउद्दौला के मध्य बनारस की संधि
- आसफ-उद्दौला ने हेस्टिंग के साथ फैजाबाद की संधि की
- 1801 :- सआदत अली खान द्वितीय ने वेलेजली के साथ सहायक संधि पर हस्ताक्षर किया
- 1815 :- गाजी उद्दीन हैदर अली खान को हेस्टिंग्स ने बादशाह की उपाधि दी
- 1856 :- जेम्स ऑउट्रम की रिपोर्ट के आधार पर कुशासन का आरोप लगाकर अवध का विलय अंग्रेजी राज्य में किया

NOTE

- Awadh was a buffer state for the British
- 1722 - Saadat Ali Khan I founded an independent state Awadh.
- Lucknowi culture flourished during Safdarjung
- 22 October 1764 :- Shuja-ud-daula participated in the battle of Buxar with Mir Qasim and Mughal emperor Shah Alam II
- 16 August 1765 - Shuja-ud-Daula signed the Second Treaty of Allahabad with Robert Clive.
- 1773: - Treaty of Benaras between Warren Hasting and Shuja-ud-Daula
- Asaf-ud-daula signed the treaty of Faizabad with Hastings
- 1801 - Saadat Ali Khan II signed a subsidiary alliance with Wellesley
- 1815 - Hastings gave the title of emperor to Ghazi-ud-din Haider Ali Khan.
- 1856: - On the basis report of James Outram, Awadh was merged in British state on basis of misgovernance.

7) ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियां

लॉर्ड वेलेजली की सहायक संधि



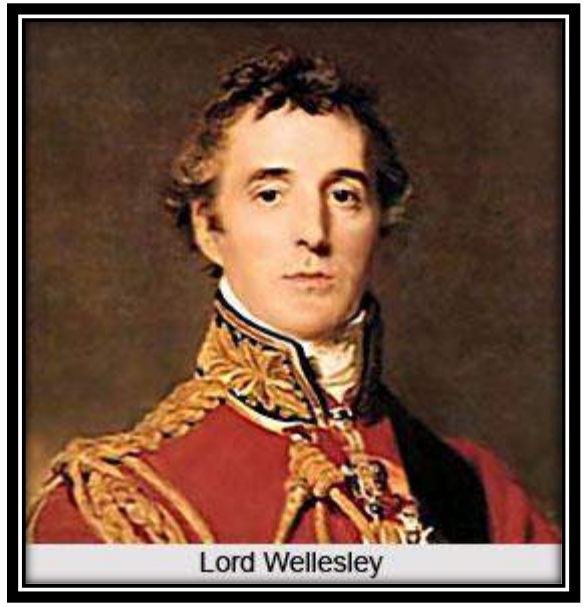
1. घेरे की नीति || Policy of Ring Fence (1765-1813)
2. अधीनस्थ पृथक्करण की नीति || Policy of subordinate isolation (1813-1858)
3. अधीनस्थ संघ की नीति || Policy of subordinate union (1858-1935)
4. समान संघ की नीति || Policy of equal federation (1935-1947)

लॉर्ड डलहौजी का व्यपगत सिद्धांत



7) British Imperialistic Policies

Lord Wellesley's Subsidiary alliance



1. Policy of Ring Fence (1765-1813)
2. Policy of subordinate isolation (1813-1858)
3. Policy of subordinate union (1858-1935)
4. Policy of equal federation (1935-1947)

Doctrine of lapse by lord Dalhousie



1) घेरे की नीति || Policy of Ring Fence (1765-1813)

1) आरम्भकर्ता :- वारेन हेस्टिंग्स
2) कारण :- ब्रिटिश साम्राज्यवाद की आरंभिक व नाजुक अवस्था (मराठा, मैसूर व हैदराबाद से संघर्ष)
3) नीति :-
   - ‡ बफर जोन बनाकर कम्पनी की सीमाओं की रक्षा,
   - ‡ उदाहरण - अवध
   - ‡ सीमित उत्तरदायित्व व राज्यों के प्रति अहस्तक्षेप की नीति
   - ‡ नीति में शामिल राज्यों की सुरक्षा की जिम्मेदारी
   - ‡ सहायक संधि की पूर्ववर्ती

2) अधीनस्थ पृथक्करण की नीति || Policy of subordinate isolation (1813-1858)

1) आरम्भकर्ता :- लॉर्ड हेस्टिंग्स
2) कारण :- कंपनी का भारत में स्थायित्व व साम्राज्यवाद प्रकृति
3) नीति :-
   - ‡ आक्रामक विस्तारवाद
   - ‡ देशी रियासतों पर अप्रत्यक्ष नियंत्रण
   - ‡ राज्यों की बाह संप्रभुता खत्म कर दी गई
   - ‡ रियासतों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप
   - ‡ इस नीति का विकसित स्वरुप व्यपगत का सिद्धांत था
   - ‡ निदेशक मंडल ने 1834 में राज्यों को ब्रिटिश साम्राज्य में जोड़ने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए

1) Policy of Ring Fence (1765-1813)

1) Initiator :- Warren Hastings
2) Reason :- Early and delicate stage of British imperialism (struggle with Maratha, Mysore and Hyderabad)
3) Policy :-
   - ‡ Protecting the company's borders by creating a buffer zone
   - ‡ Example - Awadh
   - ‡ Policy of limited responsibility and non-intervention towards the states
   - ‡ Responsibility for the security of the states involved in the policy
   - ‡ Antecedent of subsidiary alliance

2) Policy of subordinate isolation (1813-1858)

1) Initiator :- Lord Hastings
2) Reason :- Stability and imperialist nature of the company in India
3) Policy :-
   - ‡ Aggressive expansionism
   - ‡ Indirect control over princely states
   - ‡ The sovereignty of the states was abolished
   - ‡ Interference in the internal affairs ofprincely states
   - ‡ The Board of Directors issued guidelines for the annexation of the states to the British Empire in 1834.
   - ‡ Example :- Doctrine of lapse

3) अधीनस्थ संघ की नीति || Policy of subordinate union (1858-1935)

1) 1857 के बाद की ब्रिटिश सरकार की नीति को अधीनस्थ संघ की नीति कहा जाता है।
2) इसमें सरकार ने देशी रियासतों को अलग-अलग करने की बजाय ब्रिटिश शासन के नजदीक लाने की योजना अपनाई।
3) 1858 के बाद भारत का शासन कम्पनी के हाथों से सीधा ब्रिटिश ताज के पास चला गया।
4) अब अंग्रेजी सरकार ने नीति अपनाई कि भारतीय राजाओं के साथ अच्छे संबंध बनाए जाए ताकि वे आवश्यकता होने पर काम आ सके।

4) समान संघ की नीति || Policy of equal federation (1935-1947)

1) इस समय तक भारतीय राष्ट्रवाद परिपक्व हो चुका था तथा राष्ट्रीय भावनाओं को नियंत्रित करने के लिए अस्त्र के रूप में संवैधानिक सुधारों को लक्ष्य बनाया गया।
2) इसी संदर्भ में 1935 ई0 का भारत शासन अधिनियम पारित हुआ। इस अधिनियम में भारतीय राज्यों का एक संघ बनाने की बात की गई, यद्यपि ऐसा नहीं हुआ और संघ अस्तित्व में नहीं आया।
3) क्रिप्स मिशन, वैवेल योजना, कैबिनेट मिशन आदि के माध्यम से संवैधानिक सुधारों की बात की गई। माउंटबेटन योजना में ब्रिटिश सर्वोच्चता के समाप्ति की बात की गई
4) अन्ततः 1947 ई0 में भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम पारित हुआ और भारत से ब्रिटिश सत्ता की समाप्ति हुई।

3) Policy of subordinate Union (1858-1935)

1) The policy of the British government after 1857 is called the policy of subordinate union.
2) In this, instead of separating the princely states, the government adopted a plan to bring them closer to the British rule.
3) After 1858, the governance of India went directly from the hands of the Company to the British Crown.
4) Now the British government adopted the policy that good relations should be maintained with the Indian kings so that they could be useful when needed.

4) Policy of Equal Federation (1935-1947)

1) By this time Indian nationalism had matured and constitutional reforms were targeted as a weapon to control national sentiments.
2) In this context, the Government of India Act of 1935 was passed. This act talked about the formation of a federation of Indian states, although this did not happen, and the union did not come into existence.
3) Constitutional reforms were talked about through Cripps Mission, Wavell Plan, Cabinet Mission etc. Mountbatten plan called for the end of British supremacy
4) Finally, in 1947, the Indian Independence Act was passed, and British power came to an end in India.

1) लॉर्ड वेलेजली की सहायक संधि

1) पृष्ठभूमि व परिचय



2) सहायक संधि की विशेषताएं

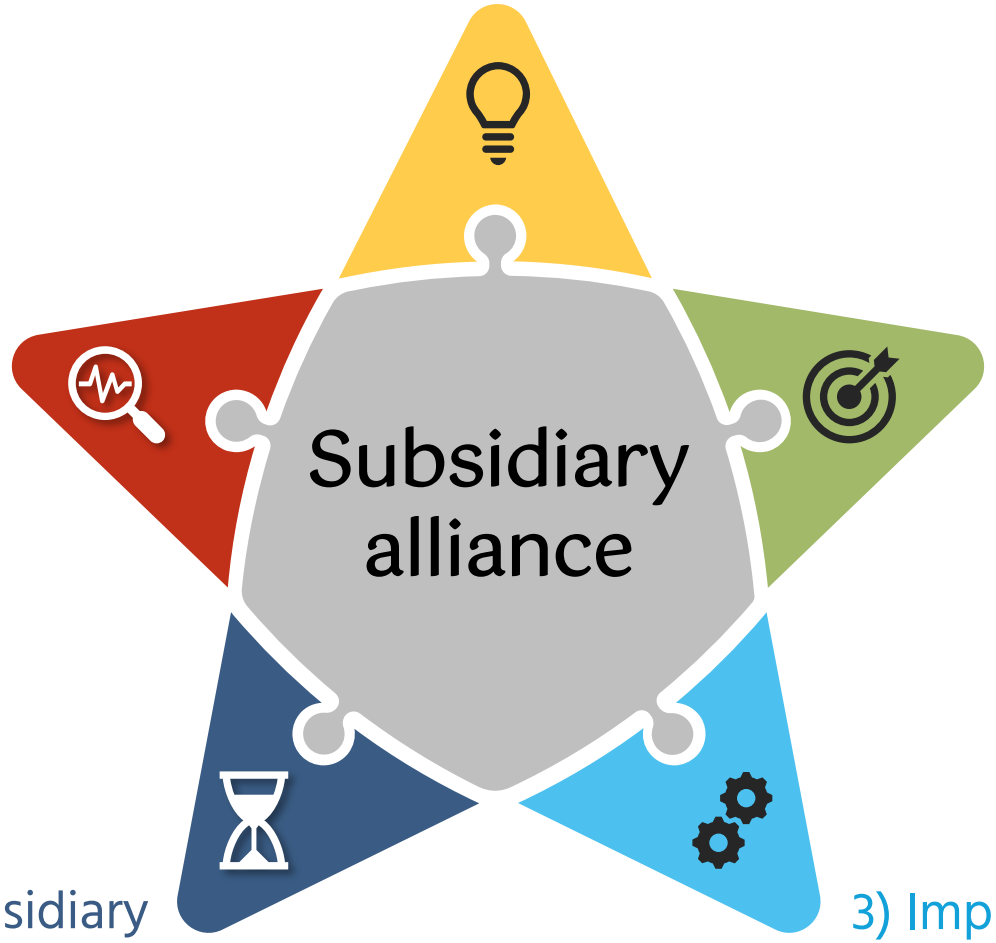
3) सहायक संधि का क्रियान्वयन

4) सहायक संधि का मूल्यांकन

5) वेलेजली द्वारा राज्यों का अपहरण

1) Subsidiary alliance of Lord Wellesley

1) Background and Introduction



2) Features of Subsidiary Alliance

3) Implementation of subsidiary treaty

4) Evaluation of subsidiary alliance

5) Abduction of the states by Wellesley

1) पृष्ठभूमि व परिचय

1) सहायक संधि प्रणाली का सर्वप्रथम प्रयोग फ्रांसीसी गवर्नर डुप्ले ने किया था, उसने सैनिक सहायता देने के बदले भारतीय नरेशों से धन लेने की प्रथा शुरू की।
2) इस अवधारणा को रॉबर्ट क्लाइव ने अवध के संदर्भ में लागू किया
3) सहायक संधि को व्यवहारिक व सैद्धांतिक रूप 1798 में बंगाल का गवर्नर जनरल बनकर आए अंग्रेजी साम्राज्यवादी गवर्नर लॉर्ड वेलेजली (1798-1805) ने दिया।
4) लॉर्ड वेलेजली का उद्देश्य कंपनी को **भारत की सर्वोच्च शक्ति** के रूप में प्रतिष्ठित करना था

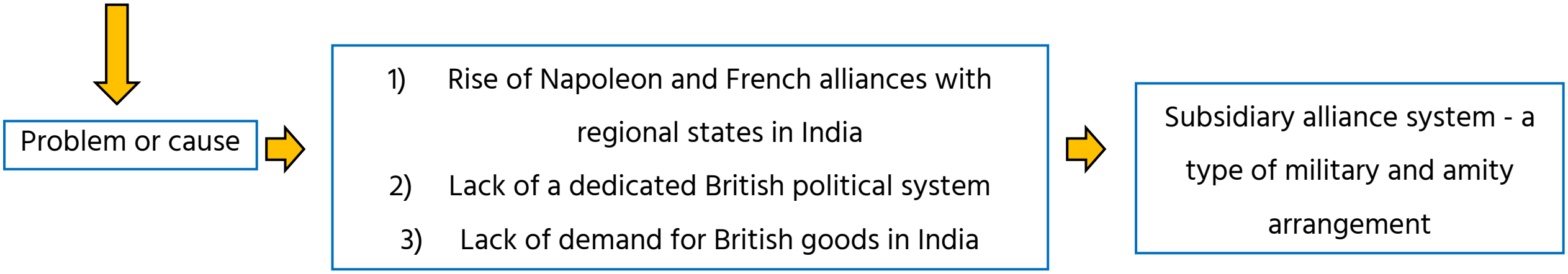
समस्या या कारण

1) नेपोलियन का उदय और भारत में क्षेत्रीय राज्यों के साथ फ्रांसीसी गठजोड़
2) अंग्रेज समर्पित राजनीतिक प्रणाली का अभाव
3) भारत में ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं की मांग का अभाव

सहायक संधि व्यवस्था - एक प्रकार की सैन्य व मैत्री व्यवस्था

1) Background and Introduction

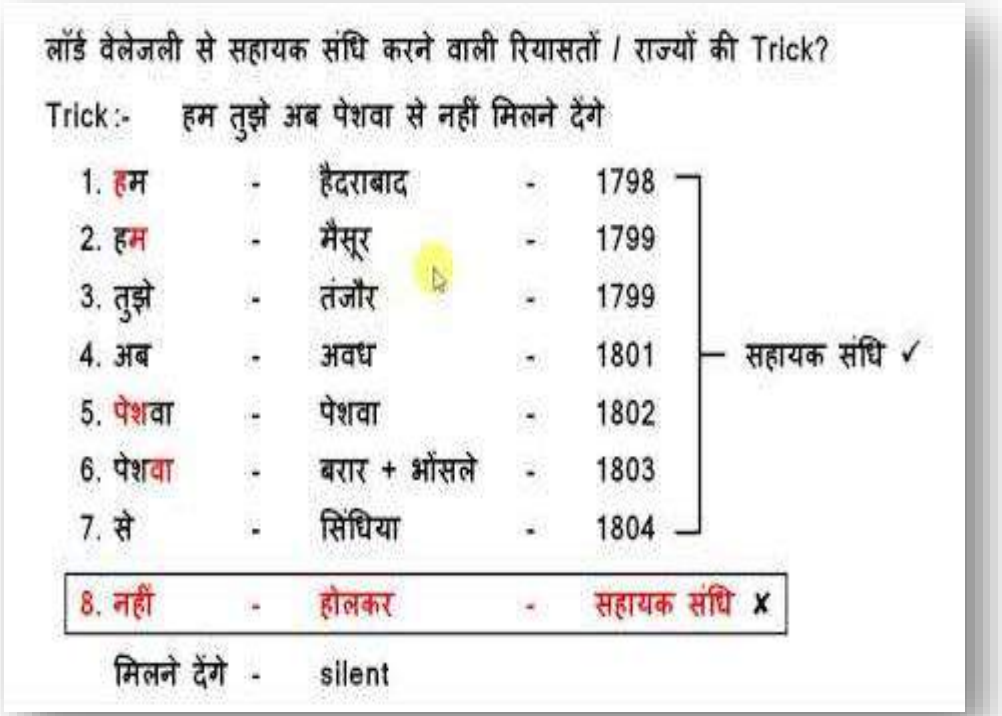
1) The Subsidiary Alliance system was first used by the French Governor Dupleix, who started the practice of taking money from Indian kings in return for military aid.
2) This concept was applied by Robert Clive in the context of Awadh.
3) The Subsidiary Treaty was given practical and theoretical form by British Imperial Governor Lord Wellesley (1798–1805), who became the Governor General of Bengal in 1798.
4) Lord Wellesley's objective was to establish the Company as the supreme power of India.



2) सहायक संधि की विशेषताएं

1) देशी रियासतें एक ब्रिटिश रेजिडेंट रखेंगी जो शासन-प्रबंधन में परामर्श देगा ।
2) भारतीय रियासतों के आंतरिक शासन में कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा।
3) वह देशी रियासत, जो संधि स्वीकार करेगी; कंपनी की स्वीकृति के बिना अपने राज्य में शत्रु राज्य या अन्य यूरोपीय शक्ति के लोगों को शरण, व्यापार या नौकरी नहीं देगी ।
4) देशी रियासतों की रक्षा के लिये कंपनी वहाँ अंग्रेजी सेना रखेगी, जिसका खर्च उस रियासत को ही उठाना होगा सेना के खर्च के लिये नकद धनराशि या राज्य का कुछ इलाका कंपनी को सौंपना होगा।
5) देशी रियासत कंपनी की अनुमति के बिना किसी अन्य राज्य से युद्ध, संधि या मैत्री नहीं कर सकेगी अर्थात् वह अपनी विदेश नीति कंपनी के सुपुर्द कर देगी ।

- किसी अन्य यूरोपीय शक्ति को सेवा में न रखना
- राज्य की विदेश नीति कम्पनी के अधीन
- राज्य में ब्रिटिश सेना की नियुक्ति
- रियासत में ब्रिटिश रेजिडेंट की नियुक्ति
- आंतरिक एवं बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा
- रियासत के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं



2) Features of Subsidiary Alliance

1) The princely states would have a British Resident who would advise in the administration.
2) No interference in internal governance of Indian princely states.
3) Princely state that will accept the treaty; shall not give refuge, trade or employment to persons belonging to an enemy state or other European power in its territory without the approval of the Company.
4) For the protection of the princely states, the company will keep the British army there,whose cost is to be paid by that princely state, for the expenditure of army, cash money or some area of the state would have to be handed over to the company.
5) The princely state would not be able to make war, treaty or friendship with other state without the company's permission, that is, it would surrender its foreign policy to the company.

- Not to employ any other European power
- State's foreign policy under the company
- Placement of British Army in the State
- Appointment of British Resident in princely state
- Protection from internal and external attacks
- No interference in the internal affairs of the princely state



3) सहायक संधि का क्रियान्वयन

1) ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विस्तार के लिए अपनाई गई सहायक संधि को कुछ देशी राज्यों ने स्वतः स्वीकार कर लिया तो कुछ राज्यों ने युद्ध में पराजित होकर इस प्रणाली को स्वीकार किया ।

2) इसके अलावा कुशासन के आरोप लगाकर भी वेलेजली ने कर्नाटक , तंजौर और सुरत को भी ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया ।

3) बेलेजली द्वारा की गई कुछ प्रमख सहायक संधिया :-

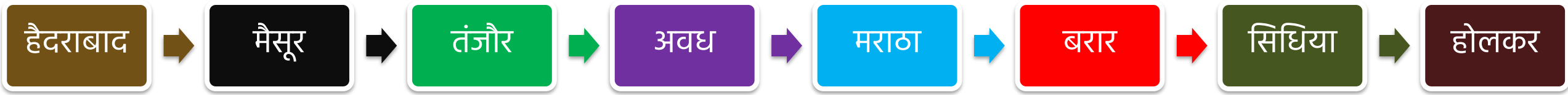
क्र	संधिया द्वारा ली गई रियासतें	संधि वर्ष
1.	हैदराबाद (निजाम - II)	1798
2.	मैसूर (वाडयार वंश)	1799
3.	तंजौर	1799
4.	अवध (सआदत अली खान II)	1801
5.	मराठा (पेशवा बाजीराव द्वितीय)	1802
6.	बरार (भोसलें)	1803
7.	सिधिया	1804
8.	होलकर (मल्हार राव होलकर II)	1818

हैदराबाद → मैसूर → तंजौर → अवध → मराठा → बरार → सिधिया → होलकर

3) Implementation of Subsidiary Alliance

1) Some native states automatically accepted the subsidiary alliances adopted , while some states were defeated in the war and accepted this system.
2) Apart from this, Wellesley also annexed Karnataka, Tanjore and Surat to the British Empire on basis of misgovernance.
3) Some of the major subsidiary treaties made by wellesley :-

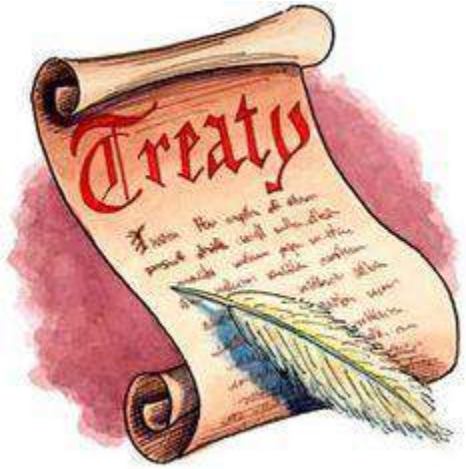
क्र	Princely states taken by treaties	Treaty year
1.	Hyderabad (Nizam - II)	1798
2.	Mysore (Wodeyar dynasty)	1799
3.	Tanjore	1799
4.	Awadh (Saadat Ali Khan II)	1801
5.	मराठा (पेशवा बाजीराव द्वितीय)	1802
6.	बरार (भोसलें)	1803
7.	सिधिया	1804
8.	होलकर (मल्हार राव होलकर II)	1818



4) सहायक संधि का मूल्यांकन

-: लाभ :-

- आंतरिक विद्रोह तथा बाह्य आक्रमण से सुरक्षा
- देशी राज्यों के बीच युद्ध की समाप्ति
- आर्थिक उन्नति
- कम्पनी को लाभ
- कंपनी की सैनिक सीमाओं में वृद्धि
- फ्रांसीसियों के भय से मुक्ति



-: हानियाँ :-

- संरक्षित राज्यों की आर्थिक व्यवस्था को आघात
- संरक्षित राज्यों में प्रशासन के मामलों में उदासीनता
- देशी राज्यों में भ्रष्टाचार तथा विलासिता को बढ़ावा
- देशी राज्यों में सैनिक तथा कूटनीतिक प्रतिभा की कमी

5) वेलेजली द्वारा राज्यों का अपहरण

1) कर्नाटक नवाब हुसैन अली के मृत पिता व दादा पर देशद्रोह का आरोप लगाकर विलय
2) अक्टूबर 1799 में तंजौर पर कुशासन का आरोप लगाकर विलय
3) आर्थिक कुप्रशासन का आरोप लगाकर मार्च 1800 में सूरत का विलय

4) Evaluation of Subsidiary Alliance

-: **Advantages** :-

- Protection from internal rebellion and external aggression
- End of war between native states
- economic progress
- profit to the company
- Increase in company's military limits
- Relief from the fear of the french



-: **Disadvantages** :-

- Shock to the economic system of protected states
- Indifference in matters of administration in protected states
- Promotion of corruption and luxury in the native states
- Lack of military and diplomatic talent in native states

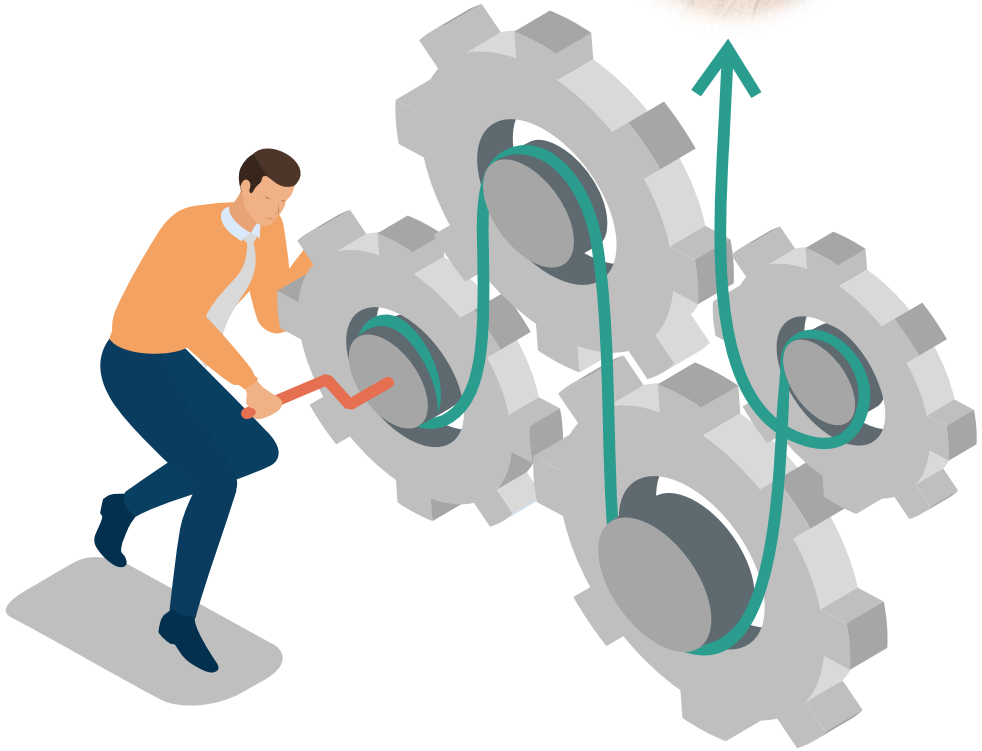
5) Abduction of the states by Wellesley

1) Merged Karnataka by accusing Nawab Hussain Ali's dead father and grandfather of treason
2) Tanjore merged in October 1799 on basis of misgovernance
3) Merger of Surat in March 1800 on basis of of economic maladministration

2) लॉर्ड डलहौजी का व्यपगत का सिद्धांत / गोद निषेध नीति / हड़प नीति



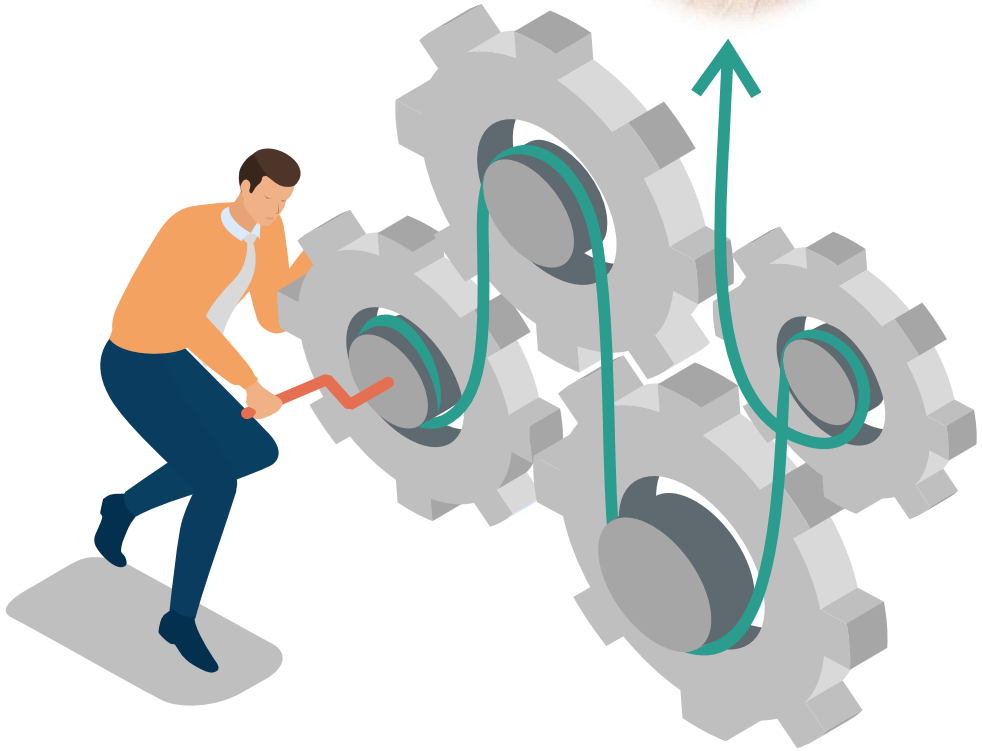
- परिचय
- व्यपगत का सिद्धांत
- व्यपगत के सिद्धान्त का क्रियान्वयन
- व्यपगत के सिद्धांत का मूल्यांकन



2) Lord Dalhousie's Doctrine of Lapse / Adoption Policy

- Introduction
- Doctrine of lapse
- Implementation of the Doctrine of Lapse
- Evaluation of the principle of lapse





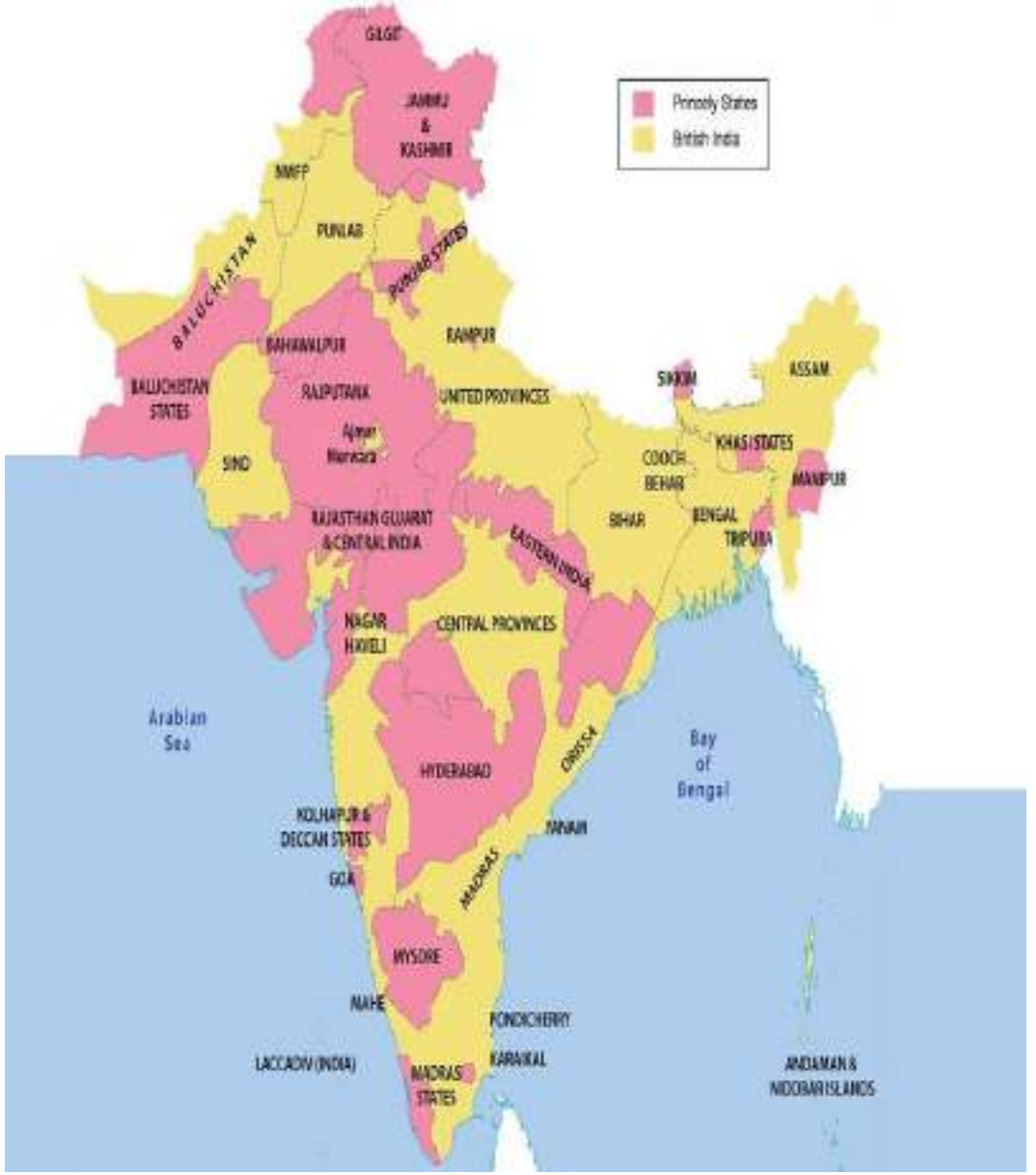
1) परिचय

1) लॉर्ड हार्डिंग के स्थान पर 1848 में 36 वर्ष की आयु में डलहौजी भारत का गवर्नर बना। वह अत्यंत प्रतिभाशाली तथा सम्राज्यवादी प्रकृति का था । जिसने भारत में ब्रिटिश विस्तार हेतु निम्न नीतियां अपनाई :-

- युद्ध द्वारा विलय - पंजाब (1849), वर्मा (1852), सिक्किम-दार्जिलिंग (1850)
- व्यपगत का सिद्धांत - सतारा, सम्भलपुर, नागपुर, जैतपुर
- कुशासन का आरोप

2) लॉर्ड डलहौजी अपने प्रशासनिक व परिवहन नीति हेतु भी जाना जाता है। डलहौजी की नीतियों के निम्नलिखित कारण थे :-

- ब्रिटेन में औधोगिक क्रांति की आवश्यकताओं की पूर्ति
- भारत में ब्रिटिश राज्य की सुरक्षा, सुद्रढ़ता व स्थायित्व
- कम्पनी का अधिकतम आर्थिक लाभ



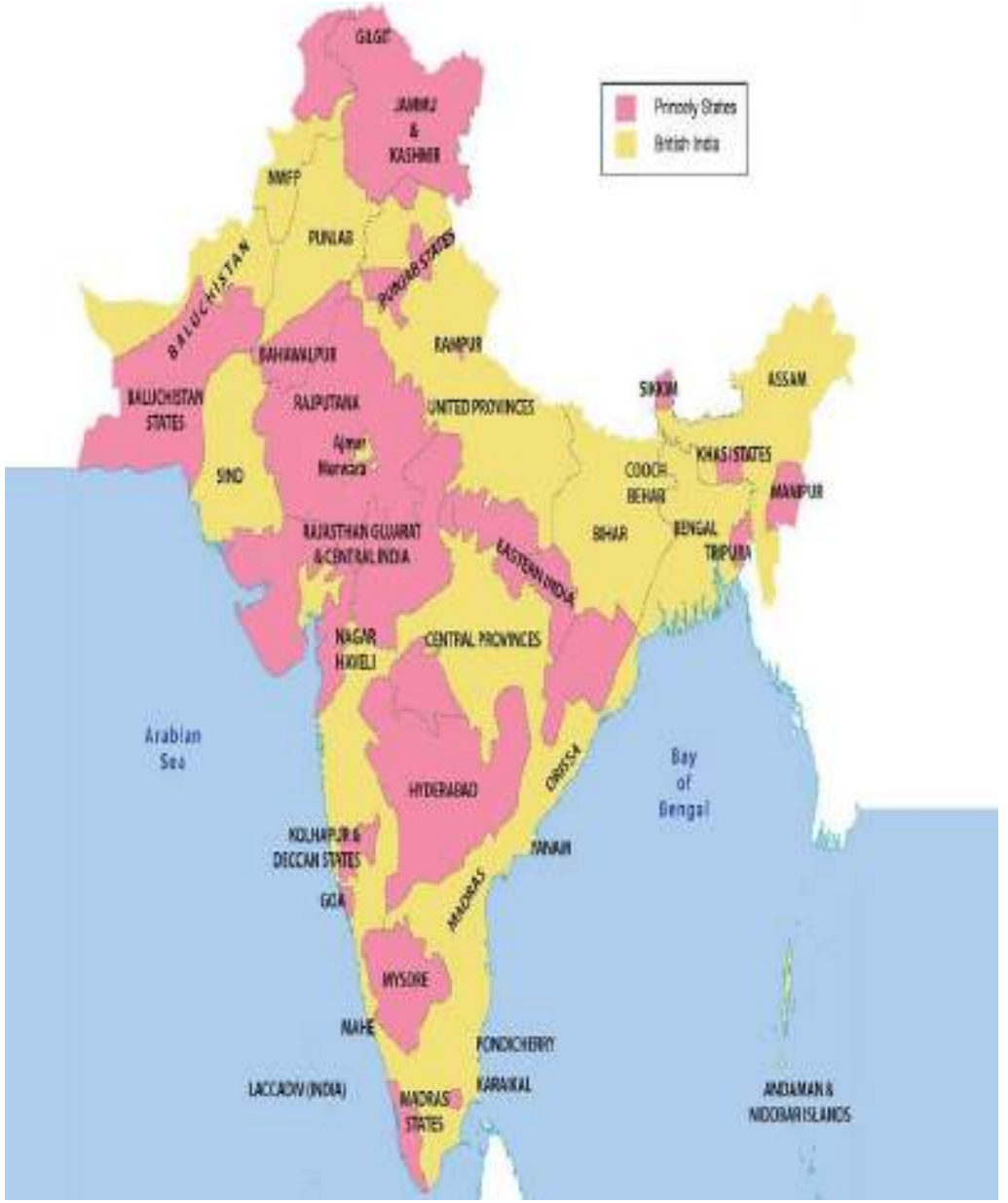
1) Introduction

1) Dalhousie became the Governor of India in 1848 at the age of 36 in place of Lord Hardinge. He was very talented and of imperialistic nature. Who adopted the following policies for British expansion in India :-

- Merger by war - Punjab (1849), Verma (1852), Sikkim-Darjeeling (1850)
- Principle of lapse - Satara, Sambhalpur, Nagpur, Jaitpur
- Allegation of misadministration

2) Lord Dalhousie is also known for his administrative and transport policy. Following were the reasons for Dalhousie's policies:-

1) Meeting the needs of the Industrial Revolution in Britain
2) Security, Strength and Stability of the British State in India
3) maximum profit of the company



2) व्यपगत का सिद्धांत

1) लॉर्ड डलहौजी द्वारा ब्रिटिश अधीनस्थ भारतीय राज्यों के विलय की नीति
2) सिद्धांत :- पैतृक वारिस न होने की स्थिति में कंपनी ब्रिटिश अधीनस्थ रियासतों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाएगी हालांकि दत्तक पुत्र को सम्पत्ति का अधिकार मिलेगा
3) डलहौजी का तर्क :- जो शक्ति अधिकार देती है, वह ले भी शक्ति है
4) नीति के क्रियान्वयन हेतु रियासतों को निम्न तीन श्रेणियों में बांटा :-

श्रेणी	परिभाषा	गोद लेने का अधिकार
प्रथम श्रेणी	वे राज्य जिनके निर्माण में ब्रिटिश सरकार का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष योगदान था	गोद लेने पर पूर्णत: पाबंदी
द्वितीय श्रेणी	वे राज्य जो अंग्रेजी सरकार के अधीनस्थ थे	गोद लेने से पहले अंग्रेजी सरकार की सहमति
तृतीय श्रेणी	रियासत जो कभी ब्रिटिश शासन के अधीन नहीं रही	गोद लेने की प्रथा में कोई हस्तक्षेप नहीं

2) Doctrine of Lapse

1) Policy of merger of British subordinate Indian states by Lord Dalhousie
2) Principle :- In the absence of paternal heirs, the company will merge the British subordinate princely states into the British Empire, although the adopted son will get the right of property.
3) Dalhousie's argument :- The power that gives authority is also the power to take.
4) For the implementation of the policy, the princely states are divided into the following three categories: :-

Grade	Defination	ight of adoption
First grade	Those states in which the British government contributed directly or indirectly in formation	complete ban on adoption
Second grade	The states which were subordinate to the British government	British government consent before adoption
Third grade	Princely states who were never subodinates to british	no interference in adoption

3) व्यपगत के सिद्धान्त का क्रियान्वयन

डलहौजी ने व्यपगत सिद्धांत का क्रियान्वयन करते हुए निम्नलिखित देशी को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया

देशी रियासतें	विलय का वर्ष	देशी रियासतें	विलय का वर्ष
1. सतारा	1848	5. उदयपुर	1852
2. जैतपुर	1849	6. झाँस	1852
3. संभलपुर	1849	7. नागपुर	1854
4. बघाट	1850		



3) Implementation of the principle of lapse

Dalhousie, implementing the lapsed principle, merged the following countries into the British Empire:-

Princely States	Year Of Merger	Princely States	Year Of Merger
1. Satara	1848	5. Udaipur	1852
2. Jaitpur	1849	6. Jhansi	1852
3. Sambhalpur	1849	7. Nagpur	1854
4. Bghat	1850		



4) व्यपगत के सिद्धांत का मूल्यांकन

1) धार्मिक व सामाजिक रूप से स्वीकृत प्राचीन भारतीय परम्पराओं में अंग्रेज़ों का हस्तक्षेप
2) देशी रियासतों का अतार्किक व काल्पनिक विभाजन
3) देशी रियासतों में असंतोष की भावना
4) 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम
5) डलहौजी ने कुशासन का आरोप लगाकर बरार तथा अवध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया जो अनैतिक था

जॉन शेपर्ड - यह विलय भारतीयों की स्वतंत्रता को बढ़ावा देने में उतना ही सफल होगा जितना उनके अधिकारों और हितों की रक्षा करने में है

- लॉर्ड डलहौजी के व्यपगत सिद्धांत की समीक्षा करते हुए यह कहा जा सकता है कि इसका प्रयोग मुख्य रूप से साम्राज्य विस्तार के लिए किया गया.
- पुत्र गोद लेने की प्रथा हिन्दुओं में बहुत प्राचीन थी.
- वे इसे बड़ी धूमधाम से और धार्मिक कर्मकाण्डों के अनुसार मानते थे.
- मुगलों और पेशवाओं के अधीन इस कार्य के लिए सम्राट को केवल नज़राना ही देना होता था किन्तु डलहौजी ने इस प्रथा की आड़ में पूरी रियासत को ही हड़पना शुरू कर दिया.
- इसके अलावा **आश्रित रियासतों (Dependent States)** और **संरक्षित मित्र (Protected Allies)** रियासतों का भेद एक कल्पना मात्र था.
- इस संबंध में विवादित मामलों पर अंतिम निर्णय कम्पनी या **कोर्ट ऑफ डाइरेक्टर्ज** का होता था.
- इस संबंध में निष्पक्ष निर्णय देने के लिए किसी उच्चतम न्यायालय की कोई व्यवस्था न थी.

4) Evaluation of doctrine of lapse

1) British interference in religiously and socially accepted ancient Indian traditions
2) Irrational and imaginary division of princely states
3) Feeling of discontent in the princely states
4) First War of Independence of 1857
5) Dalhousie annexed Berar and Awadh in the British Empire by accusing it of misgovernance which was immoral

John Shepard - This merger will be as successful in promoting the freedom of Indians as it is in protecting their rights and interests.

- Reviewing Lord Dalhousie's lapsed theory, it can be said that it was mainly used for empire expansion.
- The practice of adopting a son was very ancient among the Hindus.
- They celebrated it with great fanfare and according to religious rituals.
- Under the Mughals and Peshwas, the emperor had to pay only tribute for this work, but Dalhousie started usurping the entire princely state under the guise of this practice.
- Apart from this, the distinction of Dependent States and **Protected Allies** was just a fantasy.
- In this regard, the final decision on disputed matters was made by the Company or the **Court of Directors**.
- There was no system of any Supreme Court to give an impartial decision in this regard.

5) लॉर्ड डलहौजी के प्रमुख सुधार

लॉर्ड डलहौजी द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किए गए प्रमुख सुधार निम्नलिखित हैं :–



5) Major Reforms of Lord Dalhousie

Following are the major reforms made by Lord Dalhousie in various fields :-



1) प्रशासनिक सुधार	o गवर्नर जनरल के कार्यभार को कम करने के लिए बंगाल में लेफ्टिनेंट गवर्नर नियुक्ति o "नॉन रेग्यूलेशन पद्धति" (Non-Regulation System) को लागू किया = प्रत्येक नए प्रदेश में एक कमिश्नर नियुक्त किया गया. = कमिश्नर सीधे गवर्नर जनरल के प्रति उत्तरदायी होता था.
2) सैनिक सुधार	o बंगाल तोपखाने का कार्यालय कलकत्ता से मेरठ में स्थानांतरित o 1865 में शिमला में एक सैन्य मुख्यालय स्थापित किया गया. o सेना में तीन और रेजिमेंटें बनाई गई. o पंजाब में एक नई अनियमित सेना का गठन किया गया.
3) शैक्षणिक सुधार	o 1853 में भारतीय भाषाओं में शिक्षा का प्रस्ताव स्वीकार किया गया. o जुलाई, 1854 में सर चार्ल्स वुड ने भारत सरकार को शिक्षा की एक नई योजना भेजी. o जिलों में एंग्लो-वर्नेक्यूलर स्कूलों, प्रमुख नगरों में सरकारी कॉलेजों तथा तीनों प्रेजिडेन्सी नगरों में एक-एक विश्वविद्यालय की स्थापना

4) रेलवे	o 1853 में प्रथम रेलवे लाइन बम्बई से थाना तक o भारत में रेलवे लाइन बिछाने के काम में सरकार का नहीं वरन्, ब्रिटिश पूंजीपतियों का पैसा लगा हुआ था.
5) टेलीग्राफ	o भारत में विद्युत तार का प्रारंभ o ओ. औंघनैसी (O'Shanghnessy) के अथक प्रयासों से लगभग 4000 मील लम्बी तार लाइन बिछा दी गई.
6) डाक	o आधुनिक डाक व्यवस्था का आधार o 1854 में डाकघर अधिनियम o सारे देश में कहीं भी 2 पैसे की दर पर पत्र भेजा जा सकता था. o देश में पहली बार डाक टिकटों का प्रचलन आरंभ हुआ.

1) Administrative Reforms	o Appointment of Lieutenant Governor in Bengal to reduce the workload of Governor General o Implemented “Non-Regulation System” = A commissioner was appointed in each new state. = The commissioner was directly responsible to governor
2) Military Reforms	o Bengal Artillery office shifted from Calcutta to Meerut o A military headquarters was established at Shimla in 1865. o Three more regiments were formed in the army. o A new irregular army was formed in Punjab.
3) Educational Reforms	o In 1853, the proposal for education in Indian languages was accepted. o In July 1854, Sir Charles Wood sent a new scheme of education to the Government of India. o Establishment of Anglo-vernacular schools in the districts, government colleges in major cities and one university each in the three Presidency towns.

4) Railway	o First railway line from Bombay to Thana in 1853 o It was not the government's money, but the British capitalists' money,
5) Telegraph	o Introduction of Electricity Wire in India o Efforts of O'Shanghnessy - 4000 miles long wire line was laid.
6) Post	o Basis of the modern postal system o Post Office Act of 1854 o Letters could be sent anywhere in the country at the rate of 2 paise. o The circulation of postage stamps started.

7) वाणिज्य-सुधार	o डलहौजी ने भारत के बन्दरगाहों को अन्तरराष्ट्रीय वाणिज्य के लिए खोल दिया. o कराची, बम्बई और कलकत्ता के बन्दरगाहों का भी विकास किया गया.
8) सार्वजनिक निर्माण विभाग	o डलहौजी ने एक अलग सार्वजनिक निर्माण विभाग का गठन किया. o 8 अप्रैल, 1854 को सिंचाई हेतु गंगा नहर खोल दी गई. o ग्राण्ड ट्रंक रोड़ का निर्माण कार्य भी प्रारंभ हुआ.

6) लॉर्ड डलहौजी ने अपनी सृजनात्मकता के बल पर आधुनिक भारत की नींव रखी। चर्चा कीजिये।

डलहौजी ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार का कोई अवसर नहीं खोया। साथ ही अपनी सृजनात्मक क्षमता के बल पर आधुनिक भारत की नींव रखी।

1) 1853 में प्रथम रेलवे लाइन बिछाई गई तथा शीघ्र ही समस्त भारत को रेलवे लाइनों द्वारा जोड़ा गया। इससे भौगोलिक एकता की स्थापना हुई।
2) शिक्षा सुधार के लिये चार्ल्स वुड की अध्यक्षता में प्राएक व्यापक योजना बनाई। जिसमें ज़िलों में एंग्लो-वर्नाकुलर स्कूल तथा 3 प्रेसिडेंसी नगरों में लंदन विश्वविद्यालय के आदर्श पर एक-एक विश्वविद्यालय की स्थापना की गई।
3) पहली बार सार्वजनिक निर्माण विभाग की स्थापना की
4) कराची, बंबई और कलकत्ता के बंदरगाहों का विकास तथा प्रकाश स्तंभों का निर्माण
5) टेलीग्राफ का प्रारंभकर्ता - कलकत्ता से लेकर पेशावर, बंबई तथा मद्रास तक देश के भिन्न-भिन्न भागों को टेलीग्राफ व्यवस्था से जोड़ दिया।
6) आधुनिक डाक व्यवस्था की आधाराशिला भी डलहौजी के समय ही रखी गई।

इस प्रकार डलहौजी के आधुनिकीकरण के प्रयास औपनिवेशिक हितों से प्रेरित थे, लेकिन उसके प्रयासों ने नए भारत के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

7) Commercial reform	o Dalhousie opened the ports of India to international commerce. o The ports of Karachi, Bombay and Calcutta were also developed.
8) Public works department	o Dalhousie set up a separate Public Works Department. o On April 8, 1854, the Ganga Canal was opened for irrigation. o The construction work of Grand Trunk Road also started.

6) Lord Dalhousie laid the foundation of modern India on the strength of his creativity.

Dalhousie did not lose any opportunity to expand British Empire in India. Along with this, he laid the foundation of modern India.

1) First railway line was laid in 1853, and soon the whole of India was connected by railway lines - establishment of geographical unity.
2) Under the chairmanship of Charles Wood, a comprehensive plan was prepared for education reform. In which the Anglo-Vernacular School in the districts and university in the 3 Presidency towns.
3) Establishment of Public Works Department
4) Development of ports of Karachi, Bombay and Calcutta and construction of lighthouses
5) The originator of telegraph and foundation stone of modern postal system

Thus, Dalhousie's efforts to modernize were inspired by colonial interests, but his efforts contributed significantly to the creation of a new India.

Previous Year Question

2014	**VS**	1) प्लासी का युद्ध || The battle of Plassey
2014	**VS**	2) हड़प का सिद्धांत || Doctrine of lapse
2015	**Short**	3) कर्नाटक युद्ध किनके बीच हुए ? इनका क्या परिणाम हुआ ? || Between whom did Karnataka wars take place ? What was their result?
2017	**VS**	4) पेशवा बाजीराव प्रथम || Peshwa Bajirao -I

10) संभावित प्रश्न || Possible Questions

अति लघु उत्तरीय प्रश्न :-

1. द्वैध शासन प्रणाली
2. प्रथम आंग्ल सिक्ख युद्ध
3. मुर्शीद कुली खाँ
4. सिराजुद्दौला
5. दस्तक
6. मीर जाफर
7. काल कोठरी की घटना
8. सिराजुद्दौला के विरुद्ध षड्यन्त्र में शामिल लोग
9. प्लासी का युद्ध
10. हैदर अली
11. टीपू सुल्तान

Previous Year Question

2014	VS	1) प्लासी का युद्ध || The battle of Plassey
2014	VS	2) हड़प का सिद्धांत || Doctrine of lapse
2015	Short	3) कर्नाटक युद्ध किनके बीच हुए ? इनका क्या परिणाम हुआ ? || Between whom did Karnataka wars take place ? What was their result?
2017	VS	4) पेशवा बाजीराव प्रथम || Peshwa Bajirao -I

10) संभावित प्रश्न || Possible Questions

Very short answer questions :-

1. Diarchy system
2. First Anglo-Sikh War
3. Murshid Quli Khan
4. Siraj-ud-Daulah
5. Dastak (Royal decree)
6. Mir Jafar
7. The Black hole Incident
8. Those involved in the conspiracy against Siraj-ud-Daulah
9. Battle of Plassey
10. Hyder Ali
11. Tipu Sultan

12. रणजीत सिंह
13. अमृतसर की संधि
14. इलाहाबाद की संधि
15. सालबाई की संधि
16. सुर्जी अर्जुन गांव की संधि
17. पानीपत का तृतीय युद्ध
18. माधव राव प्रथम
19. बक्सर का युद्ध
20. आंग्ल-मैसूर युद्ध के परिणाम
21. श्रीरंगपट्टम की संधि
22. बालाजी विश्वनाथ
23. संगोला की संधि

लघु उत्तरीय प्रश्न :-

1) व्यपगत सिद्धांत
2) लार्ड डलहौजी ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य को पूर्णता प्रदान की, स्पष्ट कीजिए।
3) सहायक संधि प्रणाली से कंपनी को क्या लाभ हुए?
4) सहायक संधि प्रणाली से देशी राज्यों पर क्या प्रभाव पड़ा?
5) इलाहाबाद की संधि ने कंपनी की शासन व्यवस्था को बदल दिया, स्पष्ट कीजिए।
6) इलाहाबाद की संधि से कंपनी भारत में राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित हुई, व्याख्या कीजिए।
7) प्लासी का युद्ध भारत के निर्णायक युद्धों में से एक था, समीक्षा कीजिए।
8) रणजीत सिंह और उनके कार्यों का वर्णन कीजिए।
9) बक्सर के युद्ध के प्रभावों की विवेचना कीजिए।
10) पानीपत के तृतीय युद्ध पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।
11) सहायक संधि प्रणाली की विशेषताएँ बताइए।
12) द्वैध शासन के प्रभाव लिखिए।
13) आंग्ल-मराठा युद्ध के कारणों पर प्रकाश डालिए।

12. Ranjit Singh
13. Treaty of Amritsar
14. Treaty of Allahabad
15. Treaty of Salbai
16. Treaty of Surji Arjun village
17. Third battle of Panipat
18. Madhav Rao I
19. Battle of Buxar
20. Results of the Anglo-Mysore War
21. Treaty of Seringapatam
22. Balaji Vishwanath
23. treaty of Sangola

Short Answer :-

1) Doctrine of lapse
2) Explain that Lord Dalhousie completed the British Empire in India.
3) What benefits did the company get from the subsidiary alliance?
4) What was the impact of the subsidiary alliance system on the native states?
5) The Treaty of Allahabad changed the Company's governance system, explain.
6) Explain that the Company was established as a political power in India by the Treaty of Allahabad.
7) The Battle of Plassey was one of the decisive battles of India, review.
8) Describe Ranjit Singh and his works.
9) Discuss the effects of the Battle of Buxar.
10) Comment briefly on the third battle of Panipat.
11) State the features of subsidiary junction system.
12) Write the effects of dual rule.
13) Throw light on the causes of Anglo-Maratha war.